मंत्र·तंत्र·यंत्र

विज्ञान



– विषय सूची –

निर
को स्व

वर्ष : २

अंक : ९-१०

सितम्बर, अक्टूबर : ८२

※

सम्पादक

कैलाशचन्द्र

स० सम्पादक

हेमन्त कुमार

※

मुखपृष्ठ

महालक्ष्मी

कार्यालय पता —

"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान"

डा० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, ऊर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

या देवी सर्व भूतेषु
लक्ष्मी रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ।।

शक्ति स्वरूपा मां ! सभी प्राणियों में आप लक्ष्मी रूप बनकर स्थापित हों, आपको नमस्कार है, नमस्कार है, श्रद्धा से हमारा नमस्कार स्वीकार करें ।

—मार्कण्डेय पुराणः

मुक : व्य. प्रेस, होईकोर्ट कोलोनी जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

घायल शेर पर पांव रख कर हर

पत्रिका परिवार को यह गौरव प्राप्त हैं कि दो महीने बाद वह दो वर्ष पूरे करने जा रही हैं, इस छोटी सी अवधि में पत्रिका को जितनी अधिक कठिनाइयां, परेशानियां और घात-प्रतिघात झेलने पड़े, वह पत्रिका ही जानती है, परन्तु इन सब संघर्षों के बीच भी वह अपने लक्ष्य की ओर सतत, चेष्टारत और अडिग रही है, आंधी और तूफान भी न तो इसको विचलित कर सके हैं, और न इसको बुझा सके हैं।

जब इस पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया था, तब इन सब संघर्षों और घात-प्रतिघातों की आशंका हमारे मन में थी, क्योंकि यह एक ऐसा कार्य था, जो कि सर्वथा हटकर और एक नवीन दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने वाला था,यह एक ऐसा कार्य था, जिससे पण्डित वर्ग में खलबली मचनी स्वाभाविक थी,उनके अहं को, उनके कार्य और उनके अज्ञान पर चोट पड़ रही थी, और वे इन चोटों से तिलमिला रहे थे, वे यह अनुभव कर रहे थे, कि यह पत्रिका धीरे-धीरे हमारी कमजोरियों को सामान्य पाठक वर्ग के सामने खोल देगी, इससे हमारी दुकानदारी समाप्त हो जायेगी, और हमारे अन्दर का जो झूठा पाण्डित्य-दम्भ है, छिन्न भिन्न हो जायगा।

और इसके लिए प्रारम्भ से ही इस पत्रिका पर हमले होते रहे, शुरू में इसके रजिस्ट्रेशन में दिक्कतें पैदा की गई, जब इसका सर्कुलर बढ़ा तो झूठे पत्र, शिकायतें और आलोचनाएं प्रारम्भ कर दी। उनका एकमात्र उद्देश्य किसी भी प्रकार से इस पत्रिका के प्रकाशन को बन्द करना था, जिससे कि यह पनप नहीं सके, बढ़ नहीं सके, भारत की प्राचीन विद्या को सही तरीके से सबके सामने स्पष्ट नहीं कर सके, जिससे कि तथाकथित पण्डितों की दाल रोटी मजे में चलती रहे।

पाठकों का असीम स्नेह

पर हमारे लिए अत्यन्त प्रसन्नता और उमंग यह थी कि पूरे भारतवर्ष के पाठकों ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है, यह पत्रिका अपने आप में बेजोड़ है, इसमें जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है, वह सर्वथा मौलिक, नूतन तथा सबको समझ में आने वाला है, इसके माध्यम से हम इस समस्या ग्रस्त समाज में अपनी राह ढूंढ़ सकते हैं, बिना किसी का सहारा लिए अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, और अपने जीवन की परिवार और समाज की, गुत्थियों को सुलझा सकते हैं।

इसके लिए पाठकों ने असीम स्नेह दिया है, वे स्वयं तो पत्रिका के सदस्य बने ही, अपने मित्रों और स्वजनों को भी प्रेरित किया, जिससे इस पत्रिका को स्थायित्व प्राप्त हो सका, पत्रिका की सुदृढ़ता और निरन्तरता के लिए आजीवन सदस्य योजना प्रारम्भ की तो सभी पाठकों ने उत्साह और लगन पूर्वक इस योजना को स्वीकार किया, बहुत ही कम समय में इतने आजीवन सदस्य बन जाना ही इस बात का परिचायक है कि

एक फोटो खिंचवाना चाहता है ।

आप सब पाठकों के मन में इस पत्रिका के प्रति कितना अधिक स्नेह और अपनत्व है ।

पर, इतने घात-प्रतिघातों के बाद भी मैं आप सब पाठकों को विश्वास दिलाता हूं कि यह पत्रिका निरन्तर प्रकाशित होती रहेगी, इससे भी ज्यादा इसके पृष्ठ बढ़ेंगे और इसको स्थायित्व दिया जायगा, किसी भी प्रकार से, किसी भी हालत में आपके विश्वास को ठेस नहीं लगेगी, जब आप जैसे स्नेही और शुभ चिन्तक बन्धुओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त है तो फिर हमें किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत ही क्या है ?

नया प्रतिरोध

और इसी संघर्षों की कड़ी में पिछले दिनों पत्रिका पर एक और जबरदस्त आघात हुआ, आयकर अधिकारियों ने जांच की, कि पत्रिका के खाते में इतने कम समय में इतनी अधिक धनराशि कैसे जमा हुई ?

यह पत्रिका के पीछे होने वाले आघातों की ही एक कड़ी थी, और हो सकता है कि उन्होंने इसको समाप्त करने के षड्यन्त्र के दरम्यान इस प्रकार की जांच करवाई हो, परन्तु हिसाब तो कांच की तरह स्पष्ट था, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्राप्त धनराशि खातों में जमा थी ।

बात इतनी सी ही थी, परन्तु कुछ लोगों ने इस छोटी सी बात को तूल देना प्रारम्भ किया, और इस आयकर अधिकारियों की जांच को पूज्य श्रीमाली जी से सम्बन्धित कर लिया ।

और पाठकों ने देखा होगा कि किस प्रकार से पूरे भारतवर्ष के पत्र इस मामले में एक दूसरे से होड़ ले रहे थे, कि इस घटना को तूल दिया जाय, अपने मन की भड़ास निकाली जाय, और टेबल पर बैठे-बैठे ही इससे संबंधित नई से नई कहानियां बनाई जाय, और प्रकाशित की जाय ।

कानपुर या इन्दौर में बैठा हुआ कोई पत्रकार जब यह लिखता है कि श्रीमाली जी के घर में इस प्रकार से घटना हो रही है, तो आश्चर्य होता है कि अपनी टेबल पर बैठे-बैठे किस प्रकार से कहानियां घड़ी जा सकती हैं ?

जितना और जो कुछ अखबारों में तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है, उसका सौं वां हिस्सा भी वास्तव में नहीं था, हम स्वयं जब इन अखबारों को पढ़ते थे, तो आश्चर्य भी होता था, और हंसी भी आती थी, कि व्यक्ति आजकल कितना अधिक स्वार्थी और छलमय हो गया है, जो इस प्रकार की झूठी कहानियां अपने पत्र में छापता हैं, जिससे कि उसके पत्र की बिक्री बढ़ सके और अपनी टेबल पर बैठे-बैठे पत्रकार इसलिये कहानियां घड़ लेते हैं, जिससे कि उन्हें छापने की संतुष्टि मिल सके और पारिश्रमिक स्वरूप कुछ लाभ हो सके ।

ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई आकाश टूट कर नीचे गिर गया हो, इस अवधि में जो व्यक्ति और पत्रिका के पाठक जोधपुर आये हैं, उन्होंने अपनी आंखों से देखा हैं, और अनुभव किया है, कि वास्तव में जितना और जो कुछ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ हैं, वह जरूरत से ज्यादा बढ़ चढ़ कर है, वास्तविकता से कोसों दूर हैं, हकीकत से परे हैं ।

प्रबुद्ध पाठक

पर आज का पाठक समझदार है, वह सब कुछ पढ़ता है परन्तु पढ़ने के बाद उस पर विश्वास नहीं कर लेता, अपितु अपने मन में विचारता है और उसके बाद ही निर्णय लेता है, हमने इस अवधि में यह अनुभव किया है कि पूरे भारतवर्ष से, दूर दूर से पाठकों के निरन्तर पत्र हमें प्राप्त होते रहे हैं, सही देखा जाय तो पहले सामान्य दिनों में पत्रिका-कार्यालय में जितनी डाक आती थी उससे दुगुनी या तिगुनी डाक आनें लग गई है और प्रत्येक पत्र में यही आभास है कि हम समझ रहे हैं कि यह पत्रिका के दीपक को बुझाने का षडयन्त्र है, पूज्य गुरुदेव की छवि को धूमिल करने का प्रयास है परन्तु ऐसा न तो हो सका है, न हो सकेगा । यही नहीं, अपितु सभी पाठकों ने एक स्वर से प्रत्येक दृष्टि से सहयोग देने का आश्वासन दिया है, इन संघर्ष के दिनों में पहले की अपेक्षा ज्यादा पत्रिका के सदस्य और आजीवन सदस्य बने हैं। गुजरात और उत्तर प्रदेश की कुछ संस्थाओं के आधिकारिक व्यक्तियों ने आकर प्रार्थना की है, कि आप निश्चिन्त रहें, यदि आयकर अधिकारी ले भी जाते हैं तो आप किसी प्रकार से विचार न करें, हम संगठित रूप से प्रयास करके कुछ ही दिनों में इस घाटे की पूर्ति कर देंगे । यह उनका सौजन्य है, स्नेह है,ममत्व और अपनत्व है । जिसके पास इस प्रकार के प्रबुद्ध पाठकों का खजाना हो, उसको चिन्ता करने की जरूरत ही क्या है, हमारे मना करते करते यह पढ़कर सुनकर अनेक पाठकों ने श्रद्धायुक्त भेंट स्वरूप धनराशि भेजनी प्रारम्भ कर दी है, और यह सब कुछ हमारे लिए आश्चर्ययुक्त है, अप्रतिम है ।

घिनौना षडयन्त्र

और इससे भी बढ़कर कुछ ज्योतिषियों ने इसकी आड़ में पूज्य गुरुदेव पर भी छींटे उछाले हैं, अस्सी ग्रन्थों के रचयिता के बारे में कहा गया है कि उन्हें ज्योतिष का ज्ञान ही नहीं है । विश्व ज्योतिष सम्मेलन की अध्यक्षता करने वाले के प्रति लिख दिया गया है कि उन्हें कुछ भी नहीं आता, यह सब उनकी हीन मनोवृत्ति की ही परिचायक है, पर चांद की तरफ थूकने से चांद का कुछ भी अहित नहीं होता, वह थूक तो स्वयं उसके मुंह पर ही गिरता है ।

कुछ ज्योतिषियों ने भी अपने स्थानीय प्रभाव को काम में लेकर इस प्रकार की बातों को तूल देने का प्रयास किया, घायल शेर पर पांव रखकर हर एक फोटो खिचवाने में गौरव समझता है जिन्दे और स्वस्थ शेर के सामने जाने की उनकी हिम्मत नहीं होती, परन्तु अपनी कायरता को छिपाने के लिए, जब शेर घायल होता है तो उस पर पांव रखकर अपना फोटो खिचवाकर ड्राइंग रूम में लटकाने को हीं सब कुछ गौरव समझ लेते हैं ।

निश्चिन्त निर्भीक

इस संघर्ष, कशमकश और तूफान के क्षणों में भी पूज्य गुरुदेव निश्चिन्त और निर्भीक बने रहे हैं ।

उन्होंने न तो किसी प्रकार की उत्तेजना प्रदर्शित की, और न किसी प्रकार की चिन्ता ही। घर परिवार और बाहर से आने वाले शिष्य आदि सभी परेशान थे, उनके चेहरे पर चिन्ताएं थी, वे मन में दुख अनुभव कर रहे थे सब कुछ विपरीत सा महसूस कर रहे थे, परन्तु किसी की भी हिम्मत नहीं थी कि उनके सामने अपनी बात कहे. इस कठिन क्षणों में भी उनका कार्यक्रम उसी प्रकार से नियमित बना रहा. उनके चेहरे पर न तो विषाद के चिन्ह थे, और न मन में किसी प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व ही।

एक दिन जब हमने उनके सामने इस तनाव ग्रस्त वातावरण की बात कही, तो उन्होंने यही कहा कि इस सारे मसले को लेकर किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, सरकारी आदमी अपना कार्य कर रहे हैं, और मैं अपने कार्य में लगा हुआ हूं, जहां तक मेरे परिवार का प्रश्न है, वे प्रेस या अन्य व्यापार कर रहे हैं तो वे पिछले कई वर्षों से आयकर देते आ रहे हैं, हिसाब किताब करने पर अपने आप स्पष्ट हो जायगा। बात तो इतनी सी ही है कि अधिकारी कह रहे हैं कि आयकर कुछ और देना बाकी है और परिवार के सदस्य कह रहे हैं कि आयकर पूरा दिया हुआ है। यह तो हिसाब किताब की बात है, यदि कम दिया हुआ है, तो बाकी बचा हुआ वे अवश्य दे देंगे, और यदि बराबर दिया हुआ है तो जांच करके अपने आप संतुष्ट हो जायेंगे, इतनी छोटी सी बात को तूल देकर मन में चिन्ता करने की क्या जरूरत है ?

रही बात मेरे जीवन के संघर्षों की, तो मैं पैदा ही संघर्षों में हुआ हूं, जीवन के प्रारम्भिक काल से लगा कर आज तक मेरे जीवन में संघर्षों की कमी नहीं रही है, जीवन में कोई भी व्यक्ति यदि कुछ नया करने के लिए सन्नद्ध होता है, तो उसे इस प्रकार के संघर्षों का सामना करना ही पड़ता है।

मेरे जीवन में इतने अधिक उतार-चढ़ाव, संघर्ष, बाधाएं और परेशानियां आई हैं, कि अब इनसे किसी प्रकार का कोई विचार ही नहीं होता, यह परेशानी या कष्ट पहली बार नहीं आया है, अपितु जीवन में जब से अपने पांवों पर खड़ा हुआ हूं, तब से बराबर इन संघर्षों का सामना किया है, चुनौती के साथ इनका डटकर मुकाबला किया है, यह संकट भी एक चुनौती की तरह ही है, और इसका भी हमें डटकर सामना करना है, इसलिए अब मेरे जीवन में किसी कठिनाई के आने पर न तो चिन्ता व्याप्त होती है, और न किसी के आलोचना करने पर परेशानी पैदा होती है, सांप का काम डसना है, और यदि उसे दूध भी पिलाया जायगा तो भी वह डसेगा ही। जिनकी प्रवृत्ति आलोचना करने की ही है, जो परनिन्दा में ही आनन्द अनुभव करते हैं, उनके लिए कुछ भी कहना व्यर्थ है, उन्हें अपना काम करने दें, मैं अपना काम कर रहा हूं, मेरे शिष्य और पाठक इतने कमजोर और अस्थिर बुद्धि वाले नहीं हैं, जो छोटी-छोटी बातों से विचलित हो जाय, और यदि अस्थिर मति वाले हैं, तो यह अच्छा है कि वे अभी से अलग हो जाय, ऐसे शिष्य आगे चलकर भी क्या कर सकेंगे ?

परन्तु मुझे अपने शिष्यों पर गर्व है, और मैं स्पष्टता के साथ यह कहने को तैयार हूं कि वे किसी भी हालत में विचलित होने वाले नहीं है, इस प्रकार के षडयन्त्रों के खिलाफ वे कमर कस कर खड़े होने में ही गौरव समझते हैं, हर प्रकार की चुनौती का सामना करने की सामर्थ्य उनमें हैं, और मुझे विश्वास है कि इस चुनौती में भी वे पहले की अपेक्षा मेरे ज्यादा सम्पर्क में आयेंगे, मुझसे ज्यादा मधुर और गहरा सम्बन्ध स्थापित करेंगे।

सन्यास

और मैं तो कई वर्षों पूर्व स्पष्ट रूप से घोषणा कर चुका हूं कि कुछ ही वर्षों बाद मैं सन्यास ले लेना

चाहता हूँ। न तो मुझे इस समाज का मोह है, और न परिवार का। न मुझे धन की लालसा है और न वैभव विलास की। अपने जीवन में मैं बहुत कुछ देख चुका हूँ भोग चुका हूँ इस गृहस्थ में रहते हुए भी मैं निष्प्रह था, इस सांसारिक वैभव में होते हुए भी मैं वीतराग था और आज भी मैं उसी भावना के अनुरूप हूं, इसीलिये इन घात-प्रतिघातों का मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं है।

मेरा धन तो मेरे शिष्य हैं और इस पत्रिका के प्रबुद्ध विचारशील पाठक हैं, जिनका अत्यधिक स्नेह हमारे पास है, इस कठिनाई की घड़ियों में भी उन्होंनें जिस तत्परता के साथ सहयोग दिया है, आगे बढ़कर कार्य किया हैं और निन्दा करने वालों को जिस प्रकार से मुंहतोड़ जवाब दिया है, वह वास्तव में ही मेरे लिए आनन्ददायक है।

तटस्थ भाव

मैं तो पहले ही बता चुका हूं, कि जब तक मैं गृहस्थ में हूँ और समाज में हूँ, तब तक मैं समाज की इकाई बन कर ही रहना चाहता हूँ, समाज में व्याप्त सुख-दुख को उसी प्रकार से भोगना चाहता हूं, जिस प्रकार से एक सामान्य मानव भोगता है, अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए न तो अध्यात्म का सहारा लेने की जरूरत है और न तन्त्र-मन्त्र का। मैं कायर नहीं हूँ कि अपने या अपने परिवार की सुरक्षा अथवा स्वार्थ पूर्ति के लिए किसी प्रकार की साधना का उपयोग करूं।

साधना अपने आप में अलग चीज हैं, समाज के घात-प्रतिघात अपने आप में अलग है, इन दोनों का परस्पर संबन्ध करने की क्या जरूरत है ? आज तक का इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन्होंनें कभी भी अपने व्यक्तिगत जीवन के घात-प्रतिघातों के निराकरण के लिए साधना, तपस्या या अध्यात्म का सहारा नहीं लिया, अपितु सामान्य मानव की तरह ही उन चुनौतियों का सामना किया है और उन पर विजय प्राप्त की है।

वशिष्ठ तो त्रिकालदर्शी और ज्ञानी थे, वे भगवान श्री राम को राजसी वस्त्र पहना कर आभूषण आदि से अलंकृत कर राजतिलक के लिए मंच पर भेजने की तैयारी कर रहे हैं, राम चलते भी हैं, और मार्ग में ही उन्हें चौदह वर्ष का वनवास भोगने की आज्ञा प्राप्त हो जाती है, क्या वशिष्ठ को इस बात का ज्ञान नहीं था, कि मैं क्या करने जा रहा हूं और क्या होने वाला है ?

भगवान राम तो साक्षात् पर ब्रह्म ईश्वर थे, वनवास के क्षणों में स्वयं की पत्नी का अपहरण हो जाता हैं, और वे जंगल- जंगल सीता की खोज में भटकते फिरते हैं, क्या उन्हें ज्ञात नहीं था कि सीता लंका की अशोक वाटिका में बैठी है ? वे हनुमान को भेजकर दूसरे ही पल उसे मंगा सकते थे, परन्तु नहीं, उस समय भगवान श्री राम के शब्द आज भी शाश्वत है, उन्होंने कहा कि जब तक मैं इस जीवन के भोग नहीं भोग लूंगा, तब तक मेरा मोक्ष नहीं हो सकता, और मुझे इन भोगों को, इन कठिनाइयों और दुखों को भोगना ही है, वे तो स्वयं ईश्वर थे, कुछ भी चमत्कार कर सकते थे।

भगवान श्री कृष्ण सोलह कला विधान साक्षात् ईश्वर थे, परन्तु उन्हें भी समय आने पर मथुरा का राज्य छोड़कर बहुत दूर द्वारिका में जाकर अपना नया राज्य बसाना पड़ा, और जीवन भर के लिए "रणछोड़"

अर्थात् युद्ध से भागने वाले की संज्ञा प्राप्त करनी पड़ी। क्या उनमें क्षमता नहीं थी ? वे अपनी सिद्धियों के माध्यम से ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते थे ? पर उन्होंने समाज की तरह ही जीवन के घात-प्रतिघातों को झेलना अपना कर्त्तव्य समझा, और सामान्य मानव की तरह ही जीवन यापन किया।

राजा हरिश्चन्द्र को अपनी पत्नी के साथ डोम के हाथों बिकना पड़ा, त्रिकालदर्शी विश्वामित्र को जीवन रक्षा के लिए श्वान का मांस खाना पड़ा, महर्षि अत्री को जीवन के अन्तिम क्षणों में रोगों से जूझना पड़ा। भगवान बुद्ध को घर बार छोड़कर जंगल में आश्रय लेना पड़ा। महावीर स्वामी को जंगल में अपने कानों में कीलें ठुकवाकर दारुण कष्ट भोगना पड़ा, परमहंस रामकृष्ण को लकवे जैसे रोग से पीड़ित होना पड़ा, लाखों लोगों के रोगों को अपने ऊपर लेने वाले और उनके दुखों को दूर करने वाले स्वामी ज्ञानदेव को कैंसर से जूझना पड़ा, सन्त हरिदास को लोगों की गालियां और पत्थर खाने पड़े, ईसामसीह को शूली पर चढ़ना पड़ा, सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा, और जीवन भर सत्य पथ पर चलने वाले महात्मा गांधी को गोली खाकर प्राण त्याग करने पड़े।

भगवान राम और कृष्ण से लगाकर ये सभी महापुरुष योगी और साधु जीवन के उच्च क्षेत्र पर स्थापित थे, अपने जीवन में इन लोगों ने हजारों लोगों का हित किया होगा, करोड़ों लोगों के कष्टों को अपने ऊपर लिया होगा, सैकड़ों मरते हुए व्यक्तियों को जीवन दान दिया होगा, परन्तु इस जीवन में उन्होंने घोर कष्ट, अभाव, दैन्य और परेशानियां उठाईं, क्या ये समर्थ नहीं थे ? निश्चित रूप से पूरा संसार स्वीकार करता है, कि वे सभी अपने आप में समर्थ और उच्च थे, परतु किसी भी हालत में चमत्कार प्रदर्शन को उन्होंने पसन्द नहीं किया, अपने स्वार्थ के लिए तन्त्र या मन्त्र का सहारा नहीं लिया, वे सामान्य मानव बने रहे और उसी प्रकार से दुखों को भी सहन किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध योगी तांत्रिक मन्त्र द्रष्टा और संन्यासी स्वामी ज्ञानानन्द एक समर्थ और उच्च कोटि के व्यक्तित्व थे, जिनके पास दस हजार शिष्य हर समय रहते थे, परन्तु समय के चक्र के अनुसार समाज ने उन पर चरित्र हीनता का आरोप लगाया, एक वैश्या ने ईर्ष्या के वशीभूत होकर और कुछ स्वार्थी लोगों के बहकावे में आकर बाजार के बीच खड़ी होकर चिल्लायी कि इस भ्रष्ट स्वामी ने मेरा शील भंग किया है, और यह घटना बिजली की तरह चारों तरफ फैल गई, लोगों को परनिन्दा करने और सुनने में आनन्द आता है, समाज के लोगों ने कहना शुरू किया कि स्वामी जी ढोंगी है, पाखण्डी हैं, उन्हें कुछ भी नहीं आता, यदि इसके पास कोई सामर्थ्य या शक्ति होती, तो अपना चमत्कार दिखाते, वैश्या का ही मुंह बंद कर देते, आदि आदि।

परन्तु स्वामी ज्ञानानन्द निश्चल बने रहे, उन्होंने किसी को भी कुछ नहीं कहा अपितु उस बदनामी के जहर को बराबर पीते रहे, उनके दस हजार शिष्यों में से लगभग सभी शिष्य उन्हें छोड़कर चले गए, केवल तीन शिष्य उनके पास रहे, स्वामी जी ने कहा, तुम यहां पर क्यों रुके हुए हो, तुम्हें भी तो चले जाना चाहिए।

पर उन्होंने कहा हम आपके साथ जुड़े हैं, तो मृत्यु पर्यन्त जुड़े रहेंगे, इतना सब कुछ होने के बावजूद भी सन्यासी समाज में उनके प्रति श्रद्धा कम नहीं हुई, क्योंकि वे सभी यह जानते थे कि यह क्षणिक है, जब स्वामी जी के गुरुदेव परमहंस अमृतानन्द जी से कुछ सन्यासियों ने कहा, कि आपके योग्य शिष्य ज्ञानानन्द इस समय घोर कष्ट में हैं, चारों तरफ बदनामी की एक मोटी दीवार बन गई है और समाज के स्वार्थी लोग उन पर पत्थर फेंक रहे हैं, थूक रहे हैं, गालियां दे रहे हैं, एक प्रकार से वे अपने आप में ही निम्नतर हो गए हैं।

तब गुरुदेव ने हंस कर कहा कि मैं उसे जानता हूँ, यदि इस अवसर पर वह चमत्कार के द्वारा कुछ करता है तो मैं उसे निम्नतर समझता, अपने स्वार्थ के लिए साधना का उपयोग करना ही निम्नता है, हो सकता है पिछले सात जन्मों में से किसी जन्म का कोई दोष बाकी रह गया होगा, जो कि उसे इस जन्म में भोगना ही है, और यदि वह नहीं भोगेगा, तो न तो वह सिद्धाश्रम में स्थायित्व पा सकेगा और न उसका मोक्ष ही हो सकेगा।

कुछ समय बाद उन लोगों को जब वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो वे पछताये, शिष्यों ने अनुभव किया कि हमारा गुरु कायर नहीं है, पलायनवादी नहीं है, भागकर जंगल में मुंह छिपाने वाला नहीं है, अपितु कर्मठता के साथ खड़ा है, और उन सभी शिष्यों ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए सम्मान और द्रव्य के साथ गुरुचरणों में पहुँचे।

चमत्कार तो मदारी और जादूगर लोग दिखाते हैं, सच्चा साधक या योगी इन प्रपंचों में नहीं पड़ता, वह सामान्य मानव की तरह ही समाज में रहता है उसी तरह सुख और दुख का अनुभव करता है, घात प्रतिघात का सामना करता है, और इस विषैले समाज में अमृत की तरह जीता है। वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि उसके पास कितने शिष्य हैं या कितने शिष्य छोड़ कर चले गए हैं, जो कमजोर और कायर, स्वार्थी और अवसरवादी, शिष्य होंगे, वे अवश्य ही छोड़ देंगे, पर जो सही अर्थों में शिष्य हैं, जो सही अर्थों में साधक है, उन पर इस प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, अपितु वे दूने जोश से गुरु के पास जाते हैं और अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

जो कुछ घटित हुआ वह पूर्व नियोजित था। ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ है, जो कि कल्पना से परे था, सन्यास जीवन प्रारम्भ करने से पूर्व यह सारा हिसाब किताब तो पूरा करना ही था, इसीलिए इस सम्बन्ध में न तो किसी प्रकार का विचार है और न मन में किसी प्रकार की चिन्ता ही है।

पूज्य गुरुदेव अपनी जगह स्थिर हैं, निश्चल हैं उनका मानस स्पष्ट है, जो समय सन्यास लेने का निर्धारित कर रखा है उस पर वे अडिग हैं, आगे का जीवन सिद्धाश्रम में व्यतीत करना है, और जो शिष्य इस स्तर तक पहुँचे हुए हैं वे उनके साथ हैं, इन कठिनाई की घड़ियों में भी वे शिष्य दौड़कर आये हैं, अपनी सेवाएं समर्पित की हैं, गुजरात के एक शिष्य ने तो ६०० व्यक्तियों की सूची बनाकर गुरुजी के सामने रखी है कि आप प्रत्येक व्यक्ति के सामने धनराशि लिख दें यह धनराशि हम एक महीने में ही एकत्र कर ले आयेगें, जिससे कि आप अपनी योजना को पूर्णता दे सकें, आपके मन में सन्यास लेने से पूर्व जो "सिद्धाश्रम-आश्रम" स्थापित करने का विचार है उसे अन्तिम रूप दिया जा सके।

इस केन्द्र ने किसी के सामने न तो याचना की है, और न करेगा, न किसी का दान स्वीकार किया है, और न करने का विचार है, इसे अपने शिष्यों पर अनुयायियों पर, साधकों पर, गर्व है, वे सभी समर्थ हैं, और उनकी समर्थता से निश्चय ही सन्यास से पूर्व इस प्रकार का पूरे विश्व में अलौकिक 'सिद्धाश्रम-आश्रम' बन सकेगा, और शिष्यों को समर्पित किया जा सकेगा।

पिछले इन दो महीनों में आप सब लोगों का जो स्नेह सहयोग मिला है वह वास्तव में ही अप्रतिम है। नित्य आने वाली डाक दुगुनी और तिगुनी हो गयी है। सभी पत्रों में एक स्वर से यही आवाज है कि हम आपके साथ हैं, और किसी भी कठिन परिस्थितियों में पूरक हैं। जो शिष्य दीक्षा प्राप्त कर चुके हैं उनमें से अधिकांश अपने घर के कामकाज छोड़कर दौड़कर यहां आये हैं और अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं।

आपका सहयोग, अपका स्नेह, आपका अपनत्व और आपकी श्रद्धा हमारी पूंजी है। हमें आप पर और पूज्य गुरुदेव पर गर्व हैं। हमें विश्वास है, चाहे कितनी ही बाधाएं और परेशानियां हमारे सामने आयगी, हम विचलित नहीं होंगे, परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी का आशीर्वाद, ईश्वर की कृपा और सत्य हमारे साथ है, और हमारे साथ रहेगा।

— सम्पादक

अचरज भरा दरिद्रता विनाशक

कनकधारा-स्तोत्र

दरिद्रता अभाव और दैन्य जीवन का अभिशाप है, जबकि धन, ऐश्वर्य एवं सम्पत्ति जीवन को उच्चता एवं श्रेष्ठता। होना यह चाहिये कि यह ऐश्वर्य नीति युक्त हो, मर्यादा से पूर्ण हो, सामाजिक नियमो के अनुकूल हो।

इस ऐश्वर्य के लिये जहां कठोर परिश्रम आवश्यक है, वहीं साथ ही साथ दरिद्रता विनाशक, सम्पत्ति प्रदायक लक्ष्मी साधना भी, और धनदायक साधनाओं में श्रेष्ठ साधनाओं में से एक हैं—"कनकधारा-साधना"।

यह स्वाभाविक है, कि गृहस्थ कठिन साधनाएं सम्पन्न नहीं कर पाता पर इस साधना की यह विशेषता हैं, कि वह साधना जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण यह स्तोत्र भी, एक प्रकार से देखा जाय, तो यह स्तोत्र लक्ष्मी से सम्बन्धित सभी स्तोत्रों में उज्ज्वल "हीरक खण्ड" के समान है ।

प्रत्येक गृहस्थ को अपनी नित्य पूजा या साधना में इस स्तोत्र का समावेश अवश्य ही करना चाहिए....एक दुर्लभ श्रेष्ठ एवं 'जगमगाता हुआ उज्ज्वल हीरक खण्ड—"कनकधारा स्तोत्र"

(कथा प्रसिद्ध है कि आचार्य श्री शंकरभगवत्पाद एक दिन भिक्षा के लिए किसी ब्राह्मण सद्-गृहस्थ के द्वार पर गये। वह ब्राह्मण-परिवार अत्यन्त ही दरिद्र था। आचार्य के रूप में एक सम्मान्य अतिथि को अपने द्वार पर आया देख भक्तिमती गृहिणी बड़े असमंजस में पड़ गयी; कारण, उसके पास भिक्षा के लिए कुछ भी न था, बहुत ढूंढने पर उसे घर में एक आंवले का फल मिला, जिसे लेकर वह सन्यासी के पास पहुँची और बड़े

ही संकोच के साथ उसे उन्हें अर्पण करने लगी, आचार्य को उसकी दुरवस्था पर तरस आ गया। उन्होंने तत्काल ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी, भगवान् नारायण की अर्धाङ्गनी, वात्सल्यमयी भगवती महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की, और उनकी वाणी से अनायास ही करुणा पूर्ण ऐसी कोमल-कान्त पद्यावली स्फुटित हुई, जिसे सुनकर भगवती महालक्ष्मी देखते-देखते आचार्य के सम्मुख अपने त्रिभुवन मोहन रूप में प्रकट हो गयीं और कोमल शब्दों में पूछने लगीं—'मुझे कैसे स्मरण किया ?' आचार्य ने सारी बात कह सुनायी और जगदम्बा से प्रार्थना की, कि वे उस दरिद्र परिवार पर कृपाकटाक्ष की वर्षा करें। भगवती ने बताया कि उस गृहस्थ का प्रारब्ध ऐसा नहीं है कि इसे इस जन्म में धन की प्राप्ति हो सके। आचार्य ने बड़े ही विनीत शब्दों में करुणामयी अम्बा से निवेदन किया—'पूर्व जन्म में इस ब्राह्मण ने कोई ऐसा सुकृत नहीं किया है, जिसके फलस्वरूप उसे धन-सम्पत्ति दी जा सके—इससे क्या हुआ ? मेरे-जैसे भिक्षुक को आंवले का दान देकर इसने जो महान् पुण्यराशि अर्जित की है, उसके कारण यह अतुल धन-सम्पत्ति का अधिकारी हो गया है, अतः उस पर कृपा अवश्य होनी चाहिए।' इस युक्ति का भगवती खण्डन नहीं कर सकीं और उसी समय उस गृहस्थ के आँगन में सोने की वर्षा हुई, जिसके फलस्वरूप उस गृहस्थ का दारिद्र्य सदा के लिए मिट गया और वह प्रचुर धन-सम्पत्ति का स्वामी हो गया। इस घटना का शंकर-दिग्विजय के चतुर्थ सर्ग में स्पष्ट उल्लेख मिलता है। तभी से इस स्तोत्र का नाम 'कनकधारा स्तोत्र' हो गया, इसका श्रद्धापूर्वक आर्त्तभाव से पाठ करने पर बहुतों को धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती हुई सुनी गई है।

श्री कनकधारा स्तोत्रम्

अङ्गं हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती ।
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला ।
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवताया ।। १ ।।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः ।
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या ।
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ।। २ ।।

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष ।
मानन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध ।।
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ।। ३ ।।

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द ।
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।।
आकेकरस्थितिकनीनिकपक्ष्म नेत्रं ।
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ।। ५ ।।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या ।
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला ।
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ।। ५ ।।

कालाम्बुदालितलिसोरसि कैटभारे ।
धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति ।
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ।। ६ ।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान् ।
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनी मन्मथेन ।।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्द्ध ।
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ।। ७ ।।

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा ।
मस्मिन्नकिंचनविहङ्गशिशौ विषण्णे ।।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं ।
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ।। ८ ।।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रं ।
दृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभंते ।।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां ।
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ।। ९।।

गीर्देवतेति गरुडध्वजभामिनीति ।
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै ।।
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ।।१०।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै ।
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै ।
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ।।११।।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै ।
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै ।।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै ।
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ।।१२।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि ।
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि ।
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ।।१३।।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः ।
सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।।
संतनोति वचनाङ्गमान ।
सैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरींभजे ।।१४।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते ।
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे ।
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम ।।१५।।

दिग्धस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट ।
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष ।
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ।।१६।।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं ।
करूणापूरतरंङ्गितैरपाङ्गैः ।।
अवलोकय मार्मकिंचनानां ।
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ।।१७।।

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं ।
त्रयोमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो ।
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ।।१८।।

जैसे भ्रमरी अधखिले कुसुमों से अलंकृत तमाल-तरुका आश्रय लेती है, उसी प्रकार जो श्री हरि के रोमांचसे सुशोभित श्रीअङ्गों पर निरन्तर पड़ता रहता है तथा जिसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य का निवास है, सम्पूर्ण मङ्गलों की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी का वह कटाक्ष मेरे लिए मङ्गलदायी हो ।।१।। जैसे भ्रमरी महान् कमल दल पर आती-जाती या मँडराती रहती है, उसी प्रकार जो मुर-शत्रु श्री हरि के मुखारविन्द की ओर बारंबार प्रेमपूर्वक जाती, और लज्जा के कारण लौट आती है, समुद्र कन्या लक्ष्मी की वह मनोहर मुग्ध दृष्टि-माला मुझे धन-सम्पत्ति प्रदान करे ।।२।। जो सम्पूर्ण देवताओं के अधिपति इन्द्र के पद का वैभव-विलास देने में समर्थ है, मधुहन्ता श्री हरि को भी अधिकाधिक आनन्द प्रदान करने वाली है, तथा जो नील-कमल के भीतरी भाग के समान मनोहर जान पड़ती है, वह लक्ष्मी जी के अध खुले नेत्रों की दृष्टि क्षण भर के लिए मुझ पर भी थोड़ी-सी अवश्य पड़े ।।३।। शेषशायी भगवान् विष्णु की धर्म पत्नी श्री लक्ष्मी जी का नेत्र हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाला हो, जिसकी पुतली तथा बरौनियां अनङ्ग के वशीभूत (प्रेमपरवश) हो अध खुले, किन्तु साथ ही निर्निमेष नयनों से देखने वाले आनन्दकन्द श्री मुकुन्द को अपने निकट पाकर कुछ तिरछी हो जाती हैं ।।४।। जो भगवान मधुसूदन के कौस्तुभमणि-मण्डित

वक्षःस्थल में इन्द्रनीलमयी हारावली-सी सुशोभित होती हैं, तथा उनके भी मन में काम (प्रेम) का संचार करने वाली है, वह कमल-कुंजवासिनी के कमला की कटाक्ष माला मेरा कल्याण करे ॥५॥ जैसे मेघों की घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार जो कैटभशत्रु श्री विष्णु के काली मेघमाला के समान श्यामसुन्दर वक्षः स्थल पर प्रकाशित होती है, जिन्होंने अपने आविर्भाव से भृगुवंश को आनन्दित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी है, उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करे ॥६॥ समुद्र-कन्या कमला की वह मन्द, अलस, मन्थर और अर्धोन्मीलित दृष्टि, जिसके प्रभाव से कामदेव ने मङ्गलमय भगवान् मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था, यहां मुझ पर पड़े ॥७॥ भगवान नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्ररूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्म (धनागम-विरोधी अशुभ प्रारब्ध) रूपी धाम को चिरकाल के लिये दूर हटाकर वृष्टि विषादरूपी धर्मजन्यताप से पीड़ित मुझ दीनरूपी चातक पोत पर धनरूपी जलधारा की वृष्टि करे ॥८॥ विशिष्ट बुद्धि वाले मनुष्य जिनके प्रीतिपात्र होकर जिस दयादृष्टि के प्रभाव से स्वर्ग पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, पद्मासना पद्मा की वह विकसित कमल गर्भ के समान कान्तिमती दृष्टि मुझे मनोवाञ्छित पुष्टि प्रदान करें ॥९॥ जो सृष्टिलीला के समय वाग्देवता (ब्रह्म-शक्ति) के रूप में स्थित होती है, पालन लीला करते समय भगवान गरुड़ध्वज की पत्नी लक्ष्मी (या वैष्णवी शक्ति) के रूप में विराजमान होती है, तथा प्रलय-लीला के काल में शाकम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा चन्द्रशेखरवल्लभा पार्वती(रुद्र-शक्ति) के रूप में अवस्थित होती है, त्रिभुवन के एकमात्र पिता भगवान नारायण की उन नित्य यौवना प्रेयसी श्री लक्ष्मी जी को नमस्कार है ॥१०॥ मातः ! शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम है । रमणीय गुणों की सिन्धुरूपा रति के रूप में आपको नमस्कार है । कमल वन में निवास करने वाली शक्तिस्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है, तथा पुष्टिरूपा पुरुषोत्तम प्रिया को नमस्कार है ॥११॥ कमलवदना को नमस्कार है । क्षीरसिन्धुसम्भूता श्री देवी को नमस्कार है । चन्द्रमा और सुधा की सगी बहन को नमस्कार है । भगवान नारायण की वल्लभा को नमस्कार है ॥ १२ ॥

कमल सदृश नेत्रों वाली माननीय माँ ! आपके चरणों में किये गये प्रणाम सम्पत्ति प्रदान करने वाले, सम्पूर्ण इन्द्रियों को आनन्द देने वाले, साम्राज्य देने में समर्थ और सारे पापों को हर लेने के लिए सर्वथा उद्यत हैं, वे सदा मुझे ही अवलम्बन करें (मुझे ही आपकी चरण-वन्दना का शुभ अवसर सदा प्राप्त होता रहे)।१३॥ जिनके कृपा कटाक्ष के लिए की गई उपासना उपासक के लिए सम्पूर्ण मनोरथों और सम्पत्तियों का विस्तार करती हैं, श्री हरि की हृदयेश्वरी उन्हीं आप लक्ष्मी देवी का मैं मन, वाणी और शरीर से भजन करता हूं ॥१४॥ भगवति हरिप्रिये ! तुम कमल वन में निवास करने वाली हो, तुम्हारे हाथों में लीला-कमल सुशोभित है। अत्यन्त उज्वल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से शोभा पा रही हो। तुम्हारी झांकी बड़ी मनोरम है, त्रिभुवन का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवि ! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ ॥१४॥ दिग्गजों द्वारा सुवर्ण-कलश के मुख से गिराये गये आकाशगङ्गा के निर्मल एवं मनोहर जल से जिनके श्री अङ्गों का अभिषेक (स्नान-कार्य सम्पादित) होता है, सम्पूर्ण लोकों के अधीश्वर भगवान विष्णु की गृहिणी और क्षीरसागर की पुत्री उन जगज्जननी लक्ष्मी को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूं ॥१६। कमल-नयन केशव की कमनीय कामिनी कमले ! मैं अकिंचन (दीन-हीन) मनुष्यों में अग्रगण्य हूं, अतएव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूं। तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरल-तरङ्गों के समान कटाक्षों द्वारा मेरी ओर देखो ॥१७॥ जो लोग इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेद-त्रयीस्वरूपा त्रिभुवन-जननी भगवती लक्ष्मी की स्तुति करते हैं, वे इस भूतल पर महान् गुणवान् और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं, तथा विद्वान् पुरुष भी उनके मनोभाव को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं ॥१८॥

देश की पुरानी धरोहर को सुरक्षित रखनें में सहयोग दें

और जीवन भर बिना कुछ खर्च किये "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका मुफ्त में प्राप्त करें ।

आप जानते ही है, कि "मन्त्र-तन्त्र-विज्ञान" पत्रिका एक क्रान्तिकारी कदम है, और भारतीय संस्कृति, हमारे देवर्षियों की प्राचीन धरोहर मंत्र-तंत्र को सुरक्षित रखने में, लोप हो रही विद्याओं को पुनर्जागरित करने में तथा गोपनीय सामग्री को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है, यह एक मात्र ऐसी पत्रिका है जिसने पूरे देशवासियों को इस पावन कार्य में सहयोग देने के लिए आह्वान किया है ।

इस छोटी सी एक वर्ष की अवधि में चार-चार विशेषांक निकाल कर इसने बता दिया है, कि पत्रिका के मूल में न तो कोई स्वार्थ वृत्ति है, और न व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा । एक मात्र यही भावना है, कि स्वस्थ वातावरण में रचनात्मक कार्य हो सके, और एक बार पुनः हमारे जीवित रहते ही हमारी आंखों के सामने मंत्र-तंत्रों का निर्विवाद और अक्षुण्ण प्रभाव स्पष्ट कर सकें, स्थायित्व दे सके ।

हम चाहते हैं, इसके पृष्ठ बढ़ें,अधिक से अधिक यन्त्रों का चित्रण हो सके, जिससे पूरा भारत ही नहीं, विश्व भी इसका लाभ उठा सके, पर इसके लिये आर्थिक स्थायित्व चाहिये, एक ऐसी निधि चाहिये, जो इसके पांवों को दृढ़ता दे सके, और निरन्तरता देते हुये पुष्टता दे सके ।

लक्ष्मी का सही सदुपयोग कीजिये

लक्ष्मी के तीन रूप होते हैं, एक तो ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो धन को येन-केन प्रकारेण दबा कर ही रखना चाहते हैं, न तो वे इसका लाभ उठा पाते हैं, और न उसका उपयोग ही करते हैं,

कंजूस की तरह लक्ष्मी को दबा कर रखना ही उनके जीवन का लक्ष्य हो जाता है, ऐसे व्यक्ति धनाढ्य होते हुये भी निकृष्ट होते हैं।

दूसरे वे होते हैं, जो केवल अपना स्वार्थ ही देखते हैं, खुद के ऐश-आराम, भोग विलास के लिये ही व्यय करते हैं, ऐसे व्यक्ति मध्यम कोटि के कहे जाते हैं।

तीसरे उत्तम पुरुष वे होते हैं, जो कमाते हैं, स्वयं भी उपभोग करते हैं, और समाज, देश तथा भारतीय संस्कृति के निर्माण में भी सहायक होते हैं,जो खुले हृदय से, कुछ तकलीफ और अभाव देखकर भी शुभ कार्य एवं शुभ उद्देश्य के लिए व्यय कर अक्षय यश के भागी होते हैं, ऐसे ही व्यक्ति यशवान होते हैं, और मृत्यु के बाद भी अपना नाम अक्षुण्ण रखने में समर्थ हो पाते हैं।

और मैं ऐसे ही पुण्यवान लोगों का आह्वान करता हूं, इस पुनीत कार्य में भाग लेने के लिए निमन्त्रित करता हूं, और मंत्र-तंत्र-यंत्र पत्रिका की तरफ से सुविधाएं देता हूं, कि, वे समय रहते इस योजना का लाभ उठावें।

आपको इस योजना का लाभ उठाने में सिर्फ यह करना होगा।

मंत्र-तंत्र-यंत्र पत्रिका आपको जीवन भर मिलती रहे, इसके लिये आप इसके आजीवन सदस्य बन कर पुनीत एवं श्रेष्ठ कार्य में भाग लें इसके लिए आपको मात्र पन्द्रह सौ रु० पत्रिका-कार्यालय में भेजने होंगे, इसकी आपको रसीद मिलेगी। ऐसा होने पर आप इस महान् पत्रिका के आजीवन सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे, और आपका नाम पत्रिका में प्रकाशित किया जा सकेगा, यदि आप चाहेंगे तो आपका नाम गोपनीय भी रखा जा सकेगा।

आप यदि एक साथ पन्द्रह सौ रुपये जमा कराना न चाहें तो इसे पांच मासिक किश्तों में बैंक ड्राफ्ट या मनियार्डर द्वारा भेज सकते हैं, आपको प्रति किश्त रसीद भेजी जायेगी। पहली किश्त प्राप्त होते ही आपको मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका निःशुल्क भेजनी प्रारम्भ कर दी जायेगी, पहली किश्त के बाद शेष किश्तें ठीक एक-एक महीने के अन्तर से प्राप्त हो जानी चाहिये, अन्यथा पत्रिका कार्यालय को अधिकार होगा,कि वह भेजी गई पत्रिका का शुल्क काटकर शेष रकम आपको लौटा दें।

आजीवन सदस्यों को समय-समय पर पूज्य श्रीमाली जी का मार्ग निर्देशन एवं साधना निर्देशन भी प्राप्त होता रहेगा।

उपहार

आजीवन सदस्यता शुल्क पन्द्रह सौ रुपये एक किश्त में जमा कराने पर

जो एक साथ आजीवन सदस्यता शुल्क पन्द्रह सौ रुपये पत्रिका कार्यालय को भेज देंगे, उन्हें एक विशेष उपहार "त्रिधातु निर्मित स्वर्ण मुद्रिका" उपहार स्वरूप भेजी जायेगी, शास्त्रों के अनुसार विशेष विजय मुहूर्त में तीन धातुओं से निर्मित इस मुद्रिका पर शुद्ध स्वर्ण पर चिंमित लक्ष्मी यन्त्र स्थापित है जो दुःख और दारिद्रय मिटाने, व्यापारिक व आर्थिक उन्नति में अद्भुत सफलतादायक है–

तार ताम्र सुवर्णांना अर्क षोडश सेन्दुभि ।
पुष्यार्के घटका मुद्रि ऋण दारिद्रय नाशनम् ॥

पर यह सुविधा आजीवन सदस्यों को ही सुलभ हो सकेगी । यदि आप इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप लौटती डाक से ही आजीवन सदस्यता शुल्क एवं अपने हाथ की किसी भी उंगली का नाप निम्न पते पर भेजें ।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

"जीवन में संयोग बार-बार नहीं मिलता । जो भाग्यशाली होते हैं, वे सही समय पर, सही कार्य कर गुजरते हैं, और उसका मधुर फल जीवन भर प्राप्त करते हैं । "आजीवन सदस्य" होना ऐसा ही सुखद अवसर और संयोग है, जिसे आप प्राप्त कर सकते हैं ।"

इन्द्र कृत

 महालक्ष्मी स्तोत्र 

जब देवगुरू बृहस्पति के श्राप से इन्द्र दीन-हीन लक्ष्मी विहीन हो गये, तो उन्होने 'महालक्ष्मी स्तोत्र' साधना प्रारम्भ कर पुनः लक्ष्मीवान एवं ऐश्वर्य युक्त होने में सफल हो सके थे। 'विष्णु पुराण' में पराशर मैत्रेय संवाद में यह स्तोत्र स्पष्ट है।

वीतरागी घुमक्कड़ योगी आला स्वामी के सौजन्य से यह स्तोत्र एवं टीका प्राप्त हुई है, उन्होंने कई शिष्यों से यह साधना सम्पन्न कराई है।

स्वामीजी के अनुसार 'महालक्ष्मी यन्त्र' या 'कुबेर यन्त्र' के सामने दीपावली से दो दिन पूर्व, दीपावली के दिन और दीपावली के दो दिन पश्चात् अर्थात् कुल पांच दिनों तक नित्य इस स्तोत्र के एक सौ एक पाठ करें, तो निश्चय ही साधक अतुलनीय धन सम्पदा का मालिक होता है, तथा अपने प्रारब्ध में अंकित दरिद्रता के लेख को हमेशा-हमेशा के लिए मिटाने में समर्थ हो पाता है।

यदि साधनाकाल में 'स्फटिक माला' गले में धारण कर, पीले वस्त्र पहिन, पीले आसन पर उत्तर मुख बैठ, घी का दीपक जलाकर यह साधना सम्पन्न की जाय, तो सफलता मिलने में सन्देह नहीं रहता।

एक दुर्लभ गोपनीय अद्भुत सफलता एवं सिद्धिदायक प्रयोग........

इन्द्र उवाच

नमामि सर्व्वभूतानां जननीं पद्मसम्भवाम्।
श्रियंमुनीन्द्रपद्माक्षीं विष्णोर्वक्षःस्थलस्थिताम्।१।।

देवराज इन्द्र सुरगुरु बृहस्पतिजी के शापसे विगतश्री हो लक्ष्मीजी की आराधना में रत हो कहने लगे। जो सम्पूर्ण जीवगणों की माता कमलदल जिसका उत्पत्ति-स्थान, जिनके नेत्र खिले हुए कमल के सदृश बड़े हैं और जो भगवान् विष्णु के हृदय में निरंतर विराजमान रहती हैं, मैं उन्हीं लक्ष्मीदेवी को नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपालिनी ।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूमिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥२॥

हे देवी ! तुम्हीं सिद्धि, तुम्हीं स्वधा, तुम्ही स्वाहा, तुम्हीं सुधा, तुम्हीं सन्ध्या, तुम्हीं रात्रि, तुम्हीं प्रभा, तुम्हीं भूमि, तुम्हीं बुद्धि, तुम्हीं श्रद्धा, तुम्हीं सरस्वती और तुम्हीं सबकी माता हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने ।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥३॥

हे शोभने ! तुम्हीं यज्ञविद्या, तुम्हीं गुप्तविद्या, तुम्हीं ब्रह्मविद्या और तुम्हीं एकमात्र मुक्ति की देने वाली हो। (तुमको बारंबार प्रणाम हैं) ॥ ३ ॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च ।
सौम्या सौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयेदं देवि पूरितम् ॥ ४ ॥

हे देवि ! तुम्हीं तर्कविद्यारूपिणी, तुम्हीं साम आदि चारों वेदों का स्वरूप, तुम्हीं दण्डनीतिस्वरूपिणी और तुम्हीं सौम्यरूपिणी अर्थात् मनोहरस्वरूप वाली हो। हे जननी। तुम्हारे अनेक रूप द्वारा ही सम्पूर्ण विश्व व्याप्त है ॥ ४ ॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्व्वयज्ञमयं वपुः ।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः ॥ ५ ॥

देवाधिदेव गदाधर हरि का देह सर्वयज्ञमय है,जो एक मात्र योगीगणों के चिन्तनीय हैं, हे देवि ! तुम्हारे अतिरिक्त कौन स्त्री उस देह में वास कर सकती है ॥ ५ ॥

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
विनष्टप्रायमभवत्त्वयेदानीं समेधितम् ॥ ६ ॥

हे देवि ! तुम पहले इस विश्व को परित्याग करके समुद्र के भीतर प्रवेश कर गई थी, तब त्रिभुवन विनाशप्राय हो गया था, परन्तु तुमने फिर क्षीरसागर से निकलकर इसकी रक्षा की हैं ॥ ६ ॥

दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद्धान्यधनादिकम् ।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ॥७॥

हे महाभागे ! तुम्हारी कृपादृष्टि होने पर मनुष्य स्त्री, पुत्र, गृह, बन्धु, धन-धान्य सभी कुछ प्राप्त कर सकता है। अतः हम पर अपनी कृपादृष्टि करो ॥७॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम् ।
देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥ ८ ॥

हे जननी ! तुम जिस मनुष्य पर कृपादृष्टि करती हो, उसे आरोग्यता,ऐश्वर्य, शत्रुनाश और सुख, कुछ भी दुर्लभ नहीं है ॥ ८ ॥

त्वमंबा सर्व्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता ।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम् ॥९॥

हे मातः ! तुम सम्पूर्ण जीवों की माता और देवदेव हरि सब के पिता है, तुमसे और विष्णु से यह चराचर जगत् व्याप्त है ॥ ९ ॥

मानं कोषं तथा कोष्ठं गृहं मा परिच्छदम् ।
मा शरीरं कलत्रञ्च त्यजेथाः सर्व्वपावनि ॥१०॥
मापुत्रान्मासुहृद्वर्गान्मा पशून्मा विभूषणम् ।
त्यजेथा देवदेवस्य विष्णोर्व्वक्षःस्थलाश्रये ॥११॥

हे हरिहृदयवासिनी! तुम जिस मनुष्य का त्याग करती हो, उस मनुष्य की मान्यता, सुख, कोष, परिधान, शरीर स्त्री, पुत्र, सुहृत (मित्र), पशु और आभूषण सभी वस्तुएं नष्ट हो जाती है ॥ १० ॥ ११ ॥

सत्येनाशौचसत्त्वाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले॥१२॥

हे विमले ! तुम जिसका त्याग करती हो, उसका

सत्य, पवित्रता, बल, शील आदि सब नष्ट हो जाता है ।। १२ ।।

त्वयावलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
कुलैश्वर्य्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ।।१३।।

हे देवि ! तुम जिस पुरुष को कृपा की दृष्टि से देखती हो, गुणविहीन होने पर भी उसे शीघ्र ही शीलादि गुण और ऐश्वर्य प्राप्त हो जाता है ।। १३ ।।

स श्लाघ्यः गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान् ।
स शूरःस च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः ।१४।

हे देवि ! तुम जिस पर कृपादृष्टि करती हो, वही श्लाघायोग्य, वही गुणी, वही धन्य, वही कुलीन, वही बुद्धिमान्, वही शूर और वही विक्रमशाली कहा जाता हैं ।। १४ ।।

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः ।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ।।१५।।

हे विष्णुप्रिये ! तुम जगत् की माता हो, तुम जिससे विमुख होती हो, उसके शीलादि जितने सद्गुण हैं, शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।। १५ ।।

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणाञ्जिह्वा हि वेधसः ।
प्रसीद देवी पद्माक्षि मास्मांस्त्याक्षी कदाचन ।।१६।।

हे कमललोचने ! ब्रह्मा की जिह्वा भी तुम्हारे गुण-कीर्त्तन में समर्थ नहीं हैं । हे जननी ! मुझ पर प्रसन्न हो, हमारा त्याग न करो ।। १६ ।।

पराशर उवाच

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक्प्राह हृष्टा शतक्रतुम् ।
शृण्वतां देवदेवानां प्रादुर्भूता स्थिता द्विज ।।१७।।

पराशरजी ने कहा कि हे ब्राह्मण ! जब इन्द्र ने सब देवताओं के सामने इस प्रकार स्तुति की, तब सब प्राणियों में स्थित कमला (लक्ष्मी) ने प्रसन्न होकर कहा ।। १७ ।।

श्रीरुवाच

परितुष्टास्मि देवेश स्तोत्रेणानेन हेतुना ।
वरं वृणीष्व यस्तिष्टो वरदाहं समागता ।। १८ ।।

लक्ष्मी बोली कि हे देवेश ! मैं तुम्हारे स्तवन से सन्तुष्ट होकर वरदान देने के लिए आई हूँ । तुम अभि-लषित वर माँगो ।। १८ ।।

वरदा यदि देवि त्वं वरार्हो यदि वाप्यहम् ।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मे ह्यर्थितो वरः ।१९।

इन्द्र ने कहा कि हे देवि ! यदि हमारे ऊपर प्रसन्न हुई हो, यदि हमें वर देने के योग्य पात्र समझा है, तो त्रिभुवन का परित्याग करके मत जाओ । हे जननी ! हमारा केवल यही प्रार्थनीय वर है ।। १९ ।।

स्तोत्रेण यस्तवैतेन त्वां स्तोष्येत्पद्मसम्भवे ।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयस्तुवरो मम ।।२०।।

हे सागरसम्भवे ! जो मनुष्य इस स्तवन द्वारा तुम्हें प्रसन्न करें, तुम उसका त्याग न करो । हे जननी ! यह हमारी दूसरी प्रार्थना है ।। २० ।।

लक्ष्मीरुवाच

त्रैलोक्यं त्रिदशश्रेष्ठ सन्त्यजामि न वासव ।
दत्तो वरो मया त्वां तु स्तोत्रेणपरितुष्टया ।।२१।।

लक्ष्मी बोली कि हे त्रिदशनाथ ! मैं तुम्हारी स्तुति से परितुष्ट (संतुष्ट) कर वर देती हूं, मैं त्रिभुवन का त्याग नहीं करूंगी ।। २१ ।।

यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः ।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामिपराङ्मुखी।२२।

जो मनुष्य प्रातःकाल और संध्यासमय इस स्तवन का पाठ करके हमारी प्रीतिसाधन करेगा, मैं कभी उससे विमुख नहीं होऊँगी ।। २२ ।।



नमामि !

गुरु प्रशान्तं भवभीति नाशम्
विशुद्ध बोधं कलुषस्य हारम् ।
आनन्द रूपं नयनाभिरामें
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥१॥
अज्ञाननाशं नित्य प्रकाशम्
सतचित् स्वरूपम् जगदेक मूर्तिम् ।
विश्वाश्रयं विश्व पतिम् परेशं
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥२॥
अणु महान्तं सद् सत् परंच
यौगेक गम्यम् करुणावतारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥३॥
स्वयं भुवम् शान्तमनन्त आद्यम्
ब्रह्मादि वन्द्यम् परमेश पूज्यम् ।
कालात्मकं काल भुवम् शरण्यं
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥४॥
भोगापवर्गम् प्रतिदान शक्तम्
बन्धु सखायां सुहृदयं प्रियंच ।
अज्ञान नाशं सतचित् प्रकाशम्
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥५॥
प्रेमाम्बुधिं प्रेम रसायनंच
प्रेम प्रदानं निधिम द्वितीयं ।
मृत्युंजयं मृत्युभयापहारम्
श्री गुरुदेवं नितरा नमामि ॥६॥
ज्योतिमयं पूर्णमनन्त शक्तिं
संसार सारं हृदयेश्वरं च ।
विज्ञान रूपं सकलार्तिनाशम्
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥७॥
स्नेह दया वत्सलतां विधाय
चित्तं प्रमुग्ध कृत्रमत्रयेन ।
तं दीननाथं भव सिन्धु पोतम्
श्री गुरुदेवं नितरां नमामि ॥८॥ ❀

दीन बन्धु !

हे, दीनबन्धु दयालु गुरु
केहि भांति तव गुण गाऊं मैं ।
तुम्हरे पवित्र चरित्र केहि विधि
नाथ कहि के सुनाऊं मैं ॥१॥
जिह्वा अपावन है मेरी
गुरु नाम कैसे लीजिये ।
मन फंस रहा भव जाल में
वह किस तरह प्रभु दीजिये ॥२॥
धन धान्य माया रूप है
क्योंकर निछावर कीजिये ।
श्रद्धा सुमिरनी भेंट करि मैं
दीन हों चरणों पड़ा ॥३॥
मैं पतित हूं तुम पतित-
पावन प्रभु का आसरा ।
मैं हूं अनाथ दयानिधे
तुम अनाथन नाथ हो ॥४॥
तेरा भिखारी तुम बिना
प्रभु आसरा किसका करे ?
माता पिता सुत भ्रात भार्या
कोई साथ न जायेंगे ॥६॥
उस पाककुंभी नरक में
कोई न हाथ बटायेंगे ।
यह सोच के तव शरण आया
अब ठिकाना है नहीं ॥७॥
बस पार कर दो मेरी नौका
और अपना है नहीं
हे, जगनायक विश्व विनायक
हे, जन जीवन के जन ॥८॥
हे, निर्गुण हे, निराकार प्रभु
निरमय निगम निरंजन हे ।
सब के स्वामी अन्तरयामी
पार ब्रह्म परमेश्वर हे ॥९॥ ❀

महालक्ष्मी पूजन

हिन्दू धर्म और जीवन का आधार देवताओं की आराधना रहा है। इसमें भी महालक्ष्मी की आराधना सनातन काल से चली आ रही है। हिन्दू ही नहीं संसार के सभी विद्वान और जन-साधारण ने लक्ष्मी को आराध्य माना है और इस बात को स्वीकार किया है कि दरिद्रता जीवन का अभिशाप है, इसके विपरीत धन-धान्य पूर्ण समृद्ध होना जीवन का सौभाग्य है, जीवन की उच्चता है और मानव जीवन की पूर्णता है। इसीलिए हमारे शास्त्रों ने जीवन के चार पुरुषार्थ—१- धर्म २- अर्थ, ३- काम, ४- मोक्ष, में धन को दूसरा पुरुषार्थ माना है।

धन की आराध्य देवी लक्ष्मी मानी गई है, जो कि समुद्र से उत्पन्न भगवान विष्णु की प्रियतमा हैं; इसकी आराधना और पूजन जीवन का शुभ प्रतीक है। दीपावली के अवसर पर तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी श्रद्धा से महालक्ष्मी का पूजन करता ही है, परन्तु इसके लिये विधान यह है कि जब कभी मन में इच्छा उत्पन्न हो, जब भी मन में लक्ष्मी पूजन की भावना बलवती हो तभी महालक्ष्मी पूजन किया जा सकता है इसके लिये कोई मुहूर्त आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

यदि नित्य महालक्ष्मी पूजन-प्रातःकाल किया जाय तो एक श्रेष्ठ उपलब्धि है और कई साधकों को मैंने नित्य पूर्ण विधि विधान के साथ महालक्ष्मी पूजन करते देखा है।

महालक्ष्मी पूजन साधक को पूर्ण निष्ठा, आत्मविश्वास और श्रद्धा के साथ करना चाहिए, यह पूजन प्रातः काल अथवा रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु शास्त्रों में विधान है कि यदि दीपावली की रात्रि को वृषभ या सिंह लग्न में लक्ष्मी पूजन किया जाय तो वह ज्यादा उचित रहता हैं, क्योंकि ये दोनों ही लग्न स्थिर लग्न है और स्थिर लग्न में महालक्ष्मी का पूजन करने से घर में स्थिरता आती है तथा धन-धान्य समृद्धि में स्थाइ-

त्व आता है।

लक्ष्मी पूजन करने से पूर्व पूजन सामग्री एकत्र कर ली जाय, यह सामग्री शुद्ध और पवित्र हो, नीचे मैं पूजन सामग्री दे रहा हूँ, उनमें से जो भी सम्भव हो वह सामग्री सुलभ की जाय।

पूजन सामग्री :

कुंकुम, केशर, अबीर, गुलाल, मौली, चावल, नारियल, लोंग, इलायची, सिन्दूर, अगरबत्ती, दीपक, रूई माचिस, शुद्ध घृत, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, (पंचामृत) यज्ञोपवीत, पंचमेवा, फल, कलश, कुए का जल, गंगाजल, श्वेतचन्दन, पान, पंच-पल्लव, कमल-पुष्प, पकाई हुई खीर, मिश्री, सरसों, कपूर, पीला वस्त्र, लक्ष्मी को पहिनाने योग्य वस्त्र, इत्र, सुपारी, तुलसी-पत्र, काली मिर्च, गुग्गल, शृंगार-प्रसाधन, दूध का प्रसाद आदि।

ध्यान देने योग्य बातें :

१– साधक, जब भी इच्छा हो महालक्ष्मी का पूजन कर सकता है।

२– महालक्ष्मी पूजन पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, इस बात का ध्यान रखे कि स्त्री रजस्वला न हो, शास्त्र मर्यादा के अनुसार रजस्वला समय के बाद छठे दिन स्त्री देव पूजन के योग्य मानी जाती है, पांच दिन स्त्री को कोई भी शुभ कार्य या देव पूजन करने का निषेध है, साधक अपनी धर्मपत्नी के साथ बैठकर लक्ष्मी पूजन कर सकता है, ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह अपने दाहिनी ओर अपनी पत्नी को बिठावे।

३– पूजन काल में शुद्ध एवं पवित्र वस्त्र धारण किए हुए हों, स्त्री जब भी लक्ष्मी पूजन करे तो सुन्दर राजसी वस्त्र धारण कर पूर्ण शृंगार के साथ महा-लक्ष्मी पूजन में भाग ले।

४– पूजन करने से पूर्व पूजन सामग्री एकत्र कर रख देनी चाहिए, सामने महालक्ष्मी का चित्र या मूर्ति स्थापित होनी चाहिए, उसके सामने मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त श्री यन्त्र, कनकधारा यन्त्र, कुबेर यन्त्र स्थापित करे, पर ये तीनों ही यन्त्र स्थापित करने आवश्यक नहीं है, इनमें से कोई भी एक यन्त्र स्थापित किया जा सकता है, यह यन्त्र महालक्ष्मी के सामने लकड़ी के पट्टे पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित होना चाहिए।

५– साधक के बांई ओर तेल का दीपक लगाना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है, तथा दाहिनी ओर शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए, दोनों दीपकों के बीच में अगरबत्ती लगानी चाहिए।

६– घी के दीपक में कुछ इत्र की बूंदे भी डाली जा सकती है, महालक्ष्मी पूजन में किसी भी प्रकार का इत्र प्रयोग में लिया जा सकता है पर गुलाब का इत्र सर्वप्रिय माना गया है।

७– लक्ष्मी पूजन में कमल के पुष्प या गुलाब के पुष्पों का विशेष महत्व है, पुष्प ताजे खिले हुए हों।

८– साधक पीले आसन का प्रयोग करे, और स्वयं, या तो सुन्दर राजसी वस्त्र धारण करे, अथवा पीले वस्त्र धारण करके पूजन करे।

९– साधक का मुंह पूर्व या उत्तर की तरफ होना चाहिए, और उसके सामने देवी की मूर्ति या चित्र स्थापित होता है।

१०– महालक्ष्मी पूजन से पूर्व गणपति स्थापन गणपति पूजन तथा गुरु पूजन आवश्यक माना गया है।

११– लक्ष्मी मन्त्र जप में किसी भी प्रकार की माला का

प्रयोग किया जा सकता हैं, पर रुद्राक्ष की माला निषेध हैं, स्फटिक माला न हो तो चन्दन की माला का भी प्रयोग किया जा सकता है।

महालक्ष्मी पूजन :

साधक सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर महालक्ष्मी को प्रणाम करे—

सौवर्णपद्मसद्माऽमलकमलकृतं युग्मशःपाणियुग्मे, बिभ्रन्ती शोभयोद्ग्रहितजलधिजलोच्छन्नगात्री विधात्री। बाहुद्वन्द्वकराभयाऽर्द्रहृदयाभवतप्रियोल्लासिनी, लक्ष्मीर्मे भवनेवसत्वनुदिनंचन्द्राहिरणमय्यपि॥ १॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते। धवलतरांशुकगन्ध माल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥ १॥

हे कमल वासिनी! कमल सदृश कोमल हाथों वाली! स्वच्छ सुगन्धित पुष्पों की माला को धारण करने से शोभा वाली! हे विष्णु प्रिये! मन की बातों को जानने वाली! त्रिभुवन (त्रैलोक्य) को ऐश्वर्य तथा धन देने वाली, हे देवि! मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाओ॥ १॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विनौ॥ २॥

अग्निदेव धन दे! वायुदेव धन दें! सूर्यदेव धन दें! इसी भांति वसु, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण एवं अश्विनीकुमार आदि समस्त देव हमारे गृह में वास करते हुए हमें धन प्रदान करें।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो, मह्यम् ददातु सोमिनः॥

हे वरुण देव! आप सोमरस पीजिये। इन्द्रदेव भी सोमरस पीवें। सोमी (सोमरस पीने वाले) कुबेर आदि समस्त देव मेरे लिये भी सोमरस दें और सोमरस के पीने वाले सर्वदा हमारे घर में निवास करें, जिससे कि मैं भी ऐश्वर्यशाली बन जाऊं।

न क्रोधो न च मात्सर्य न लोभो नाशुभा मति।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्॥

जो इस श्रीसूक्त का पाठ करते हैं उन भक्तों को एवं जिन्होंने पुण्य किये हैं ऐसे लोगों को केवल पाठ मात्र से क्रोध मत्सरता, लोभ एवं अशुभ मति आदि नहीं सताते हैं।

पद्मानने पद्म उरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥

हे कमल के सदृश मुख वाली! हे कमल के समान जंघों वाली! हे कमल नयने! हे कमल में वास करने वाली, हे पद्माक्षि, तुम मेरे यहां सदैव निवास करो, जिससे कि मैं सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्त करूं।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।

मैं विष्णु-पत्नी क्षमा स्वरूपिणी, माधवी, विष्णु प्रिया, माधव प्रिया, सखी, देवी एवं अच्युत अर्थात् सच्चिदानन्द परमेश्वर की बल्लभा को प्रणाम करता हूं।

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

हम महालक्ष्मी की जिज्ञासा करते हैं और विष्णु पत्नी का ध्यान करते हैं, अतएव श्रीमहालक्ष्मी हमें प्रेरित करें, अर्थात हमारे गृह में निरन्तर निवास करें।

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि
विश्वप्रियेविश्वमनोऽनुकूलेत्वत्पादपद्मंमयिसन्निधत्स्व

हे कमल मुखि, हे कमल वाली, हे कमल के पत्रों वाली, हे कमलों से प्रेम करने वाली, हे कमल के समान बड़ी आंखों वाली, संसार की प्रिय, संसार के मन के अनुकूल चलने वाली, हे महालक्ष्मी तुम अपने चरण कमलों को मेरे घर में रखो ।

आनन्दः कर्दम श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रिय पुत्राश्च मयि श्रीर्देविदेवताः ।।

आनन्द, कर्दम, श्रीद, चिक्लीत ये चार जो प्रसिद्ध पुत्र हैं जो कि इस श्रीसूक्त के ऋषि भी हैं और इस सूक्त की प्रधान देवता लक्ष्मीजी के पुत्र हैं मुझे "श्री" दें ।

ऋणरोगादि दारिद्रयं पापंच अपमृत्यवः ।
भय शोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ।।

हे महालक्ष्मी, मेरी ऋण रोगादि बाधाएं, दारिद्रय, पाप, अपमृत्यु (अकाल मृत्यु) भय एवं समस्त ताप आदि सदा के लिये नष्ट हों, जिससे कि मैं सर्वदा सुख भोगूं ।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यंमाविधात्पवमानंमहीयते ।
धान्यंधनंपशुंबहुपुत्रलाभंशतसंवत्सरंदीर्घमायुः ।।

इस सूक्त का पाठ करने से लक्ष्मी, तेजस्विता आयु, आरोग्य, आदि सभी तथा पवित्रता एवं गौरव वस्तुएं वृद्धि को प्राप्त होती हैं और धन, धान्य, पशु, बहुपुत्रलाभ, सौ वर्षों तक की आयु इसके जप मात्र से ही प्राप्त होती है ।

इसके बाद साधक अपने इष्ट एवं कुल देवता का ध्यान करे ।

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः, श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, उमामहेश्वराभ्यां नमः, लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः, शचीपुरन्दराभ्यां नमः, इष्टदेवताभ्यो नमः, कुलदेवताभ्यो नमः, ग्रामदेवताभ्यो नमः, स्थानदेवताभ्यो नमः, वास्तुदेवताभ्यो नमः, एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो महापुरुषेभ्यो नमो नमः ।

संकल्प

इसके बाद दाहिने हाथ में जल गंध, अक्षत, पुष्प, सुपारी आदि लेकर संकल्प बोलते हुए निर्माल्य पात्र में जल छोड़ दे ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे,—क्षेत्रे,—नगरे,—नाम संवतसरे,-अयने —मासे,–पक्षे,-पुण्यतिथौ,—वासरे,—सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु, –नाना,-गोत्रोत्पन्नोहं, देवता प्रीत्यर्थे यथाज्ञानं, यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये ; तदङ्गत्वेन गणेश महालक्ष्मीपूजनं च करिष्ये

दक्षिण हाथ में जल, गंधाक्षतपुष्प, सुपारी आदि मंगलद्रव्य लेकर उपर्युक्त प्रकारेण उच्चारण करके निर्माल्य पात्र में उसे छोड़ दें ।

इसके पश्चात् अपने सामने जल का पात्र भरकर रखे, यह पात्र ताम्बे का या चांदी का हो सकता हैं, फिर वरुण ध्यान करके कलश का पूजन करे ।

वरुण ध्यान :

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।
मकरस्थं पाशहस्तमभसां पतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ।।

वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि पूजयामि।

कलश पूजन :

कलश को जल से भरकर देव के दाहिनी ओर (अपने बायीं ओर) रखें और उसमें वरुण का आवाहन करें—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धराः।
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।

कलश प्रार्थना।

देव दानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिता।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

प्रसन्नो भव। वरदो भव। अनया पूजया वरुणा द्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।

प्रोक्षण :

कलश के जल को पूजा पात्र में लेकर इस जल से समस्त पूजन सामग्री एवं देवताओं का प्रोक्षण करे, बायें हाथ में कलश लेकर दाहिने हाथ में पुष्प से उस जल को समस्त पूजन सामग्री, चित्र, मूर्ति, दीपक एवं स्थान आदि पर जल छिड़के, छिड़कते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः

इसके बाद इसी जल को अपने स्वयं के ऊपर, पत्नी पर, तथा वहाँ उपस्थित सभी परिवार के सदस्यों पर छिड़के, छिड़कते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करे—

आत्मप्रोक्षण :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरःशुचिः।।

आसन शुद्धि :

पूजन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व अपने आसन को शुद्ध करना आवश्यक माना गया है, इसके लिए अपने आसन के नीचे चन्दन या जल से त्रिकोण बनाकर उस पर गंध, अक्षत्, पुष्प निम्न मन्त्र के द्वारा समर्पित करे—

ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

फिर इस त्रिकोण पर आसन बिछाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ॐ आधारशक्तये नमः
ॐ कूर्माशनाय नमः
ॐ अनंतासनाय नमः
ॐ विमलासनाय नमः
ॐ आत्मासनाय नमः

दिग्बन्ध :

किसी भी देवताओं के पूजन से पूर्व दिग्बन्ध आवश्यक माना गया है, दिग्बन्ध का तात्पर्य है कि पूजन के

समय राक्षस एवं अन्य भूत-प्रेत, पिशाच आदि का प्रभाव न पड़े और न किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित हो, इसके लिए सभी दिशाओं को बांधने की क्रिया को दिग्बन्ध कहते हैं।

साधक अपने बायें हाथ में सरसों लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ दाहिने हाथ से वे सरसों दशों दिशाओं की तरफ फेंके।

दिग्बन्ध :

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

भैरव :

सभी प्रकार के विघ्नों को दूर करने के लिए तथा पूजन कार्य में रक्षा के लिए भैरव की स्थापना आवश्यक मानी गई है, अतः साधक को चाहिए कि वह बांई ओर छोटी सी चावल की ढ़ेरी बनाकर उस पर सुपारी रखे, और उस सुपारी में भैरव की भावना दे, उसके सामने गुड़ का भोग लगावे, और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिन् लोका अधिश्रिताः यऽइशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम् ।।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।
ॐ भं भैरवाय नमः।

दीपक :

इसके बाद साधक को दीपक पूजन करना चाहिए, दीपक को प्रज्वलित करे और गंध, अक्षत, पुष्प से उसकी पूजा निम्न मन्त्रों द्वारा करें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो-ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ॐ अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड्जुह्वास्यः।

अस्मिन्क्षेत्रे दीपनाथ निर्विघ्न सिद्धिहेतवे।
महालक्ष्मी-पूजार्थमनुज्ञाँ दीयतां मम ।।
दीपो ज्योतिः परब्रह्मः दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोस्तु ते।
भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्मसाक्षिह्यविघ्नकृत् ।।
यावत् कर्म समाप्तिस्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ।।

गणपति :

इसके बाद साधक गणपति पूजन करे, अपने सामने गणपति की मूर्ति या चित्र स्थापित करे और उसका ध्यान निम्न प्रकार से करे—

ॐ गणानां त्वा गणपति (गं) हवामहे प्प्रिया-णां त्वा प्रियपति (गं) हवामहे निधीनां त्वा निधिपति (गं) हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।

सर्वस्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्कन्दन्-मधु-गन्धलुब्धमधुप-व्यालोल-गण्डस्थलम्
दन्ताघातविदारितारि-रुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कर्मसु ।।१।।
एकदन्तं शूर्पकर्णं वरदाभयहस्तकम्।
पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम् ।।२।।

ध्यान के बाद मूर्ति या चित्र को जल से स्नान करा-कर पोंछ कर चन्दन, या केशर से तिलक करे, अक्षत पुष्प चढ़ावे, नेवैद्य का भोग लगावे तथा अन्त में हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

विनायकं वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

प्रसीद देवदेवेश प्रसीद गणनायक ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ।।

विशेषार्घ्यं :

द्वैमातुर कृपासिंधो षण्मातुराग्रजप्रभो ।
विशेषार्घ्यं गृहाणेदं प्रसीद परमेश्वर ।।
अर्घ्यं गृहाण हेरम्ब वरप्रद विनायक ।
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं भक्त्या दत्तं मयाप्रभो ।।
नमस्ते भिन्नदन्ताय नमस्ते हरसूनवे ।
इदमर्घ्यं प्रदस्यामि संग्रहाण गणाधिप ।।
गौर्यङ्गमलसंभूत ज्येष्ठस्वामिन् विनायक ।
गणेश्वर गृहाणार्घ्यं गजानन नमोस्तु ते ।।

ॐ गं गणपतये नमः विशेषार्घ्यं समर्प यामि ।

गणपति पूजन के बाद गुरु का ध्यान करे, और अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु का चित्र स्थापित करे, यदि चित्र न हो तो एक नारियल रख दे और उसी को गुरु मानकर उसका ध्यान करे ।

श्री गुरु ध्यान :

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम् ।
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरुं भावयामि ।।

हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्
ध्यायेद् गुरुचन्द्रशिलाप्रकाशंचित्पुस्तकाभीष्टवरंदधानम्
श्रीगुरुपादुकाभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि ।

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः । ॐ स्वच्छकाशविमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः । ॐ स्वात्माराम पन्जरोवलीनतेजसे श्रीपरमेष्टि गुरवे नमः आवाहयामि पूजयामि ।

फिर गुरु को पुष्प, चन्दन, अक्षत, आदि समर्पित कर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।

सहस्रनाम्ने पुरुषायशाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ।।

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तु ते ।
वासनाद् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं
सर्वभूतानिवासोसि वासुदेव नमोस्तुते ।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

गुरु पूजन के बाद साधक महालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करे, सर्वप्रथम महालक्ष्मी का दोनों हाथ जोड़ कर ध्यान करें ध्यान से पूर्व अगरबत्ती लगा ले, तेल और घी का दीपक प्रज्वलित कर दे और शुद्ध मन से पूर्ण निष्ठा के साथ भगवती महालक्ष्मी का आह्वान करें ।

फिर अपने दोनों हाथों में अक्षत एवं पुष्प लेकर निम्न मंत्र से मूर्ति या चित्र में प्राण प्रतिष्ठा करते हुए लक्ष्मी का आह्वान करे ।

मन्त्र

ॐ अम्बे अम्बिकेम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहन :

ॐ सर्वलोकस्य जननी पद्महस्तां सुलोचनाम् ।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् । चन्द्रांहिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमऽ आवह ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि ।

आसन :

तत्तकांचन वर्णाभां मुक्तामणिविराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यंविन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

पाद्य :

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभुर्वतम् ।
मया दत्तं गृहाणेदं भगवति भक्तवत्सले ।।

ॐ अश्व पूर्वारथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्य में जल लेकर निम्न मन्त्र से भगवती महालक्ष्मी को अर्घ्य प्रदान करें—

अर्घ्य :

अष्टगंधसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाण महतं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ।।

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारा मार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयंतीम् । पद्मे स्थितांपद्मवर्णातामिहोपह्वये-श्रियम् ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः हस्तयोर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमन :

सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णुशिवादिभिः ।
स्तुता ददाम्याचमन महालक्ष्म्यै मनोहरम् ।।

ॐ चन्द्रांप्रभासांयशसाज्वलंतीं श्रियंलोकेदेव-जुष्टामुदाराम् । तांपद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्येऽ-लक्ष्मीर्मे नश्यतांत्वां वृणोमि ।।

श्री महालक्ष्म्यै आचमनियं जलं समर्पयामि।

स्नान :

पंचामृतसमायुक्तं जाह्नवीसलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्वजनिन स्नानार्थं भक्तवत्सले ।।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः । तस्यफलानितपसानुदंतुमायांतरयाश्चबाह्यऽलक्ष्मी ।।

स्नानान्ते आचमनियं जलं समर्पयामि ।

पंचामृत स्नान :

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम् ।
पंचामृतं गृहाणेदं पंचास्यप्राणवल्लभे ।।

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नान :

ॐ गौरी मिनाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । अष्टपदी बभूवुषी सुहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।।

परमानन्दबोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये।
शुद्धोदकैस्तव स्नानं कल्पयाम्यम्ब शंकरि ।।

श्रीमात्रे नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्र :

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौभंत्यरिति मनोहरम्।
दीयमानं महादेवी गृहाण जगदम्बिके ।।

ॐ उपैतुमांदेवसखः कीर्तिश्चमणिनासह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रे स्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।
आचमनियं जलं समर्पयामि।

मधुपर्क : महालक्ष्मी को एक कटोरी में घी और गुड़ मिलाकर मधुपर्क प्रदान करे।।

कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे ।।

ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धि च सर्वानिर्णुदमेगृहात् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।
मधुपर्कान्ते जलं आचमनियं समर्पयामि।

आभूषण :

रत्नं कङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नगमना सा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे ।।

मांगल्यमणि संयुक्त मुक्ताफलसमन्वितम्।
दत्तं मंगलसूत्रं ते गृहाणम्ब शुभंकुरु ।।
रत्नताटंक केयूर हार कंकणनूपुरान्।
ददामि ते महालक्ष्मीं-प्रेमरत्नैकभूषणे ।।

गन्ध :

श्रीखण्डागरुकर्पूर मृगनयनाभिसमन्वितम्।
विलेपनं गृहाणत्वं नमोऽस्तु भक्तवत्सले ।।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षत :

अक्षतान् धवलान् देवि शालीकांस्तण्डुलान् शुभान्।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृहाणाम्ब कृपानिधे ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प :

मन्दारपारिजाता दीन्पाटलं केतकी तथा।
मेरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोस्तु ते ।।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूना (गूं) रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतां यशः।

श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।

अंग पूजा

साधक अपने हाथ में अक्षत् एवं पुष्प लेकर प्रत्येक नाम उच्चारण करता हुआ महालक्ष्मी को अक्षत् पुष्प समर्पित करता हुआ उनकी अंग पूजा करे—

ॐ लक्ष्म्यै नमः पादौ पूजयामि। ॐ गौर्यै नमः जंघे पूजयामि। ॐ पद्मायै नमः जानुनि पूजयामि। ॐ जगद्धात्र्यै नमः उरु पूजयामि। ॐ जगत प्रतिष्ठायै नमः कटिं पूजयामि। ॐ देव्यै नमः उदरं पूजयामि। ॐ लोकवन्दितायै नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ कल्याण्यै नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ शान्तिरूपिण्यै नमः मुखं पूजयामि

ॐ भवान्यै नमः नेत्रे पूजयामि । ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः कर्णौ पूजयामि । ॐ शर्वाण्यै नमः ललाटं पूजयामि । ॐ मंगलदात्र्यै नमः शिरः पूजयामि ।

सौभाग्य द्रव्य

कज्जलं चैव सिन्दूरं हरिद्राकुंकुमानि च ।
भक्त्यार्पितानि श्रीमातः सौभाग्यानि च स्वीकुरु ।।

धूप :

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपं आघ्रापयामि ।

दीप :

कर्पूरवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशंकरं दीपं गृहाण परमेश्वरी ।।

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य :

नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरसमन्वितं लक्ष्मीं देवि नमोऽस्तु ते ।।

नैवेद्य प्रोक्षण—ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ।।

नानाविधानि भक्ष्याणि व्यन्जनानिहरिप्रिये ।
यथेष्टं भुक्ष्व नैवेद्यं षड्रसं च चतुर्विधम् ।।
रंभादाडिम द्राक्षादीन् नानाऋतुफलानि च ।
भक्षाम्ब मया दत्तं कैवल्यफलदायिनि ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमःनैवेद्यं निवेदयामि । नानाऋतुफलानि च समर्पयामि ।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा—श्री महालक्ष्म्यै नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि, पूर्वापोषनं समर्पयामि ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यमध्ये पानीयं समर्पयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि, उत्तरापोषनं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि, मुखप्रक्षालनं समर्पयामि ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल :

एलालवंगकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ।।
ताम्बूल मुक्तिकाचूर्णं-कर्पूरादि समन्वितम् ।
जिह्वा जाड्योच्छेदकरं त्रिपुरे प्रतिगृह्यताम् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मुखशुद्धचर्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा :

पुजापूर्णत्वसिद्धचर्थं पूर्णे पूर्णफलप्रदे ।
हेमरत्नमयीं द्रव्य-दक्षिणां स्वीकुरुष्व मे ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः सांगता सिद्धयर्थं हिरण्य-गर्भ दक्षिणां समर्पयामि ।

निराजन :

चतुर्दसर्वलोकानां तिमिरस्य निवारम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।।

ॐ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रनारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः : तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्याभासा सर्वमिदं विभाति ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः नीराजनं समर्पयामि ।

जल आरती :

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष(गृं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्माशान्तिः सर्व(गृं)शांति शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्ति रेधि ।

प्रदक्षिणा :

ॐ तामऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान्विदेयं पुरुषानहम् ।।

सर्वमंगललाभाय सर्वपापनिवृत्तये ।
प्रदक्षिणां करोम्यम्ब प्रसीद परमेश्वरि ।।
नमस्ते सर्व देवानां वरदासि हरिः प्रिये ।
या गतिस्त्वप्रपन्नाभां सा मे भूयात्व [नर्पनात् ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पांजली :

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय, महाराजाय नमः ।

ॐ तद्ब्रह्म । ॐ तद्वायु । ॐ तदात्मा । ॐ तत्सत्यम् । ॐ तत्सर्वम् । ॐ तत्पुरोर्नमः । अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व(गृं) रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्मत्वं प्रजापतिः । त्वं तदाप आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम् ।

चरणकमलयुग्मं पंकजैः पूजयित्वा
कनककमलमाला कंठदेशेर्पयित्वा ।
शिरसि विनिहितोयं रक्तपुष्पांजलिस्ते
हृदयकमलमध्ये देवि हर्षं तनोतु ।।

पुष्पांजलिं गृहाणेमां वरब्रह्मस्वरूपिणि ।
भक्त्या समर्पितं देवि प्रसन्नो भव सर्वदा ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

नमस्कार :

केतकी जातिकुसुमैर्मल्लिका मालतीभंवः ।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता तावत्प्राप्त्यै नमोऽस्तु ते ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः नमस्करोमि ।

स्तुति :

नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमोरत्नगृहगे ।
नमः श्रीचक्रस्थेखिलमयि नमो बिन्दुनिलये
नमः कामेशांकस्थितिमति नमस्तेम्ब ललिते ।।

जयतु जयतु देवि देवसंघात पूज्या
जयतु जयतु भद्रा भूमरूपा भवानी ।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या
जयतु जयतु संवित सच्चिदानन्दरूपा ।।

क्षमापन :

श्रिये जात श्रिय आनिर्याय श्रियं वयो जनितृभ्यो दधातु ।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भजन्ति सद्यः सविता विदध्यन् ।।

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेहर्निशं मया ।
दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।
सापराधोस्मि शरणम् प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकंप्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ।।

अज्ञानाद विस्मृतेर् भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ।
कोपरः सहते लोके केवलं मातरः विना ।।
भूमो स्खलित पदानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ।।

विशेषार्घ्य :

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।।
सर्वमंगल द्रव्याढ्य गधपुष्प समन्वितम् ।
विशेषार्घ्यं ददाम्यम्ब गृहाण परदेवते ।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि :
अनेन कृतेन पूजा साधना कर्मणा श्री महालक्ष्म्यैं प्रियंताम् ।

इस प्रकार पूर्ण विधि विधान के साथ महालक्ष्मी का पूजन करे तत्पश्चात् महालक्ष्मी को जो भोग लगाया हुआ हैं, वह प्रसाद परिजनों को वितरित करे ।

दीपावली की रात्रि को कई स्थानों पर महालक्ष्मी पूजन के उपरान्त तराजू-पूजन, बही-पूजन, मसीपात्र पूजन, लेखनी पूजन आदि का भी विधान है, अतः यदि साधक चाहे तो उसके बाद इन सब की भी पूजा करे ।

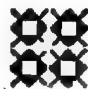
पूजन के बाद साधक परिवार वालों के साथ भोजन करे, पर लक्ष्मी के सामने दोनों दीपक बराबर लगते रहें तथा पूजन सामग्री एवं पूजन उपयोगी द्रव्य वहां से नहीं हटावे ।

दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय के समय पुनः संक्षिप्त महालक्ष्मी का पूजन करे और उसके बाद ही महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को अपने स्थान पर स्थापित करे, श्री यन्त्र आदि को भी यथास्थान स्थापित किया जा सकता है, मसीपात्र, तराजू, बही आदि को भी अपने स्थान पर ले जाकर रखा जा सकता है ।

राजस्थान में कई स्थानों पर लक्ष्मी पूजन के समय सौभाग्यवती स्त्रियां अपना मंगल सूत्र या अन्य स्वर्ण आभूषणों की भी पूजा करती है, अतः रात्रि को यदि आभूषण पूजा हुई हो तो प्रातःकाल इन आभूषणों को धारण कर लेना चाहिए ।

लक्ष्मी पूजन के समय कई स्थानों पर चांदी के रुपयों आदि की पूजा करते हैं, इन रुपयों को अपने सन्दूक में या तिजोरी में रख दें, उन्हें व्यय न करें ।

इस प्रकार विधि विधान पूर्वक महालक्ष्मी पूजन से निश्चय ही धन-धान्य वृद्धि एवं मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है ।



जैन साहित्य में लक्ष्मी उपासना

मन्त्र और तन्त्र की दृष्टि में जैन साहित्य अत्यन्त समृद्ध और सुविस्तृत है। सुदीर्घ परम्परा और परिश्रम के फलस्वरूप इस सम्बन्ध में जो भी साहित्य रचा गया है वह उनके परिश्रम और अध्यवसाय का फल है, वे सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न कर स्वयं साधना रत रहे हैं और उसके परिणामस्वरूप जो फल प्राप्त हुए हैं वही उनके साहित्य में स्पष्ट हुआ है।

प्राचीन सैकड़ों हजारों हस्तलिखित जैन ग्रन्थों में यह समृद्ध साहित्य प्राप्त होता है। लक्ष्मी उपासना से संबंधित साहित्य भी प्रचुरता से देखने को मिल जाता है। आज देश में जैन समाज वस्तुतः लक्ष्मी उपासक और श्रेष्ठ व्यापारी वर्ग है। इसके पीछे इन महात्माओं की तपस्या और सही पथ प्रदर्शन माना जा सकता है।

पिछले दिनों जैन मुनि से भेंट का अवसर मिला था तो उन्होंने इस प्रकार के कई ग्रन्थों का विवरण दिया। उन्हीं के ज्ञान का प्रामाणिक विवरण पाठकों के सामने प्रस्तुत है —

जैन साहित्य में लक्ष्मी एवं लक्ष्मी उपासना का विशेष महत्व है, व्यापार का आधार लक्ष्मी रहा है, और व्यापार में निरन्तर उन्नति सुख-समृद्धि और सौभाग्य की वृद्धि के लिए लक्ष्मी उपासना एक श्रेष्ठ एवं शुभ कार्य है।

जैन धर्म में किसी भी शुभ कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व पंच नमस्कार को विशेष महत्व दिया है, उनकी श्रद्धा के अनुसार यदि केवल इन पांच पदों का ही निरंतर स्मरण किया जाय तो जीवन के सभी विघ्न दूर होकर उसकी मनेच्छा पूर्ण होती है।

नमस्कार रूप मंगल स्मरण–

(१) णमो अरिहंताणं (२) णमो सिद्धाणं (३) णमो आयरियाणं (४) णमो उवज्झायाणं (५) णमो लोए सव्वसाहूणं।

अर्थ –

श्री अरिहन्त भगवान को नमस्कार हो, श्री सिद्ध भगवान को नमस्कार हो, श्री आचार्य को नमस्कार हो, श्री उपाध्याय को नमस्कार हो,लोक में वर्तमान सर्व साधु

मुनिराज को नमस्कार हो।

फल –

यशः,कीर्ति बलं लक्ष्मीं, विविधं च महोत्सवम्।
नवं नवं प्रमोदं च, लभते नात्र संशयः ।।

अर्थ –

इस मन्त्र को जपने वाले भव्यों को यश, कीर्ति, बल, लक्ष्मी, अनेक प्रकार के महोत्सव और नवीन आनन्द निस्सन्देह प्राप्त होते हैं।

परम श्रेष्ठ जैन साधु सूरी महाराज के अनुसार लक्ष्मी से संबंधित प्रयोग मैं आगे दे रहा हूं—

१– सिद्धि प्रयोग

इस प्रयोग में साधक प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाय, इस बात का ध्यान रखे कि वह सिले हुए वस्त्र धारण न करे, मंत्र जप से पूर्व किसी भी प्रकार का व्यसन न करे और यथासम्भव निराहार रहकर यदि इस मन्त्र को जप करे तो निश्चय ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग कोई भी व्यक्ति कर सकता है, इसके लिए यह आवश्यक नहीं हैं, कि केवल जैन समाज या जैन धर्म में दीक्षित व्यक्ति ही कर सकता है, जो भी लक्ष्मी का उपासक है, वह इस मंत्र का प्रयोग कर सकता हैं।

इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, साधक पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह करके बैठे, मन में क्रोध, लोभ, मोह आदि प्रवृत्तियों को न लावे और महालक्ष्मी का ध्यान कर निम्नलिखित मन्त्र का केवल ग्यारह बार नित्य उच्चारण करे तो निश्चय ही उसके जीवन में समस्त प्रकार से सिद्धि प्राप्त होती है।

इस प्रकार यह प्रयोग चालीस दिन का हैं, और यदि अनुष्ठान के रूप में इस प्रयोग को करना है तो किसी भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से यह प्रयोग किया जा सकता है।

अनुष्ठान समाप्त करने के बाद पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करावे और उन्हें वस्त्र आदि दे, ऐसा करने पर उसके मन में जो इच्छा होती है, वह अवश्य ही पूरी होती है।

यदि कोई भी व्यक्ति प्रातःकाल केवल एक बार इस मन्त्र का उच्चारण कर लेता है, तब भी उसके जीवन में समस्त प्रकार से अनुकूलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं संपत्प्रदेत श्रीधा रेसुधारे, सु-धाधारे सुखे सुखरूपे सुखदे रुचिरप्रभे रुचिरकान्ते चिरवर्णे रुचिरलेश्ये रुचिरध्वजे सिद्धे सिद्धिरूपे, सिद्धिधरे सिद्धिदे, पूर्णे पूर्णरूपे, पूर्णप्रभे. सूर्यकान्ते सूर्यवर्णे सूर्यलेश्ये, पद्मे पद्मरूपे पद्मवर्णे पद्मलेश्ये, शुक्ले शुक्लरूपे शुक्लवर्णे शुक्ललेश्ये. इष्टे, इष्टरूपे इष्टदे, कान्ते कान्तरूपे कान्तदे, प्रिये प्रियरूपे प्रियदे मनोज्ञे मनोज्ञरूपे मनोज्ञदे, सौम्ये, सौम्यरूपे सौम्यदे शुभे शुभरूपे शुभदे, सुभगे, सुभगरूपे, सुभपदे, ततमे तितिमे थथमे थिथिमे, दद्दमे दिदिमे दुदुमे, धधमे धिधिमे धुधुमे, ककमे, किकिमे कुकुमे, खखमे खिखिमे खुखुमे। इँ एं एं एं रक्ष रक्ष मां सर्वं ममा-धीनं च सर्वं विघ्नतः।

२– दरिद्रतानाशक सौभाग्यदायक प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और कई साधकों ने इसका लाभ उठाया है, यह प्रयोग भी चालीस दिन का है, और नित्य मात्र ग्यारह बार उच्चारण करना पर्याप्त है, साधक को चाहिए कि वह शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने महालक्ष्मी का चित्र रख कर इस मन्त्र का जप करे, इस प्रकार चालीस दिन तक करने पर शीघ्र ही वह मनोवांछित सफलता प्राप्त करता है।

यदि अनुष्ठान के रूप में नहीं पर नित्य एकबार भी इस मन्त्र का उच्चारण कोई भी करे तो शीघ्र ही वह इसका शुभ फल प्राप्त करने लगता है, और वह अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र जप करते समय सुगन्धित अगरबत्ती एवं शुद्ध घृत का दीपक लगाना शुभ माना गया है।

मन्त्र

चंद्रे चंद्ररूपे चंद्रवर्णे चंद्रलेश्ये चंद्रोत्तमे चंद्रशेखरे यथा शशी शिशिरकिरणैः संतापं हरति, तथैव मम मत्परिवारस्य च दुःखदारिद्रयं संतापं हर हर स्वाहा। यंत्रे यंत्ररूपे मंत्रे मंत्ररूपे तंत्रे तंत्ररूपे सर्वं मम वश्यं कुरु कुरु। कर्षे कर्षवति हर्षे हर्षवति मम शरीरे मम गृहे मम कुटुम्बे अचिन्त्य हर्षं कुरु कुरु चिन्तितं सर्वं सुखं शीघ्रं मह्यं देहि देहि।

३- अटूट धन प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और दीपावली की रात्रि को यदि इस मन्त्र की दस मालाएं फेरे, तो निश्चय ही उसके जीवन में अटूट धन प्राप्ति सम्भव होती है, यथासम्भव स्फटिक माला का प्रयोग किया जा सकता है, पर रुद्राक्ष की माला का प्रयोग वर्जित है, एक माला में १०० से १०८ दानें होने चाहिए, इस प्रकार दीपावली की रात्रि को एक हजार बार मन्त्र उच्चारण करना पूर्ण अनुष्ठान माना गया है।

जप करते समय अखण्ड दीपक प्रज्वलित रहना चाहिए और सामने महालक्ष्मी का चित्र या मूर्ति स्थापित होनी चाहिए, मन्त्र जप करते समय सफेद वस्त्र धारण किए रहें और ये वस्त्र बिना सिले हुए शुद्ध व पवित्र हो।

एक हजार मन्त्र जप के बाद दूसरे दिन प्रातःकाल एक कुमारी कन्या को भोजन कराकर उसे द्रव्य एवं वस्त्र भेंट करें, और उसके बाद ही भोजन करें।

इसके अलावा यदि कोई साधक इस मन्त्र की नित्य एक माला प्रातः काल फेरता है अर्थात नित्य इस मन्त्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करता है तो उसे जीवन में अटूट धन प्राप्ति और व्यापार वृद्धि सुलभ होती है और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यह प्रयोग किसी भी वर्ण का पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं ह्रीं श्रीं रत्नवर्षिणि अङ्क रत्न स्फटिकरत्न हीरक वैदूर्य रत्न लोहिताक्ष रत्न हंस गर्भ पुलाक ज्योतिः सौगन्धिकादि विविधर–त्नानि वर्षय। बहुधनधान्यं मम कोशकोष्ठागारं पूर्णं कुरु कुरु।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्व पूर्ण एवं सिद्धि दायक है।

४–सर्व कार्य सिद्धि प्रयोग

यह मन्त्र भी जैन साहित्य का अनुपम एवं उज्जवल रत्न है और इस मन्त्र से भी सैकड़ों पाठकों ने लाभ उठाया है।

दीपावली की रात्रि को इस मंत्र का यदि एक सौ बार उच्चारण किया जाय तो निश्चय ही उसकी समस्त इच्छाएं पूरी होती है और व्यापार की दृष्टि से वह पूरे वर्ष भर श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करता है। यह मंत्र धर्म अर्थ, काम एवं मोक्ष सभी कुछ देने में समर्थ है।

यह प्रयोग किसी भी रात्रि को किया जा सकता है और एक रात्रि में एक सौ एक बार उच्चारण करने से अनुष्ठान सम्पन्न माना जाता है। पर यदि यह सम्भव न हो तो साधक को चाहिए कि वह नित्य अपनी प्रातः कालीन पूजा में इस मंत्र का समावेश अवश्य कर ले, अर्थात नित्य केवल एक बार उच्चारण किया जाय। इस प्रकार करने से भी वह जीवन में समस्त प्रकार से उन्नति करता है।

मंत्र जप करते समय शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती लगाना उचित माना गया है। साधक स्वयं शुद्ध एवं पूर्ण श्रद्धा के साथ मंत्र जप करे।

मन्त्र   P. (नवरात्र में)

ऐं कामराज क्लीं शुद्धे बुद्धे बुद्धरूपे बुद्धिदे सिद्धे सिद्धिरूपे सिद्धिदे मम सर्वकार्याणि साधय साधय। ॐ अर्हं वशिनि मोहिनि सर्वान् मम वश्यान् कुरु कुरु सर्वान् मोहय मोहय। ॐ ह्रीं श्रीं सुखसुधाहिरण्यसुवर्ण वर्षिणि मम सुखं वर्षय वर्षय,सुधां वर्षय वर्षय, हिरण्य वर्षय वर्षय, सुवर्ण वर्षय वर्षय, आभंकरे प्रभंकरे, चंद्रे चंद्रकांते चंद्रा-वर्ते चंद्रवर्णे चंद्रलेश्ये चंद्रश्रेष्ठे चंद्रशेखरे सूरे सूर-प्रभे सूरकांते सूरलेश्ये सूरश्रेष्ठे सूरशेखरे मम लोको-त्तरं सुखदं चमत्कारं कुरु कुरु। ॐ ह्रीं घृणिः सूर्यः आदित्यः श्रीं मम सर्वाधि व्याधिचिन्तारोगशोकान् नाशय नाशय, मम तुष्टि पुष्टि सुखं च कुरु कुरु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति अन्नपूर्णे धनधान्यं वर्षय वर्षय, सर्वसिद्धिदायिनि सर्वसुखदायिनि श्री सीमंधरस्वामिनं सर्वज्ञं सर्वदर्शिनं जिनमनुस्मर गणधर, सत्यमनुस्मर, निर्ग्रन्थप्रवच नमनुस्मर, आदिनाथजिनमनुस्मर, शान्ति-नाथजिनमनुस्मर, पार्श्वनाथजिनमनुस्मर, वर्द्धमा-नजिनमनुस्मर, शेषसर्वजिनमनुस्मर, अवधिजिनम-नुस्मर, मनःपर्य-यजिनमनुस्मर, केवलिजिनमनुस्मर आमर्शौषधिमनुस्मर, विप्रुडोषधिमनुस्मर, बीज-बुद्धिमनुस्मर, अक्षीणमहानसलब्धिधरमनुस्मर, न-वपूर्वधरमनुस्मर,-यावच्चतुर्दशपूर्वमनुस्मर, वैक्रि-यलब्धिधरमनुस्मर, आहारकलब्धिधरमनुस्मर।

५-महालक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग सर्वश्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण है और जिस साधक ने भी इस मंत्र का प्रयोग किया है उसे अपने जीवन में पूरी सफलता मिली है।

यह मंत्र आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि, अटूट धन प्राप्ति, आकस्मिक धन प्राप्ति एवं पारिवारिक सुख, कुटुम्ब वृद्धि एवं पुत्र पौत्र प्राप्ति में पूर्ण रूप से सहायक है।

यह अनुष्ठान किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ किया जा सकता है, और यह चालीस दिन का प्रयोग है, इसमें नित्य ग्यारह मालाएं मंत्र जप होनी चाहिए, यह प्रयोग रात्रि को भी किया जा सकता है।

मन्त्र जप करते समय सामने महालक्ष्मी का चित्र स्थापित कर दे, उसके आगे कुबेर यन्त्र रक्खे. शुद्ध घृत का एवं तेल का दीपक प्रज्वलित करे, तेल के दीपक में किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है।

साधक पश्चिम दिशा की तरफ मुंह करके बैठे। सफेद आसन का प्रयोग करना शुभ माना गया है।

इस प्रकार चालीस दिन प्रयोग करने पर निश्चय ही महालक्ष्मी उस पर प्रसन्न होती है और उसके घर में अजस्र लक्ष्मी वर्षा होती रहती है, कुछ ही दिनों में वह आश्चर्यजनक रूप से अपनी उन्नति अनुभव कर सकता है।

अनुष्ठान समाप्ति के बाद ग्यारह कुमारी कन्याओं को भोजन करावे उसे वस्त्र एवं द्रव्य दान दे, ऐसा करने पर उसका अनुष्ठान पूर्ण माना जाता है।

यदि अनुष्ठान के रूप में इस मन्त्र का प्रयोग न करे पर यदि नित्य इस मन्त्र की एक माला कोई भी फेरे तो निश्चय ही उसके जीवन में समस्त प्रकार का सुख एवं सौभाग्य प्राप्त होता है, और उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

दीपावली की रात्रि को भी यह मन्त्र प्रयोग किया जा सकता है, इस रात्रि को महा लक्ष्मी के चित्र के सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर इक्कीस मालाएं फेरने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, और उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीदेवी आगच्छ आगच्छ मम-गृहे ममनिवासस्थाने घनधारां वर्षय वर्षय, सर्व मनवांछितं पूरय पूरय, क्षणमीक्षणैः मम सर्वं क्षणं सुखमय कुरु कुरु।

वस्तुतः यह मन्त्र अत्यन्त ही समृद्ध एवं श्रेष्ठ है, मैं प्रत्येक साधक को यह सलाह देता हूँ, कि वह गम्भीरता-पूर्वक इस मन्त्र के महत्व को समझे और इसका प्रयोग करे।

६- अष्ट लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग भी पिछले प्रयोग की तरह ही है, यह भी चालीस दिन का प्रयोग है, और नित्य ग्यारह मालाएं रात्रि को जपने का विधान है।

इसी प्रकार इस मन्त्र का प्रयोग दीपावली की रात्रि को भी किया जा सकता है, यदि साधक दीपावली की रात्रि को इक्कीस मालाएं इस मन्त्र जप की फेरे तो निश्चय ही उसे धन-धान्य, कुटुम्ब-सुख, जमीन-सुख, व्यापार वृद्धि, कीर्ति, सम्मान, शत्रुनाश एवं भाग्योदय सम्भव होता है।

यदि यह सम्भव न हो तो नित्य एक बार इस मन्त्र का उच्चारण करना ही आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्व-पूर्ण माना गया है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं दिव्या-नुभावे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं उज्जवले प्रसीद प्रसीद। ॐ ह्रीं श्रीं उज्जवलरूपे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ज्योतिमयि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ज्योतिरूप-धरे प्रसीद प्रसीद। मम गृहं मम गृहस्य अंगणं नन्दनवनं कुरु कुरु। ॐ अमृतकुम्भे प्रसीद प्रसीद। ॐ अमृतकुम्भरूपे प्रसीद प्रसीद मम वांछितं देहि देहि। ॐ ऋद्धिदे प्रसीद प्रसीद' ॐ समृद्धिदे प्रसीद प्रसीद, ॐ महालक्ष्मी प्रसीद प्रसीद, ॐ श्री लोक-मातः प्रसीद प्रसीद, ॐ श्री लोकजननि प्रसीद प्रसीद ॐ श्रीं शोभा वर्द्धिनि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं अमृतसं-जीवनि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं शान्तलहरि प्रसीद प्रसीद, श्रीं प्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद. ॐ श्रीं शांत-प्रशांतलहरि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ग्लौं श्रीं नमः, ॐ ह्रीं सर्वशत्रूदमनि सर्वशत्रून् निवारय निवारय, विघ्नं छिन्धि छिन्धि, प्रसीद प्रसीद धर-णेन्द्रपद्मावति मम सुखं कुरु कुरु प्रसीद प्रसीद।

जैन साहित्य के अनुसार यह मन्त्र तुरन्त सिद्धिदायक एवं उन्नतिदायक है।

७- सर्व सिद्धिदायक प्रयोग

यह प्रयोग मात्र ग्यारह दिन का है, और नित्य स्फ-टिक माला से ग्यारह मालाएं फेरने का विधान है, प्रयोग करते समय सामने अगरबत्ती व दीपक जलाना आवश्यक माना गया है।

यदि अनुष्ठान न करे और नित्य एक माला प्रातः काल इस मन्त्र की जपे तब भी उसके जीवन में समस्त प्रकार की सिद्धियों की उपलब्धि हो जाती है।

दीपावली की रात्रि को भी इस मन्त्र प्रयोग को अनुकूल माना है और कहा गया है कि यदि कोई साधक दीपावली की रात्रि को इस मन्त्र की इक्यावन मालाएं फेर देता है, वह निश्चय ही अपने जीवन में पूर्णता एवं समस्त प्रकार सिद्धियां प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र

ॐ मंगलकरि प्रसीद प्रसीद.सुखकरि प्रसीद प्रसीद ॐ शान्तिकरि प्रसीद प्रसीद ॐ ऋद्धिसिद्धिकरि प्रसीद प्रसीप सुखं देहि, शांति देहि, ऋद्धि सिद्धि देहि, ॐ किलि किलि एहिएहि आगच्छ आगच्छ सर्वसिद्धिदायिनि मम मनोवांछितं शीघ्रं पूरयपूरय।

८ – लक्ष्मी वश्य प्रयोग

यह मंत्र लक्ष्मी को वश में करने में समर्थ है और कहा जाता है कि कोई भी साधक नित्य पांच मालाएं इस मंत्र की जप लेता है तो साठ दिन में यह सिद्ध हो जाता है और लक्ष्मी उसके वश में हो जाती है। इसके बाद पूरे जीवन में उसे आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यह मंत्र रात्रि को जपा जाता है, सफेद आसन बिछाकर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर उत्तर की तरफ मुंह कर अपने सामने कनकधारा यंत्र स्थापित कर स्फटिक माला से नित्य पांच सौ मंत्र जप करें। इस प्रकार साठ दिन तक यह प्रयोग करने पर अद्भुत सफलता प्राप्त हो जाती है।

मन्त्र

ॐ श्रीधारेप्रसीद प्रसीद। उपहृदयम् ॐ त्रिलोकवासिन्यै केवल लक्ष्म्यै नमः धनधान्यहिरण्य सुवर्णधारां मम निवासे पातय पातय। ॐ श्रीं रत्नसिंहासने प्रसीद प्रसीद। ॐ रत्नकुण्डले प्रसीद प्रसीद, रत्नमुकुटे प्रसीद प्रसीद। रत्नभूषणं प्रसीद प्रसीद। ॐ चारुच्छत्रचामरे प्रसीद प्रसीद, ॐ सहस्रकिरणप्रद्योतकारि सर्व राज वशकरि सर्व प्रजावशकरि सर्व लोकवशकरि सर्व मम वश्यं कुरु कुरु।

वस्तुतः यह प्रयोग सैकड़ों हजारों साधकों ने आजमाया है और प्रत्येक बार उनको सफलता प्राप्त हुई है।

दीपावली की रात्रि को भी इस मंत्र का विशेष महत्व है और कहा जाता है कि यदि दीपावली की रात्रि को जो साधक इस मंत्र की इक्कीस मालाएं फेर लेता है तो महालक्ष्मी निश्चय ही उसके वश में हो जाती है और वह जीवन में आश्चर्यजनक उन्नति करने लग जाता है।

सफेद आसन एवं पहिनने के वस्त्र भी सफेद हो। दीपावली की रात्रि को यह मंत्र प्रयोग करते समय उत्तर की तरफ मुंह हो और स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाय।

९ — सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

एक लाख मंत्र जप करने पर यह सिद्ध होता है। नित्य ग्यारह मालाएं फेरनी चाहिए। यह मंत्र जप प्रातः काल किया जाता है। साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने महालक्ष्मी का चित्र एवं श्री यन्त्र स्थापित करे उसकी पूजा करे और फिर स्फटिक माला से यह मंत्र जप करे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं विश्वरूपिणि, विभूति-विभूतिरूपिणि सृष्टि सृष्टिरूपिणि, धृति धृतिरूपिणि, कीर्ति कीर्तिरूपिणि, सिद्धि सिद्धिरूपिणि, सर्वसुखसाम्राज्यदायिनि मम त्रिलोकसंपदं कुरु कुरु, हिरण्यसुवर्णैः सुखसिद्धिसौभाग्यैः श्रेष्ठैः सर्वोपकरणैः सर्वभोगैः सर्वोपभोगैश्च मम कोषकोष्टागाराणि भर भर पूरय पूरय।

यदि दीपावली की रात्रि को जो साधक इस मंत्र की एक सौ एक मालाएं फेर ले तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही नहीं सकता। एक माला में एक सौ आठ मनके होते हैं।

वस्तुतः यह मंत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यदि साधक चाहे तो इस मंत्र का उठते-बैठते, खाते-पीते भी जप कर सकता है, निरन्तर इस मंत्र के जप से अनुकूल फल प्राप्त होता है।

जैन साहित्य की भारतवर्ष में समृद्ध परम्परा रही है ऊपर जो भी मैंने मंत्र एवं अनुष्ठान प्रयोग दिये हैं वे जैन मुनि के अनुसार हैं और उनके अनुसार उन्होंने स्वयं कई साधकों को इस सम्बन्ध में मार्गदर्शन दिया है और उन्हें सफलता प्राप्त हुई है।



लक्ष्मी से संबंधित कुछ विशिष्ट गोपनीय यंत्र

आर्थिक एवं व्यापारिक उन्नति के लिये जहां एक ओर लक्ष्मी पूजा लक्ष्मी मन्त्र जप एवं लक्ष्मी से सम्बन्धित तांत्रिक उपाय उपयोगी हैं ठीक उसी प्रकार लक्ष्मी से सम्बन्धित यन्त्र भी उतने ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं। प्राचीन ग्रन्थों में इस प्रकार के यन्त्रों का विशेष विवरण मिलता है।

ये यन्त्र दिखने में सीधे-सादे और सरल होते हैं परन्तु यदि सही तरीके से इनका अंकन किया जाय और पूर्ण विधि विधान के साथ पूजा कर इसका उपयोग किया जाय तो निश्चय ही ये यन्त्र अद्भुत सफलता-दायक होते हैं।

रघुवर स्वामी ने पिछले दिनों चर्चा चलने पर इसी प्रकार के यन्त्रों का विस्तार से विवरण एवं वर्णन किया था। इसमें कोई दो राय नहीं कि स्वामी जी यन्त्र के क्षेत्र में अप्रतिम विद्वान् हैं और उन्होंने इन यन्त्रों का प्रभाव स्वयं अनुभव किया है। इन यन्त्रों पर परीक्षण करके इनकी सत्यता को परखा है और अपने सैकड़ों शिष्यों को इन यन्त्रों से लाभ पहुँचाया है।

पाठकों के लाभार्थ घुमक्कड़ स्वामी जी के अनुभव का लाभ हम पाठकों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारतीय साधना ग्रन्थों में यन्त्रों से सम्बन्धित प्रचुर साहित्य उपलब्ध है परन्तु यह अधिकतर साहित्य हस्त-लिखित अवस्था में है अथवा इस प्रकार के यन्त्रों एवं उसकी क्रियापद्धति का ज्ञान बहुत ही कम साधुओं अथवा योगियों को है, जो कि कभी कभी तरंग में आने पर अपने शिष्यों अथवा परिचितों को एक आध चीज बता देते हैं।

स्वामी जी यन्त्र ज्ञान में परम विद्वान् हैं और उन्होंने इस पर कई वर्षों तक शोध कार्य किया है। अधिकतर स्वामी जी घूमते रहते हैं, उनके द्वारा कई नवीन यन्त्रों एवं उनकी क्रिया पद्धति के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ है, जो कि आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत है—

१– लक्ष्मी यन्त्र :

यह यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इस यन्त्र को चांदी या तांबे के पतरे पर बुधवार के दिन खुदवा देना चाहिए अथवा केसर से दीपावली के दिन इसको कागज पर अंकित कर कांच के फ्रेम में मढ़वा लेना चाहिए और फिर दीपावली की रात्रि को इस यंत्र का पूजन करना चाहिए।

इसके बाद इसके सामने बैठकर निम्न मन्त्र का

१२५०० जप करने से यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है और उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै पद्मावती सहिताय ह्रीं श्रीं नमः।

स्वामी जी के अनुसार यह आवश्यक नहीं है कि दीपावली के दिन ही इस यन्त्र को कागज पर अंकित किया जाय, किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से नौ बजे के भीतर भीतर इस यन्त्र को कागज या भोजपत्र पर अंकित कर उसे काच के फ्रेम में मढ़वा दें, और फिर उस रात्रि को उपरोक्त मंत्र का १२५०० जाप करे तो यह यंत्र सिद्ध हो जाता है और उसके जीवन में आर्थिक न्यूनता नहीं रहती।

ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	महा
अ	ह	न	मः	लक्ष्म्यै
ध	र	णे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ह्रीं	श्रीं	न	मः	नमः

मंत्र जप करते समय सामने यह यंत्र रहना चाहिए। मंत्र जप से पूर्व यंत्र की सामान्य पूजा कर लेनी चाहिए तथा सामने तेल का दीपक लगा लेना चाहिए। साधक को उत्तर की तरफ मुंह कर सफेद सूती या ऊनी आसन पर बैठकर मंत्र जाप करना चाहिए। किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

पर यह आवश्यक है कि यह पूरा मंत्र-जप एक ही रात्रि में समाप्त हो जाना चाहिए।

२– व्यापार यन्त्र :

स्वामी जी के अनुसार यह व्यापार यंत्र महत्वपूर्ण है कभी भी रविवार या गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो तब इस यंत्र को चांदी या तांबे के पतरे पर खुदवा ले। यदि यह सम्भव न हो तो कागज पर या भोजपत्र पर भी इस यंत्र को केसर से इस अवसर पर अंकित किया जा सकता है। फिर उसी दिन इस यंत्र की पूजा करे और उसी दिन इसके सामने बैठकर निम्न मंत्र की १२५ मालाएं फेरे, इसमें स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै व्यापार वृद्धि कुरु कुरु क्लीं ह्रीं ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

पूजन के बाद इस यंत्र को घर के संदूक में, तिजोरी में या दुकान पर रखा जा सकता है। नित्य इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावें तथा दीपावली की रात्रि को इस यंत्र का पूजन करें।

यदि इस प्रकार का यंत्र दुकान पर रख दिया जाय और नित्य अगरबत्ती लगाई जाय तो निश्चय ही उसके जीवन में व्यापार उन्नति, आर्थिक लाभ, एवं पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

३–दरिद्रता विनाशक यन्त्र :

यह यंत्र लक्ष्मी प्रदायक एवं चमत्कारी हैं। जीवन में यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो या आर्थिक उन्नति

में बराबर बाधाएं आ रही हों या दरिद्रता समाप्त नहीं हो रही हो या कर्जा बढ़ रहा हो तो इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए।

यन्त्र

क्लीं स्वाहा ॐ स्वाहा ह्रीं

रक्षा कुरु ॐ रक्षा कुरु

पा	तु	श्रीं	स्वाहा
श्रीं	पा	तु	श्रीं
पा	तु	श्रीं	पा
तु	श्रीं	पा	तु

रक्षा ॐ क्लीं

रक्षा कुरु ॐ रक्षा कुरु

इस यंत्र को किसी भी रविवार को प्रातः ७ बजे से ११ बजे के बीच किसी ताम्र पत्र पर अंकित करावे या कागज अथवा भोजपत्र पर केसर से इस यंत्र को बना दे; और कांच के फ्रेम में मढ़वा दे।

फिर अगले रविवार को इस यंत्र की पूजा करे और इसके सामने निम्न मंत्र की मात्र ग्यारह मालाएं फेरे। ऐसा करने पर यह यंत्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं पातु श्रीं रक्षा कुरु कुरु श्रीं नमः।

इसके बाद इस यंत्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दे अथवा दुकान पर रख दे। नित्य इसके सामने सम्भव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगा दे।

ऐसा करने पर शीघ्र ही वह अनुकूल फल प्राप्त करने लगता है और उसके जीवन में सभी दृष्टियों से निरन्तर उन्नति होने लगती है।

४– दीपावली यन्त्र

यह यंत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छोटे से तांबे के या चांदी के टुकड़े पर दीपावली के दिन इस यंत्र को व्यक्ति स्वयं कुंकुम या केशर से अंकित करे, और उसे घड़े में रख दे। यह घड़ा घर के भण्डार में रखने से उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहती है।

१	०	०	०
०	०	०	०
०	०	०	०
१	०	०	०

घड़े में यंत्र रखकर उस घड़े में पानी भर दे वह पानी रोगी को पिलाने से रोग समाप्त हो जाता है। घड़े में थोड़ा पानी रखे और नित्य बदलते रहे, परन्तु यंत्र को भूलकर भी घड़े से बाहर न निकाले यदि घड़े में यह यंत्र रखकर उसमें धान्य भर दे तो उसके घर में धन-धान्य की कभी न्यूनता नहीं आती।

५–व्यापार वर्द्धक यन्त्र :

यह यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ माना गया है कहा जाता है कि यह अकेला यन्त्र अन्य सभी यन्त्रों से श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि का है। विशेषकर व्यापार करने वाले व्यक्तियों के लिए यह यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

किसी भी शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को तांबे या चांदी के पत्र पर इस यन्त्र को खुदवा ले और उसी रात्रि से इस

मन्त्र का जप प्रारम्भ करें। जप में सफेद पुष्पों का प्रयोग करे, सफेद माला अर्थात स्फटिक माला का ही उपयोग करे और सफेद आसन पर बैठे। साधक का मुंह उत्तर की तरफ होना चाहिए और सामने तेल का दीपक लगा ले। इसमें तेल किसी प्रकार का हो सकता है।

व्यापार वर्धक यन्त्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३९	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
है	भुर	भुर	भुर	नमः

साधक स्वच्छ व सफेद वस्त्र धारण करे, यह प्रयोग इक्कीस दिन का है तथा नित्य निम्नलिखित मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरनी आवश्यक है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

अनुष्ठान के समय स्त्री सम्पर्क वर्जित है। एक समय भोजन करे और जब अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तब इस यंत्र को अपनी दुकान पर ऐसे स्थान पर लगा दे जहां से सभी लोग उसे देख सकें। ऐसा करने पर निश्चय ही उसके जीवन में व्यापार वृद्धि होती है। यदि व्यापार प्रारम्भ नहीं हुआ हो तो प्रारम्भ हो जाता है। व्यापार में असफलता मिल रही है तो सफलता मिलने लग जाती है और आने वाले समय में व्यापार निरन्तर उन्नति की तरफ अग्रसर होता रहता है।

६– अकस्मात धन प्राप्ति यंत्र :

यह यन्त्र शास्त्रों के अनुसार महत्वपूर्ण माना गया है किसी भी मंगलवार से यह कार्य प्रारम्भ होता है अर्थात मंगलवार को प्रातः सूर्योदय के समय कागज पर कुंकुम से इस यंत्र को लिखे तथा इस यंत्र को अपनी जेब में रखे इसी प्रकार उसी दिन शाम को भी सूर्यास्त के समय कागज पर कुंकुम से इस यंत्र को लिखे। फिर दोनों कागजों को किसी संदूक में रख दे। इस प्रकार अगले सात मंगलवार तक इसी प्रकार करे। ऐसा करने पर चौदह कागज तैयार हो जाते हैं। सातवें मंगलवार को चौदहवें कागज पर यंत्र अंकित कर इन चौदहों कागजों की पूजा करे और उसी दिन चांदी के ताबीज में यह सभी कागज भरकर उस ताबीज को अपने दाहिने हाथ में बांध ले।

१	७	६	२	८	९	९
५	१	७	६	२	७	४
७	६	१	७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
१	२	४	५	७	९	१

ऐसा करने पर शीघ्र ही उसे अकस्मात धन प्राप्ति होती देखी गई है। मंगलवार को जब भी यंत्र अंकित करे तब किसी से बोले नहीं, मौन होकर इस कार्य को करे।

७– एकाक्षी नारियल प्रयोग

एकाक्षी नारियल लक्ष्मी का दूसरा स्वरूप माना जाता है। एकाक्षी नारियल पर भी लक्ष्मी से सम्बन्धित कई विशिष्ट प्रयोग हैं। यह प्रयोग भी अत्यन्त महत्वपूर्ण

है एवं गोपनीय हैं और इसका प्रयोग कर कई लोगों ने लाभ उठाया है।

सबसे पहले एकाक्षी नारियल प्राप्त कर ले इस बात का ध्यान रखे कि बाजार में और सामान्य लोगों या बेचने वालों के पास नकली एकाक्षी नारियल होते हैं। अतः शुद्ध एवं प्रामाणिक एकाक्षी नारियल प्राप्त करे।

उस पर सिन्दूर लगाकर चांदी का वर्क पूरे नारियल पर लगा ले, जिससे कि वह सफेद सा दिखाई देने लग जायगा। इसके बाद उस पर निम्नलिखित मंत्र को केशर से लिखे।

मन्त्र

ॐ श्रीं क्लीं श्रीं देव्यै नमः कुरु कुरु ऋद्धि वृद्धि स्वाहा।

दीपावली के दिन रात्रि को लकड़ी के पट्टे पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर इस नारियल को रख दे और सामने तेल का दीपक लगा दे, साधक का मुंह पश्चिम या उत्तर की तरफ होना चाहिए, उसके वस्त्र सफेद हों, सफेद आसन पर बैठे तथा स्फटिक माला का प्रयोग करे, इस प्रकार दीपावली की रात्रि को १२५०० जप करे।

दूसरे दिन प्रातः अन्य नारियल का गोला लेकर इसी मन्त्र से १०८ आहुतियां देकर हवन करे, ऐसा करने पर वह एकाक्षी नारियल सिद्ध हो जाता है, सिद्ध होने पर इस नारियल को अपने भण्डार गृह की पेटी में रखे, ऐसा करने पर भविष्य में उसे निरन्तर धन प्राप्ति होती रहेगी तथा नौकरी में प्रमोशन, आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि निरन्तर होती रहेगी, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई विपत्ति नहीं आयेगी।

८- गड़ा हुआ धन प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यदि किसी व्यक्ति को यह महसूस हो रहा हो कि उसके घर में या खेत में अथवा किसी अन्य स्थान पर पूर्वजों का गड़ा हुआ धन है और वह प्राप्त नहीं हो रहा है, तो उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

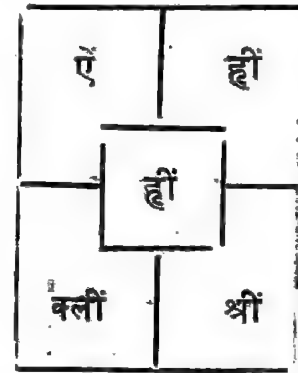
दीपावली की रात्रि को साधक पूर्व दिशा की तरफ मुंह कर बैठ जाय, इससे पहले वह निम्नलिखित यन्त्र को किसी ताम्बे या चांदी के पतरे पर खुदवा ले, यदि यह सम्भव न हो तो दीपावली की रात्रि को इस यन्त्र को कागज पर केशर से अंकित कर ले और काच के फ्रेम में मंढ़वा ले।

इसके बाद दीपावली की रात्रि को इस यन्त्र को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का १२५०० जप करे, पद्मासन लगाकर करे और इसमें मूंगे की माला का ही प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकाक्षरे भगवते विश्वरूपाय सर्वकामप्रदाय भू लुप्त निधि प्राप्त्यर्थं नमः।

मन्त्र जप करते समय साधक सफेद वस्त्र धारण करे और सामने तेल का दीपक लगावे, इसमें किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लाया जा सकता है, यह तेल का दीपक सारी रात लगता रहे।



दूसरे दिन प्रातःकाल एक पाव दाख (किसमिस); एक पाव लोबान धूप, से उपरोक्त मन्त्र की १०८आहुतियां दे, ऐसा करने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है, फिर इस

यन्त्र को रात्रि को अपने सिरहाने देकर सो जाय।

ऐसा करने पर अगले २१ दिन के भीतर-भीतर व्यक्ति को स्वप्न में वह स्थान दिखाई दे देता है, जहां पर कि वह धन गड़ा हुआ है,साथ ही उस धन को किसप्रकार से निकालना है, इसका तरीका भी स्वप्न में स्पष्ट हो जाता है।

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, साधक इसका परीक्षण एवं प्रयोग कर लाभ उठा सकता है।

९- बत्तीसा : लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

यह यन्त्र महत्वपूर्ण है और कई लोगों ने इस यन्त्र का लाभ उठाया है, साधक को चाहिए कि वह किसी भी शुक्रवार को किसी ताम्बे सोने या चांदी के पतरे पर इस यन्त्र को खुदवा ले।

इसके बाद रविवार को इस यन्त्र को पूजा करे, इस पर सफेद पुष्प चढ़ावे तथा निम्नलिखित मन्त्र का २१५०० जप करे, यह जप दिन को या रात्रि को किया जा सकता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

ऐसा करने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है, सिद्ध

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

होने पर इस यन्त्र को अपने पूजा स्थान में रख दे, अथवा अपने घर की तिजोरी या दुकान पर रख सकते हैं, दुकान में भी जिस सन्दूक में द्रव्य रखते हैं, उसी सन्दूक में इस यन्त्र को रखे।

ऐसा करने पर व्यक्ति के जीवन में निरन्तर उन्नति होती रहती है तथा व्यापार की दृष्टि से उसे किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

१०- चौंतीसा : व्यापार वर्द्धक यन्त्र

यह यन्त्र व्यापार वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। यदि व्यापार में कमजोरी आ रही हो या प्रयत्न करने पर भी व्यापार में सफलता नहीं मिल रही हो, तो यह यन्त्र विशेष महत्वपूर्ण है।

इस यन्त्र की विधि भी ऊपर प्रयोग नं० नौ की तरह ही है उसी प्रकार से इस यन्त्र का अंकन होना चाहिए। उसी मन्त्र से पूजा एवं अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, तथा इसका प्रयोग भी पूजा स्थान में रखकर या दुकान में रखकर किया जा सकता है। यदि व्यापारी चाहे तो

१६	९	४	७
६	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

इस यन्त्र को अपने दुकान के गल्ले में रख सकता है। जिससे कि उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव न रहे।

वस्तुतः ये दोनों ही यन्त्र महत्वपूर्ण हैं और इस प्रकार के यन्त्र की पूजा दीपावली की रात्रि कों भी की जा सकती है।

११– व्यापार सिद्धिदायक यन्त्र :

यह यन्त्र व्यापार में सिद्धि देने वाला है। किसी भी रविवार को चांदी या तांबे के पतरे पर इस यन्त्र को उत्कीर्ण कर लेना चाहिए।यदि यह सम्भव न हो तो सफेद कागज पर या भोज पत्र पर इस यन्त्र को केशर से अंकित

२४	३२	२	७
६	३	२९	२७
३१	२५	८	१
४	५	२६	३०

कर लेना चाहिए और ऐसे कागज को कांच के फ्रेम में मढ़वा लेना चाहिए।

फिर इस यन्त्र की पूजा करनी चाहिए, किसी भी बुधवार को इस यन्त्र को मिट्टी के छोटे से पात्र या कुलड़ी में रखकर उसमें सुपारी, रुपया, एवं हल्दी डालकर दुकान में अपनी गद्दी के नीचे गाड़ देना चाहिए अर्थात व्यापार करते समय जहां पर बैठा जाता है उसके नीचे एक हाथ भर गड्ढा खोदकर इस यन्त्र को गाड़ देना चाहिए और पुनः गद्दी बिछा देनी चाहिए।

ऐसा करने से व्यापार में निरन्तर उन्नति होती रहती है और आर्थिक प्रगति में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आती।

१२– व्यापार बन्ध मन्त्र .

यदि कोई व्यक्ति या व्यापारी परेशान कर रहा हो और समस्याएं पैदा कर रहा हो तो इस यन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है।

शनिवार को कागज पर इस यन्त्र को बना ले, और फिर उस यन्त्र की पूजा कर ले। कागज पर यह यन्त्र काली स्याही से अंकित करना चाहिए

२	८	७	१
८	१	४	७
६	६	६	३
४	५	३	८

फिर इस यन्त्र को सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र की एक माला उल्टी फेरनी चाहिए।

मन्त्र

ॐ क्लीं अमुकं व्यापार बंधय बंधय हुं फट्।

यहां पर अमुक के स्थान पर उस शत्रु का नाम उच्चारित करना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

फिर उसी रात को दुकान के आगे एक हाथ भर गड्ढा खोदकर उसमें इस यन्त्र को गाड़ देना चाहिए, ऐसा करने पर उसका व्यापार बंध जाता है, और धीरे धीरे व्यापार चौपट हो जाता है।

१३– दुकान बंधक यन्त्र

यह यन्त्र भी महत्वपूर्ण है और इसका प्रयोग भी ऊपर प्रयोग नम्बर १२ की तरह ही है, इसका मन्त्र भी ऊपर प्रयोग की तरह ही है। जब यन्त्र तैयार हो जाय तो शत्रु की दुकान के सामने गाड़ देना चाहिए।

ऐसा करने पर उसका व्यापार समाप्त हो जाता है और दुकान कुछ ही दिनों में बन्द हो जाती है।

इन प्रयोगों को ईर्ष्या या कुटिलता के वशीभूत होकर नहीं करना चाहिए।

दुकान बंधक यंत्र

२५	२२	१२	५६	१५	८७	८७
३७	४५	५६	६६	३७	८१	५६
८१	१७	५७	४३	५६	२५	२५
७७	८५	८७	८७	३४	३७	२५
५६	४७	२५	२५	५६	२५	३७
२५	२५	४२	१७	६७	२५	४४

१४– सर्व नष्ट यंत्र

इस यन्त्र का प्रयोग भी ऊपर लिखे तरीके के अनुसार ही है। जब यह यन्त्र सिद्ध हो जाय, तब इस यन्त्र को उसकी दुकान के आगे नहीं गाड़ कर उसके घर के आगे गाड़ देना चाहिए।

२१	१८	१८	२५
२६	१७	३१	२०
२९	३२	२४	१६
१६	२७	२१	२

ऐसा करने पर धीरे धीरे उस व्यक्ति का व्यापार एवं आर्थिक उन्नति समाप्त होने लग जाती है और वह सभी दृष्टियों से बरबाद होकर परेशान हो जाता है।

१५– सर्वसुख निधि यंत्र

यह यन्त्र महत्वपूर्ण है। दीपावली की रात्रि को इस यन्त्र को कागज पर केशर से १०८ बार बनावे। इस प्रकार पूरी रात में १०८ कागज इन यन्त्रों के तैयार कर

थृ	थृ	व	व
ब	ब्र	भ्र	भ्र
द	द्द	घ	ध

ले फिर जब ये १०८ कागज तैयार हो जाय, तब उसके सामने निम्न मन्त्र कीं १२ मालाएं फेरे—

मन्त्र

ॐ ह्रीं सर्व सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य दाश्यं महा–लक्ष्म्यै नमः।

ऐसा करने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है फिर इन कागजों को एक चांदी के ताबीज में भर लेने चाहिए।

यह ताबीज साधक या तो स्वयं अपनी दाहिनी भुजा पर बांधे यदि ऐसा सम्भव न हो तो वह इस ताबीज को अपने पूजा स्थान में रख दे और नित्य उसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे।

ऐसा करने पर उसके जीवन में समस्त प्रकार का सुख एवं सौभाग्य प्राप्त होता है और जीवन में सभी दृष्टियों से वह प्रगति करने लग जाता है।

वस्तुत: ये यन्त्र दिखने में सामान्य एवं लघु प्रतीत होते हैं, साथ ही साथ इनकी विधि भी सामान्य एवं सरल प्रतीत होती है परन्तु इनका प्रभाव अत्यन्त महत्व-पूर्ण और अचूक होता है।

पाठकों के उपयोग के लिए ये महत्वपूर्ण यन्त्र उनके सामने प्रस्तुत हैं। वे इनमें से किसी भी यन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं। यह भी सम्भव है कि दीपावली की रात्रि को पिता किसी एक यन्त्र को सिद्ध करे, पत्नी किसी दूसरे यन्त्र को सिद्ध करे तथा पुत्र या पुत्रवधू या पुत्री किसी तीसरे यन्त्र को सिद्ध कर सकती हैं। इस प्रकार एक ही रात्रि में एक से अधिक यन्त्र भी सिद्ध किए जा सकते हैं।



काल गणना

भारतीय महर्षियों ने काल गणना कर कुछ समय ऐसे निर्धारित किए हैं, जो प्रत्येक कार्य के लिए उपयुक्त है, वे समय भारतीय स्टेण्डर्ड समय के अनुसार है, इन समयों में यात्रा, कार्य, मन्त्र जप, अनुष्ठान आदि का प्रारम्भ किया जा सकता है, इसके लिए मुहूर्त्त आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

इसमें महेन्द्र काल श्रेष्ठतम तथा अमृत काल श्रेष्ठ माना गया है, राहू काल सर्वथा त्याज्य है, शास्त्रों के अनुसार चाहे कितना हीं श्रेष्ठ मुहूर्त्त हो, परन्तु यदि उस समय राहूकाल हो तो वह अत्यन्त ही अशुभ और दुर्भाग्यपूर्ण होता है।

नीचे मास के महेन्द्र काल, अमृत काल तथा राहू काल स्पष्ट किए जा रहे हैं—

अक्टूबर–नवम्बर

वार	काल	समय
रविवार	अमृत	प्रातः ७-३६ से प्रातः १०-०० तक
	अमृत	मध्यांतर १२-२४ से २-४८ तक
सोमवार	अमृत	प्रातः ६-०० से ६-१२ तक
	महेन्द्र	६-१२ से १०-४८ तक
	अमृत	दोपहर १-१२ से ३-३६ तक
	महेन्द्र	३-३६ से ६-०० तक
मंगलवार	अमृत	प्रातः ६-०० से ७-३६ तक
	अमृत	१०-०० से १०-४८ तक
	महेन्द्र	१२-२४ से २-४८ तक
बुधवार	महेन्द्र	प्रातः ६-४८ से ८-२४ तक
	अमृत	८-२४ से ११-३६ तक
गुरुवार	अमृत	प्रातः ६-०० से ६-४८ तक
	अमृत	१०-४८ से १२-२४ तक
	अमृत	मध्यांतर ३-०० से ५-१२ तक
	महेन्द्र	५-१२ से ६०० तक
शुक्रवार	अमृत	प्रातः ६-१२ से प्रातः १०-४८ तक
	अमृत	मध्यान्तर २-०० म० ४-२४ तक
	महेन्द्र	मध्यांतर ४-२४ से म० ६-०० तक
शनिवार	अमृत	प्रातः १०-४८ से म० २-०० तक
	महेन्द्र	सायं ५-१२ से सायं ६-०० तक

ऊपर महत्वपूर्ण काल हैं, राहूकाल अशुभ बाधाकारक एवं सर्वथा त्याज्य हैं, इन दो महीनों में राहू काल इस प्रकार है–

रविवार	मध्याह्न	४–३०	से ६–००	तक
सोमवार	×	+		×
मंगलवार	मध्याह्न्	३–००	से ४–३०	तक
बुधवार	मध्याह्न्	१२–३०	से १–३०	तक
गुरुवार	मध्याह्न्	१–३०	से ३–००	तक
शुक्रवार	मध्याह्न्	१०–३०	से १२–००	तक
शनिवार	प्रातः	९–००	से १०–३०	तक

अक्टूबर के व्रत, पर्व व त्यौहार

धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से व्रत, पर्व और त्यौहार भारतीय जनता का आधार रहा है परन्तु पिछले कुछ वर्षों में इन्हें मनाने के दिनों को लेकर काफी मतभेद देखे गये हैं। एक वर्ष किसी दिन एकादशी व्रत बताता है तो दूसरा वर्ष दूसरे दिन एकादशी व्रत को मान्यता देता है।

पाठकों के विचारों को मान्यता देते हुए यह स्तम्भ नियमित किया जा रहा है, इससे भारतीयों में फैलने वाला मतभेद दूर होगा और वे प्रामाणिक रूप से व्रत, पर्व आदि मना सकेंगे।

१–	अक्टूबर	प्रदोष व्रत
३–	,,	पूर्णिमा व्रत
६–	,,	चतुर्थी व्रत
१३–	,,	रमा एकादशी व्रत
१४–	,,	प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धनवन्तरी जयन्ती
१५–	,,	रूप चतुर्दशी
१६–	,,	महालक्ष्मी पूजा, दीपावली
१७–	,,	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
१८–	,,	यम द्वितीया, भाई दूज
२२–	,,	सौभाग्य पंचमी
२३–	,,	सूर्य षष्ठी
२५–	,,	गोपाष्टमी
२६–	,,	अक्षय आवला व्रत
२८–	,,	देव प्रबोधिनी एकादशी,तुलसी विवाह, भीष्म पंचक व्रत
३०–	,,	प्रदोष व्रत

जब लक्ष्मी से संबंधित साधना सफल हुई

लक्ष्मी की उपासना एवं साधना प्राचीनकाल से चली आ रही है, देवी-देवताओं तक ने भगवती लक्ष्मी की उपासना की है, इन्द्र ने लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए विशेष अनुष्ठान सम्पन्न कर अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त किया था, भगवान शंकर ने श्मशान वासी होते हुए भी लक्ष्मी की साधना एवं पूजा अर्चना की है, वशिष्ठ ने स्वयं यह स्वीकार किया है, कि लक्ष्मी की उपासना जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपासना है।

प्राचीनकाल में जितने भी आश्रम आदि थे, वे सभी सम्पन्न और धन-धान्य से पूरित थे, यहां तक कि दशरथ ने भी युद्ध में भाग लेने से पूर्व वशिष्ठ से धन प्राप्ति की याचना की थी, इससे यह स्पष्ट होता है, कि उस समय वशिष्ठ का आश्रम दशरथ के राज्य से भी ज्यादा सम्पन्न था, वशिष्ठ के अलावा अन्य सभी ऋषियों ने और साधकों ने लक्ष्मी की उपासना को विशेष महत्व दिया है।

भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में किसी न किसी प्रकार से लक्ष्मी की उपासना या मन्त्र जाप करने का विधान या परम्परा है, आधुनिक काल में भी भारत में उच्च कोटि के साधकों एवं व्यक्तियों ने लक्ष्मी की उपासना सम्पन्न की है और उसमें सफलता पाई है।

पत्रिका के कई सदस्यों एवं पाठकों ने अपन अनुभव या उच्च कोटि के व्यक्तियों से किये गये साक्षात्कार को भेजा है,जिनमें से कुछ संस्मरण सुनकर आगे की पंक्तियों में दिये जा रहे हैं।

जब लक्ष्मी साक्षात् प्रकट हुई

मैं मूलतः शिव भक्त हूं और शिव ही मेरा इष्ट रहा है, प्रारम्भ से ही मैं भगवान शंकर के चरणों में अपने आपको समर्पित कर चुका था, परन्तु शंकर की आराधना भी तब तक पूरी नहीं मानी जा सकती,जब तक कि उसमें शक्ति का समन्वय न हो।

क्षणों के लिए बैठ गई, उसके आंखों की करुणा और चेहरे की दिव्यता आज तक भी नहीं भुला पाया हूं, कुछ ही क्षणों बाद वह नारी मूर्ति अन्तर्ध्यान हो गई।

मैं अनुष्ठान सम्पन्न कर खड़ा हुआ, इस बात को आज चालीस वर्ष बीत चुके हैं, कई बार भगवती लक्ष्मी के दर्शन हुए हैं, और तुम स्वयं देख रहे हो कि मेरे आश्रम में नित्य पांच-सात हजार साधक भोजन करते हैं, परन्तु आज तक न तो मुझे किसी से याचना करनी पड़ी है और न द्रव्य की न्यूनता ही रही है, यह भगवती लक्ष्मी की ही कृपा है, कि मेरे जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं रहा, मैं तब से आज तक दोनों हाथों से धन लुटाता रहा हूं, और जितना भी देता हूं, उससे दस गुना अनायास पुनः प्राप्त हो जाता है।

प्रस्तोता – स्वामी नर्बदेश्वर, कनखल

भगवती स्वर्णावती को हम सब ने आंखों से देखा है ?

उस दिन हम सब स्वामी विशुद्धानन्द जी के समीप बैठे हुए थे चर्चा योग, वैराग्य पर होती हुई लक्ष्मी पर आ गई, शाम का समय था, स्वामी जी प्रसन्न मुद्रा में तकिये से पीठ लगाये बैठे हुए थे, और हमारे विविध प्रश्नों का सटीक, प्रामाणिक उत्तर दे रहे थे।

मैंने बातचीत के बीच में पूछ लिया कि क्या लक्ष्मी से सम्बन्धित अनुष्ठान या प्रयोग करने पर लक्ष्मी स्वयं प्रकट होती है, और क्या वह धन सम्पदा देने में समर्थ है।

स्वामी जी ने उत्तर दिया कि कोई भी अनुष्ठान या साधना व्यर्थ नहीं हैं, यह अलग बात है कि हम उस साधना से परिचित नहीं है, या उसकी क्रिया पद्धति का भली प्रकार से ज्ञान नहीं है, जहां तक तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है,यदि लक्ष्मी के स्वरूप स्वर्णावती देवी की साधना की जाय तो वे शीघ्र प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष दर्शन देती है,और उस व्यक्ति की भौतिक इच्छा सम्पन्न होती है, सम्भवतः उस समय स्वामी जी विशेष प्रसन्न मूड में थे, बोले– क्या तुम भगवती स्वर्णावती के दर्शन करना चाहते हो ?

मेरे हां कहने पर वे सीधे पालथी मार कर बैठ गये और मन ही मन मन्त्र जाप करना प्रारम्भ कर दिया। उनके होठ होठ थोड़े बहुत हिल रहे थे, आंखे बंद थी; और चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज तथा चमक थी।

कुछ ही क्षणों बाद हम सब ने कमरे में एक विशेष प्रकाश देखा, जो कि अत्यन्त शीतल और सुखदायक था, कुछ ही क्षणों में उस प्रकाश के मध्य में एक कमनीय नारी मूर्ति प्रकट हुई उसका शरीर अत्यन्त लचीला, सौष्ठव और कमनीय था, हाथों में कमल पुष्प विकसित थे, चेहरे पर एक विशेष प्रभा मण्डल था, दाहिने हाथ की हथेली खुली हुई थी, और उसमें से निरन्तर सोने के सिक्के निकल कर जमीन पर गिर रहे थे।

दूसरे ही क्षण वह रूप अन्तर्ध्यान हो गया और कमरे का प्रकाश पूर्ववत हो गया। परन्तु अभी तक भी कमरे में एक मादक सुगन्ध प्रवाहित थी। ऐसा अनुभव हो रहा था कि इस कमरे में अभी अभी कोई दिव्य मूर्ति प्रकट हुई थी और उसके शरीर से निकलने वाली सुगन्ध पूरे कमरे में व्याप्त थी।

स्वामी जी ने आंखे खोल दी और बोले–देखा, यह भगवती स्वर्णावती थी।

हमने एक क्षण पहले जो कुछ देखा था वह अपने आप में अभूतपूर्व था। उसके हाथ से निकले हुए सोने के सिक्के अभी तक जमीन पर पड़े हुए थे। मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि आपकी कृपा से हम आज महादेवी स्वर्णावती के दर्शन कर सके और हमारा सौभाग्य है कि हमें आपके चरणों में बैठने का अवसर मिला है। किसी लालच के वश में यह नहीं कह रहा हूं, पर इस घटना की

साक्षी के लिए यदि आप आज्ञा दें तो मैं इसमें से एक सिक्का अपने पास रख लूं ।

स्वामी जी ने हंसते हुए स्वीकृति दे दी और एक सिक्का उठाकर मुझे दे दिया ।

मैंने स्वर्णावती साधना की जिज्ञासा की तो उन्होंने बताया कि यह कठिन साधना है और इसमें साधक के संयम का विशेष महत्व है । साधनाकाल में वह न तो किसी प्रकार का व्यसन करे, न स्त्री संसर्ग हो तथा न किसी अन्य से कोई बात ही करे । सर्वथा मौन रहकर ही यह साधना सम्पन्न की जाती है । यह साधना ३५ दिनों की है । इन दिनों साधक अपने घर पर ही रहे । किसी प्रकार का अन्य कार्य या व्यापार या उद्यम न करे । न किसी से बातचीत करे, एक समय दूध का आहार ले सकता है, इसके अलाधा वह किसी प्रकार का कोई भोजन न करे ।

रात्रि को साधक किसी वट वृक्ष (बड़ले के पेड़) के नीचे बैठकर स्वर्णावती मन्त्र की २१ मालाएं फेरे । मंत्र जप करते समय साधक किसी प्रकार का कोई वस्त्र न पहने, सर्वथा नग्न होकर ही यह साधना की जाती है ।

शाम को साधक कुए का जल किसी पात्र में लाकर रख दे और रात्रि को लगभग ग्यारह बजे उस जल से स्नान कर सर्वथा नग्न हो वट वृक्ष के नीचे बैठकर मंत्र जप करे ।

जब मंत्र पूरा हो जाय तब घर आकर सो जाय, पर पूरे साधना काल में सर्वथा मौन रहे । मंत्र जप में किसी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है । दीपक या आसन की आवश्यकता नहीं है, पर नित्य अपने साथ सवा किलो मिठाई अवश्य लेकर जावे और मंत्र जप के बाद वह मिठाई वही छोड़कर घर लौट आवे, इस प्रकार नित्य करे ।

"ॐ ह्रीं आगच्छ स्वर्णावती स्वाहा" मंत्र का जप करे । ३५ वें दिन स्वर्णावती देवी स्वयं मोहक रूप में प्रकट होती है और प्रेयसी रूप में पास आकर बैठ जाती है । इसके बाद आगे के जीवन में वह प्रेयसी रूप में कुछ समय के लिए अवश्य आती है और मन चाहा स्वर्ण देकर जाती है ।

प्रेयसी रूप होते हुये भी साधक जीवन में कभी भी भोग की इच्छा न करे, साधनाकाल में भी डरे नहीं, *कमजोर या अस्थिर चित्त वाले व्यक्ति को भूल करके भी* यह साधना नहीं करनी चाहिये, किसी योग्य गुरु के निर्देशन में ही इस प्रकार की साधना सम्पन्न करना उचित रहता है ।

स्वर्णावती से प्राप्त द्रव्य को साधक जिस प्रकार से भी चाहे व्यय कर सकता है, उस पर कोई बन्धन नहीं होता है, उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता और वह जितना भी द्रव्य चाहता है, उतना द्रव्य स्वर्णावती से सहज ही प्राप्त हो जाता है ।

विधि बताने के बाद स्वामी जी पुनः हंस दिये बोले– यह विधि जितनी सरल दिखाई दे रही है, उतनी सरल नहीं है, फिर भी साधक में आस्था और दृढ़ चित्तता हो तो वह सफलता प्राप्त कर लेता है ।

मेरे जीवन का यह श्रेष्ठ अनुभव था, स्वामी जी का दिया हुआ वह छोटा सा सिक्का आज भी मेरे पास याद-गार के रूप में पूजा में हैं ।

प्रस्तोता – चारू मित्रा, वाराणसी

कमला साधना से अक्षय लक्ष्मी सिद्ध करना सुगम है :

पण्डित गोपी नाथ कविराज अपने आप में एक महान विभूति थे, और उन्होंने तंत्र के क्षेत्र में जो कुछ कार्य है वह सर्वथा स्मरणीय रहेगा ।

मेरे ऊपर उनकी विशेष कृपा थी, और मैं यदा कदा

उनकी सेवा में पहुँच जाता। उन्होंने अपने विचारों को और ज्ञान को पुस्तकों के द्वारा जन मानस को भेंट किया है, परन्तु बातचीत के दौरान भी ऐसे सर्वथा नवीन तथ्य उनके द्वारा उद्घाटित हुए हैं जो कि किसी पुस्तक में नहीं आ पाये हैं परन्तु उनका प्रभाव और महत्व किसी भी दृष्टि से न्यून नहीं है।

एक बार बातचीत के दौरान लक्ष्मी साधना से संबंधित चर्चा चल पड़ी तब मैंने उनसे यह जानना चाहा कि क्या कोई ऐसा सुगम साधन या साधना है जिसके माध्यम से अक्षय लक्ष्मी सिद्ध की जा सके।

उन्होंने बताया कि कमला साधना से सम्भव है, परंतु आजकल कर्मनिष्ठ साधक कम रह गए हैं। यदि प्रयत्नपूर्वक प्रसन्नता के साथ साधना सम्पन्न की जाय तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

कमला साधना के बारे में जिज्ञासा प्रकट करने पर उस दिन विस्तार से इस बारे में बताया था और मुझे आज्ञा भी दी थी कि मैं दीपावली के अवसर पर इस साधना को सम्पन्न करूं, परन्तु यह मेरा दुर्भाग्य था कि मैं उस समय उस साधना को सम्पन्न न कर सका।

उन्होंने बताया था कि महालक्ष्मी कमला दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या है और उसका प्रभाव अक्षुण्ण है,जो कमलदल पर बैठी हुई हैं उनके हाथों में कमल लिए हुए है तथा दोनों ओर दो दो हाथी अमृत कुम्भों से उन पर वर्षा कर रहे हैं। ऐसी ही कमला महालक्ष्मी को अपने मन में स्थापित कर उनका ध्यान करना चाहिए।

ध्यान :

कान्त्या कांचनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैं
हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्॥
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तै किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्दे रविन्दस्थिताम्

इस साधना के लिए साधना प्रारम्भ करने से पूर्व मन्त्र सिद्ध "कमला महा विद्या यन्त्र" स्थापित कर देना चाहिए, यह यन्त्र सोने चांदी या ताम्बे के पत्र पर अंकित होना चाहिए और पूर्ण विधि विधान के साथ यह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, इस यंत्र के चार द्वार होते हैं, बीच में अष्टदल होता है, अष्टदल के मध्य गोल वृत्त में षटकोण अंकित होता है, परन्तु यह यन्त्र शुद्धता से प्रामाणिकता के साथ अंकित होना चाहिए, रवि पुष्य मुहूर्त्त में इस यन्त्र का अंकन विशेष महत्वपूर्ण माना गया है।

यन्त्र को सिद्ध करने के बाद वाग्भव बीज से तथा लज्जा बीज से सिद्ध करना चाहिए, ऐसा करने के बाद वशीकरण एवं काम बीज से भी उस यन्त्र को पूरित करना आवश्यक है, इस सम्बन्ध में उन्होंने प्रमाण भी दिया था।

अनुक्त कल्पे यन्त्रस्तु लिखेत्पद्ममन्दलाष्टकम्।
षट्कोणकर्णिकन्तत्र वेदद्वारोपशोभितम्॥
तारम्पूर्व्वं लिलखित्वा परममलमलं वाग्भवम्बीजमन्य
ल्लज्जाश्रीबीजपूर्व्वं वशकरणतमंकामबीजम्परस्तात्

इसके बाद विधि विधान के साथ यंत्र को स्थापित कर उसकी पूजा कर किसी भी शुक्ल पक्ष की द्वितीया से यह साधना प्रारम्भ कर देनी चाहिए, यह साधना रात्रि को ही सम्भव होती है, साधना प्रारम्भ करने से पूर्व तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, अगरबत्ती या धूप लगाना अनिवार्य नहीं है, आसन कोई भी हो सकता है, रुद्राक्ष की माला के अलावा किसी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, साधक सफेद वस्त्र बिना सिले हुए धारण करे और मन में पूर्ण निष्ठा के साथ निम्न मन्त्र का बारह लाख जप करे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः

इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु मन्त्र संख्या निर्धारित है।

बारह लाख मंत्र जप होने के बाद उसी मंत्र से १०१ घी की आहुतियां देकर यज्ञ करे, इस प्रकार जिस दिन यज्ञ समाप्त होता है, उसी दिन कमला महाविद्या उसके घर में स्थापित हो जाती है।

इसके बाद उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और आर्थिक दृष्टि से वह पूर्ण सम्पन्न, सफल एवं श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने में समर्थ हो पाता है।

प्रस्तोता – हरिशंकर शर्मा, वाराणसी

लक्ष्मी का तो छोटा सा स्तोत्र ही मेरे जीवन का आधार बन गया है।

भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति लक्ष्मीप्रसाद जी कलकत्ता के माने हुए व्यवसायी एवं उद्योगपति है एक साधारण श्रेणी से उठकर उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र में जो कुछ प्राप्त किया है, वह अपने आप में अन्यतम है।

कुछ दिनों पूर्व जब मैं उनसे मिला था तो उनके व्यवहार और विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ था, मैंने उनसे यह जानना चाहा था कि आपके इस औद्योगिक साम्राज्य के पीछे आपका परिश्रम तो है ही, पर क्या कोई साधना या चमत्कार भी है ?

तो उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे कोई विशेष अनुष्ठान या मन्त्र जप तो नहीं आता, परन्तु जब मैं सत्रह वर्ष की अवस्था में पहली-पहली बार कलकत्ता आया था, तो मैं नित्य एक साधु की संगत में जाया करता था, दिन भर परिश्रम करने के बाद मुझे जो कुछ भी प्राप्त होता उसमें से कुछ तो मैं भोजन कर लेता और एक पाव पूड़ी बाजार से खरीद कर उन साधु को भी भेंट कर देता, इसके पीछे मेरा कोई स्वार्थ नहीं था, परन्तु मेरे मन में ऐसी इच्छा बराबर रहती थी, रात्रि को भी मैं उनकी कुटिया के बाहर सो जाता था।

एक दिन उन्होंने मुझे कहा, लक्ष्मी, आज मैं तुझे एक स्तोत्र दे रहा हूँ जो कि मंत्र से भी बढ़कर है यदि तू नित्य प्रातः इस स्तोत्र का पांच बार उच्चारण कर लेगा तो शीघ्र ही तू आर्थिक दृष्टि से उन्नति करने लग जायगा, और तेरे जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहेगी, पर दीपावली की रात्रि को इस स्तोत्र के १०१ पाठ अवश्य करना, और अन्य दिनों में प्रातः मात्र पांच बार उच्चारण करना पर्याप्त है, उन्होंने मुझे जो स्तोत्र दिया था वह इस प्रकार है–

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचलाकृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिहरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रींपद्मधारिणी॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य य पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मी र्भवेतस्य पुत्रादारादिभिः सह॥

मैं तो इसके अलावा न तो कोई मन्त्र जानता हूँ और न कोई स्तोत्र का पाठ ही करता हूं, नित्य इस स्तोत्र का पांच बार उच्चारण अवश्य करता हूँ और दीपावली की रात्रि को स्फटिक माला से १०१ बार पाठ इस स्तोत्र के कर लेता हूँ।

मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि मेरी इस उन्नति और प्रगति के पीछे इस स्तोत्र का बहुत अधिक महत्व है, मैंने अपने अन्य रिश्तेदारों को भी इस स्तोत्र की सलाह दी है और सभी ने इसके प्रभाव को स्वीकार किया है।

प्रस्तोता – घनश्यामदास, कलकत्ता

विलासिनी साधना से तो सब कुछ प्राप्य है :

इलाहाबाद के संगम तट पर काफी समय से एक अघोरी बैठा दिखाई देता है, इसके बारे में कुछ भी पता नहीं चलता कि यह कौन है, कहां से आया है और

किस उद्देश्य के लिए यहां बैठा है। जब धुन होती हैं तो वह काफी ऊंची ऊंचीं बातें करने लग जाता है और जब इच्छा होती है तो पत्थर फेंकने लग जाता है। शाम को इसके पास काफी लोगों की भीड़ लग जाती है, और लोगों से यह सुना है कि वह तरंग में आकर यदि कोई बात कह देता है तो वह खरी उतरती है।

मैं काफी समय से लगभग नित्य ही उसके पास रहा हूं। चर्चा छेड़ने पर वह कभी कभी इतने उच्च कोटि के मन्त्र शुद्ध रूप से उच्चारण करने लग जाता है कि सुनकर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। एक रात्रि को लगभग ग्यारह बजे उसने संगम के जल में गोता लगाने के बाद भीगे शरीर ही बाहर गंगा की रेती पर आकर बैठ गया, बोला, "तू तो गृहस्थ है तुझे धन की जरूरत नहीं है ?

मेरे कुछ कहने के पूर्व ही वह अपनी रौ में बोलता चला गया कि तुझे अवश्य ही धन की जरूरत होगी और इसके लिए तू विलासिनी यक्षिणी साधना सम्पन्न कर। कलियुग में तो यक्षिणी साधना ही तुरन्त फलदायक होती है।

उसने कहा– मैंने स्वयं ने विलासिनी साधना सम्पन्न की थी और आज भी विलासिनी यक्षिणी मेरे सिद्ध है। मैं उससे जब भी जो कुछ भी चाहता हूं वह प्राप्त हो जाता है।

फिर उसने बताया कि यह साधना दीवाली से एक दिन पहले प्रारम्भ करनी चाहिए, परन्तु उसके लिए स्वस्थ मस्तिष्क और दृढ़ हृदय की जरूरत है, कमजोर भयभीत आदमी को यक्षिणी साधना नहीं करनी चाहिए।

उसने कहा कि रात्रि को लगभग दस बजे के बाद नदी में कमर कमर तक पानी में जाकर खड़े होकर इस मन्त्र का जप प्रारम्भ करना चाहिए। मन्त्र जप करते समय शरीर पर किसी प्रकार का कोई वस्त्र नहीं होना चाहिए,इसके लिए न तो दीपक की जरूरत होती है और न माला अथवा आसन की ही। नदी में या तालाब में खड़े होकर ही इस मन्त्र का जप किया जाता है।

दीपावली के एक दिन पहले से यह क्रिया प्रारम्भ कर देनी चाहिए और कार्तिक पूर्णिमा को यह क्रिया समाप्त होती है, रात्रि को लगभग दस बजे इस मंत्र जप को प्रारम्भ करना चाहिए और प्रातः पांच बजे यह मंत्र जप समाप्त होता है, इसमें मंत्र जप संख्या निर्धारित नहीं होती

मन्त्र

ॐ विरूपाक्ष विलासिनि आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लें स्वाहा।

पूर्णिमा के दिन लगभग बारह बजे उसके सामने ही नदी के जल में विलासिनी यक्षिणी प्रकट होती है और उसके शरीर से आकर लिपट जाती है, वह सर्वथा नग्न होती है और प्रियतमा के रूप में उपस्थित होती है, जब वह आकर लिपट जाय तो उसके साथ सम्भोग कर देना चाहिए सम्भोग समाप्त होते ही वह अदृश्य हो जाती है।

इसके बाद साधक को कपड़े बदलकर अपने घर आ जाना चाहिए परन्तु इस साधना या अनुभव का वर्णन या विवरण किसी को भी नहीं बताना चाहिए।

इनके बाद वह अतीव सुन्दरी विलासिनी नित्य उसके घर में ही उससे मिलने आती है और वह जो कुछ भी उससे मांगता है वह उसे लाकर के देती है, कभी भी वह मना नहीं करती।

साधक बाद में चाहे तो उससे स्वादिष्ट भोजन, वस्त्र द्रव्य, धन, व्यापार–वृद्धि, या जो कुछ भी चाहता है वह उसे बराबर प्राप्त होता रहता है।

परन्तु जिस दिन भी उसके मुंह से यह घटना दूसरे को मालूम पड़ जाती है,या वह किसी को कह देता है, तो

उसके बाद से विलासिनी यक्षिणी फिर कभी भी नहीं आती और बाद में उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

यही नहीं अपितु कई बार तो विलासिनी यक्षिणी श्राप भी दे देती है जिससे सब कुछ बरबाद हो जाता है अर्थात इस सम्बन्ध में सतर्कता व सावधानी बरतना आवश्यक होता है।

इतना कहने के बाद अघोरी ने आगे बताया कि मैंने स्वयं विलासिनी साधना सम्पन्न की थी और आज तक मैं विलासिनी यक्षिणी के निकट सम्पर्क में रहा हूँ। यही नहीं अपितु आज तक मैंने उससे जो भी प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की, वह मुझे बराबर प्राप्त होता रहा है। पर अब मैंने दूसरी साधना संपन्न कर ली है अतः विलासिनी की आवश्कता नहीं रही है, इसीलिए यह घटना तुम्हें बता दी है। तुम चाहो तो इसका प्रयोग कर सकते हो।

मुझे अघोरी की बातचीत में सत्यता नजर आयी क्योंकि यह साधना बताते समय वह गम्भीर था और मैं स्वयं पिछले कुछ समय से यह अनुभव कर रहा था कि वह कोई दूसरी साधना संगम तट पर सम्पन्न कर रहा है।

वस्तुतः विलासिनी साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसके माध्यम से व्यक्ति भौतिक दृष्टि से कुछ भी प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तोता – विरोचन सिंह, प्रयाग

गोपनीय प्रयोग

एक मुसलमान ने मुझे यह प्रयोग बताया था और मैंने स्वयं इस प्रयोग को सिद्ध किया है। सिद्ध करने के बाद आज तक मेरे जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहा है और जब भी मैंने किसी प्रकार की कोई इच्छा की है, तो वह इच्छा अवश्य ही पूरी हुई है।

किसी भी रविवार को प्रातःकाल स्नान करके पिसी हुई हल्दी से थाली में बत्तीसा यन्त्र लिखे–

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

इस यन्त्र के मध्य में आटे का चौमुखा दीपक बनाकर उसमें फूलबत्ती जलावे। इस दीपक में घी का प्रयोग करे दीपक स्थापन करके उसकी पूजा करे और हाथ में थाली को उठा ले तथा सूर्य के सामने खड़ा होकर निम्न मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं हंसः।

इस मन्त्र का निरन्तर जप करता रहे और अपना मुंह सूर्य के सामने रखे। ज्यों ज्यों सूर्य घूमता जाय साधक स्वयं भी घूमता रहे। जब सूर्य अस्त हो जाय तो थाली को नीचे रखकर सूर्य को अर्घ्य दे और फिर वहां पर बैठकर मिष्ठान्न भोजन करे, और पृथ्वी पर सोवे।

इस प्रकार सात रविवार करे, अर्थात् प्रत्येक रविवार को इस प्रकार पूरे दिन का प्रयोग करे, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, बाद में इस मन्त्र की माला सूर्य के सामने खड़े होकर जपे, और जो भी इच्छा प्रकट करे वह इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है।

मैंने स्वयं इस प्रयोग को सम्पन्न किया है और मैंने अपने अत्यन्त कठिन कार्य को भी इस प्रयोग के द्वारा पूरा किया है।

प्रस्तोता – वीरेन्द्र तिवारी, दिल्ली

वस्तुतः ये प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण और सिद्ध प्रयोग हैं, पाठक अपनी आस्था, विश्वास और गुरु आज्ञा लेकर इस प्रकार के प्रयोग कर सकता है।

यह अवसर आपके सौभाग्य का द्वार खटखटा रहा है।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र पत्रिका सामान्य पत्रिका नहीं है, अपितु यह भारतीय संस्कृति एवं गोपनीय विद्याओं को उजागर करने का प्रबल एवं सफल माध्यम है, यह एक ऐसा प्रयास है, जो अपने आप में युग की आवश्यकता के अनुकूल हैं।

आज पूरे संसार में एक आंतक, भय और तनाव बना हुआ है, एक प्रकार से पूरी मानव जाति दिशा शून्य है, उसे कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है, उसके मानस में शान्ति नहीं है, उसके पास ऐसी कोई साधना नहीं है, जिसकी वजह से उसे मानसिक शान्ति मिल सके, और जीवन में भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति कर अपने जीवन को पूर्णता दे सके।

ऐसे अन्धकार पूर्ण माहौल में यह पत्रिका एक दीप स्तम्भ की तरह कार्य कर रही हैं, और अपनी रोशनी से हजारों-लाखों व्यक्तियों का पथ प्रदर्शन कर रही है, उसे सहारा दे रही है, उनके मन और मस्तिष्क को शान्ति प्रदान कर रही है, तथा गोपनीय साधनाओं के माध्यम से उनके जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति में भागीदार हो रही है।

अतः ऐसी श्रेष्ठ पत्रिका को बल देने, सहायता देने और सहयोग देने में कोई स्वार्थ नहीं है, अपितु यह तो एक ऐसा पुण्यदायक कार्य है, जिसको आने वाली पीढ़ियां याद रख सकेगी, यह एक ऐसा कार्य है, जो भारतीय संस्कृति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा, यह एक ऐसा सहयोग है, जो भारत की लुप्त हुई, प्राचीन विद्याओं को पुनर्जीवित करने में सहायक है, और ऐसी ही स्थिति में आप सबको आह्वान किया जा रहा है कि आप अपने अन्तर की आवाज सुनें, और यथासम्भव पत्रिका को इतना सम्बल दे दें, जिससे कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में और महंगाई के इस भीषण युग में भी यह पत्रिका जीवित रह सके, घटाटोप अंधकार में भी प्रकाश की रोशनी बिखेर सके, और हजारों-लाखों भटके हुए साधकों का पथ प्रदर्शन कर सके।

ऐसी ही विचार धारा को ध्यान में रखकर सिद्धाश्रम साधकों ने यह निश्चय किया है कि इस पत्रिका के लिए संरक्षक आदि ऐसे व्यक्तियों को बनाये जाय, जो वास्तव में ही ऊर्ध्वमुखी जीवन जीने में संलग्न हों, जो पुण्यवान हो, ज्ञानवान हों, श्रेष्ठ और सफल साधक हो, जिनको वास्तव में ही भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में आनंद की उपलब्धि होती हो।

अतः उनकी इच्छा को ध्यान में रखकर उनके परामर्श के अनुसार पत्रिका के निम्न पद निर्धारित हुए हैं—

पद नाम	पद संख्या	न्यौछावर
प्रधान संरक्षक	१	२१,०००)
मुख्य संरक्षक	५	११,०००)
सहयोगी संरक्षक	११	६,०००)
संरक्षक	२१	३,०००)
कार्यकारिणी सदस्य	१००	२,१००)

इन पदों को प्राप्त करने से पूर्व उस व्यक्ति को आजीवन सदस्य बनना आवश्यक है, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो आजीवन सदस्य बन कर ही इन पदों को प्राप्त कर सकते हैं।

जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि आजीवन सदस्यता शुल्क १५००) रु. हैं।

यह तो भविष्य ही बता सकेगा कि इतने महत्वपूर्ण पदों को प्राप्त करने से आपको भविष्य में कितना अधिक सहयोग और उन्नति के अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

इस सम्बन्ध में यह निर्णय किया गया है, कि सम्बन्धित पद बहुत कम है, और इच्छुक सदस्य बहुत ज्यादा है, वे इन पदों को प्राप्त करने के लिए लालायित है, अतः जो पहले धनराशि भेजकर सम्बन्धित पद प्राप्त कर लेगा, वही इसमें सफलता प्राप्त कर सकेगा।

जो आजीवन सदस्य उपरोक्त पदों में से कोई भी पद प्राप्त करेगा, उनको कई सुविधायें प्राप्त हो सकेगी जिनमें से कुछ निम्न है—

१— उपरोक्त वर्णित पदों में से कोई भी पद प्राप्त सदस्य को एक 'दिव्य मुद्रिका" प्रदान की जावेगी, और यह एक विशेष समारोह में पण्डितजी स्वयं अपने हाथों से उन्हें यह मुद्रिका पहनायेंगे।

२— जीवन भर उसे यह पत्रिका प्राप्त होती रहेगी, और इस सम्बन्ध में उनसे किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जायगा।

३— पत्रिका की तरफ से जो भी बहुमूल्य ग्रन्थ प्रकाशित होंगे वे उनको भविष्य में मुफ्त प्राप्त होते रहेंगे।

४— समय-समय पर पूज्य गुरुदेव का विशेष सानिध्य एवं सहयोग उन्हें प्राप्त होगा, और उनकी आर्थिक भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में पत्रिका-परिवार विशेष रूप से सहायक रहेगा।

५— भविष्य में किसी विशेष महत्वपूर्ण अवसर पर सैकड़ों हजारों साधकों शिष्यों एवं शिष्याओं की उपस्थिति में उनका विशेष सम्मान पण्डित जी हाथों सम्पन्न होगा, और "दिव्य मुद्रिका" के साथ-साथ "ज्योतिमय माला" प्रदान की जायेगी, जो कि उनके लिए सभी दृष्टियों से उन्नति देने में सहायक होगी।

६— निकट भविष्य में जब भी मानसरोवर या अमर नाथ की यात्रा का कार्यक्रम बनेगा, तो पूज्य गुरुदेव अपने साथ गिने चुने सदस्यों को ही साथ यात्रा करने का अवसर प्रदान करेंगे, इस अवसर में उपरोक्त पद प्राप्त संरक्षक को विशेष सुविधा प्रदान की जावेगी।

पूरे संसार के वैज्ञानिक ज्योतिषी और भविष्यवक्ता बार-बार चेतावनी दे रहे हैं, कि सन् ८५ का समय पूरे विश्व के लिये दुख पूर्ण है, आकस्मिक विपत्तियों एवं घटनाओं से युक्त हैं, ऐसे अंधकार पूर्ण संकट की घड़ियों में इस प्रकार की दिव्य मुद्रिका उनके और उनके परिवार के लिये कितनी अधिक सहायक हो सकती है, इसकी कल्पना की जा सकती है।

ये पद आपके लिए हैं, आप में से कोई भी पहले आजीवन सदस्य बनकर इन पदों को प्राप्त कर सकते हैं, इसके लिये सम्बन्धित धनराशि मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेज सकते हैं, और वह किसी व्यक्तिगत नाम से न भेजकर "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" जोधपुर के नाम से बनाकर रजिस्टर्ड डाक से भेजें।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र-विज्ञान

डा० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी,

जोधपुर (राज०)

ज्ञानामृत

याद करिये, बातचीत में उपयोग करिये, बड़े अक्षरों में लिख कर घर में टांगिये

ना प्राप्यम भिवांछन्ति
नष्टं नेच्छन्ति शोचितम्।
आपत्सु न मूह्यन्ति
नराः पण्डित बुद्धयः ।।

पण्डित बुद्धि वाले जन ऐसी वस्तु की कामना नहीं करते जो अप्राप्य हो, और यदि कोई वस्तु नष्ट हो जाय तो उसकी चिन्ता नहीं करते। वे विपत्तियों से घबराकर अपना विवेक नहीं खोते।

न दुर्जनः साधुदशामुपैति
बहु प्रकारै रपि शिक्ष्यमाणः।
आमूल सिक्तः पयसा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।।

दुष्ट व्यक्ति को चाहे कितनी ही शिक्षा और उपदेश दिये जाय वह सज्जन नहीं बन सकता, जिस प्रकार नीम के वृक्ष की जड़ को दूध घी से सींचने पर भी वह मीठा नहीं हो सकता।

यस्य कृत्यं न जानन्ति
मंत्रं वा मंत्रितं परे।
कृतमेवास्य जानन्ति
स वै पण्डित उच्यते ।।

जिस मनुष्य के कार्य के उद्देश्य अथवा रहस्य को तथा उसके बारे में किए गए परामर्श को, दूसरे लोग तभी जानते हैं, जब वह कार्य पूरा हो गया हो, वही मनुष्य पण्डित कहलाता है।



आरोग्य

गठिया रोग

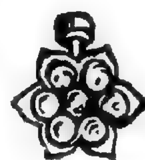
गठिया रोग संसार के सभी देशों में पाया जाता है; इससे जोड़ों में सूजन या जोड़ों में दर्द अनुभव होता है।

एक महात्मा ने गठिया के लिए एक अचूक औषधि बताई थी, पाठक चाहे तो आजमा सकते हैं—

धतूरा, आक, थूहर और अरंड के पत्ते पाव पाव भर ले, और इनको कूट कर, मसल कर इनका पानी निकाल ले, इस पानी के बराबर तिलों का शुद्ध तेल लेकर इसमें मिला ले तथा आग पर पकावे, पकने पर जब पानी जल जाय,और तेल बच जाय, तब इस तेल को किसी शीशी में भर कर रख दे।

नित्य इस तेल को थोड़ा गुनगुना कर गठिया जोड़ों पर मलकर उस पर रुई रखकर बांध दे, तो कुछ समय बाद गठिया रोग समाप्त हो जाता है।

आयु एवं स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर योग्य चिकित्सक के निर्देशन में इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है।



लक्ष्मी साधना से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक का लाभ क्या आप नहीं ले रहे हैं ?

"लक्ष्मी प्राप्ति के इक्यावन सफल प्रयोग" पुस्तक आप स्वयं पढ़कर देखिये, कि यह पुस्तक कितनी अधिक मौलिक, सारगर्भित और गोपनीय सामग्री से युक्त है........

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान पत्रिका के पाठक और प्रेमी होने के नाते आपके लिये यह शुभ सूचना है, कि 'अरविन्द प्रकाशन' के अन्तर्गत यह महत्वपूर्ण चिर प्रतिक्षित पुस्तक "लक्ष्मी प्राप्ति के इक्यावन सफल प्रयोग" प्रकाशित हो गई है।

यह पुस्तक विविध सरल, गोपनीय और मौलिक उपायों तथा सरल साधनाओं से युक्त है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति साधना सम्पन्न कर अनुकूलता प्राप्त कर सकता है, कुछ साधनाएं तो इतनी सरल हैं, कि बिना किसी उपकरण और वस्तुओं के भी सम्पन्न कर लाभ उठा सकते हैं।

☼ गोपनीय सामग्री

सरल भाषा में साधना विधि के साथ-साथ इसमें कुछ ऐसे गोपनीय मन्त्र हैं, जो उच्चकोटि के साधुओं के पास ही थे, और पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं – अद्भुत प्रभावयुक्त, दरिद्रता निवारण में सहायक।

☼ स्थायी सामग्री

यह पुस्तक ऐसी नहीं है, कि पढ़कर फेंक दी जाय, अपितु यह तो संग्रहणीय पुस्तक है, जिसका लाभ आप तो उठायेंगे ही, आने वाली पीढियां भी इस पुस्तक से लाभ उठा सकेगी। आपके लिये आपके मित्रों और परिचितों के लिये, आपके पण्डित और बुद्धिजीवियों के लिये.........एक अनुपम भेंट जो आप उन्हें दे सकते हैं।

☼ किफायती

आज की इस मंहगाई में एक किलो मिठाई या होटल में चाय नाश्ता करने पर पन्द्रह रुपये व्यय हो जाते हैं, फिर यह तो स्थायी पुस्तक है, घर में रखने योग्य है लाभ उठाने के लिए है........ इतने कम मूल्य में इतनी श्रेष्ठ पुस्तक........आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं, कि यह कम मूल्य में कितना श्रेष्ठ उपहार है।

☼ बिना परेशानी

इस पुस्तक के पास होने से न तो पण्डितों के यहां चक्कर लगाने पड़ते हैं, और न जानकारी के लिए परेशान होना पड़ता है, आप केवल पुस्तक का मूल्य पन्द्रह रुपये (डाक व्यय सहित) मनिआर्डर या बैंकड्राफ्ट से भेज दीजिये, बाकी का सारा काम हम स्वयं करेंगे।

आज ही धनराशि भेजकर इस श्रेष्ठ ग्रन्थ से लाभ उठाइये –

सम्पर्क— अरविन्द प्रकाशन
(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान विभाग)
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर (राज०)

प्र ति क्रि या

सुनियोजित षड्यन्त्र

पिछले दिनों विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के बारे में जिस प्रकार से समाचार प्रकाशित हुए हैं, उनको पढ़कर ऐसा प्रतीत हो रहा है, कि जैसे यह सब कुछ पूर्व नियोजित षडयंत्र हो, सभी समाचार पत्र इस होड़ में आगे थे, कि कौन किस प्रकार से सनसनी खेज और मन घड़ंत समाचार प्रकाशित कर सकता है ?

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर शिष्यों ने और भक्तों ने श्रीमाली जी को मंच पर ही दूध से स्नान कराया, यह समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से छापा गया है, मैं स्वयं गुरु पूर्णिमा पर उपस्थित था, मैं ही नहीं अपितु मेरे जैसे सैकड़ों हजारों शिष्य एवं श्रद्धालु उस अवसर पर उपस्थित थे, और वे स्वयं इस घटना के साक्षी हैं कि इस प्रकार की कोई बात मंच पर घटित हुई ही नहीं, यह घटना ही इस कथन की साक्षी है, कि पत्र-पत्रिकाओं में किस प्रकार से अपनी टेबल पर बैठकर के ही सारे मन घड़ंत विवरण लिखकर प्रकाशित कर दिये ।

पत्र-पत्रिकाओं की एक स्वस्थ परम्परा मानी जाती है, परन्तु इस प्रकार से अपने स्तर से नीचे गिरकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि वे कितने मर्यादाशील और स्वस्थ हैं, आज मैं इन सब घटनाओं को पढ़कर अनुभव कर रहा हूं, कि इमरजेन्सी के दौरान हमारे देश की प्रधान मन्त्री को सेंसरशिप क्यों लगानी पड़ी, उन्हें यह बाध्य होकर के ही करना पड़ा होगा, और इससे पूर्व उन्हें इस पीत पत्रकारिता का कड़वा घूंट पीना पड़ा होगा ।

इस प्रकार के प्रहार प्रत्येक उस व्यक्ति को झेलने ही पड़ते हैं, जो कुछ नया करने जाता हो, हम सब आपके साथ हैं, इस ओर से आप निश्चिन्त रहे ।

घनश्याम सिंह, नई दिल्ली ।

अखण्डित सूर्य

पिछले दिनों आयकर अधिकारियों द्वारा खोज बीन के समाचार पढ़ने को मिले, और इसके बाद तो विभिन्न पत्रों ने इस समाचार को उछाला, मैं स्वयं गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उपस्थित था और उस समय भी कुछ स्थानीय पत्रकारों ने जिस प्रकार से पेम्पलेट प्रकाशित कर के वितरित किए थे, और जिस प्रकार से वे चिल्ला रहे थे उससे मैं इस आशंका का अनुभव कर रहा था, मैंने एक दिन गुरुदेव से निवेदन भी किया था, कि ये पत्रकार हमसे मिले थे, और उन्होंने ब्लेक मेल करने की नीयत से कई उल्टी सीधी बातें हमसे की है ।

तब गुरुदेव ने उत्तर दिया था, कि हमें इस प्रकार से झुकने की जरूरत नहीं हैं, न इस प्रकार उनकी पीत पत्रिकारिता के सामने गिड़गिड़ाने की या ब्लेक मेल होने की जरूरत है, मेरा विश्वास मेरे साथ है, और मेरे शिष्य मेरे सामने हैं, फिर भले ही लोग कुछ भी कहें, मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता ।

सूर्य पर ग्रहण के समय कुछ क्षणों के लिए कालिमा अवश्य आ जाती है और वह सूर्य खण्डित सा दिखाई देने लगता है परन्तु वास्तव में वह सूर्य न तो खण्डित होता है

और न खण्डित रहता है, उस कालिमा के हटते ही वह पुनः उसी प्रकार अपना प्रकाश विकीर्ण करने लगता है।

हम सब आश्वस्त और निश्चित हैं कि इस कालिमा और खंडन के पीछे एक प्रकाशित देदीप्यमान सूर्य है, और हम उस सूर्य के प्रखर प्रकाश को प्राप्त करने के लिए आतुर हैं।

दिनेश भार्गव, कानपुर।

स्थित प्रज्ञ

मैं पिछले बीस वर्षों से श्रीमाली जी से परिचित हूं, और जोधपुर का नागरिक होने के साथ-साथ पत्रकार भी हूं, फलस्वरूप मैं श्रीमाली जी के कार्यों का आलोचक भी रहा हूं, और प्रशंसक भी। आलोचना करने के बाद भी मैं जब श्रीमाली जी से मिला हूं, तो मेरे प्रति उनके चेहरे पर कभी कटुता नहीं देखी, और यदि मैंने कभी प्रशंसा कर के उनके सामने गया तो कभी भी उन्होंने मेरी प्रशंसा भी नहीं की, वे दोनों ही परिस्थितियों में स्थितप्रज्ञ से ही रहे।

इस बार आयकर की जांच के दौरान एक पत्रकार होने के नाते मैं इस पूरी घटना का साक्षी रहा हूं, और छोटी से छोटी घटना या तथ्य मेरे सामने घटित हुए हैं, मैं पिछले दो महीनों में लगभग दस बार उनसे मिला हूं, परन्तु मैंने उनके चेहरे पर किसी प्रकार के कोई विषाद या तनाव के चिन्ह नहीं देखे, वे उसी प्रकार से अपने नैमित्तिक कार्य में संलग्न रहे हैं।

पत्रकार होने के बावजूद भी, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जिस प्रकार से अतिशयोक्तिपूर्ण समाचार प्रकाशित हुए हैं, और जिस प्रकार से मन-घड़ंत कहानियां बनाई गई है, उससे मेरा मन और मेरी आत्मा पूरी तरह से क्षुब्ध हैं, और मैं सोच रहा हूं कि इस पत्रकारिता से त्याग पत्र दे देना ही मेरी आत्मा की सच्ची आवाज होगी।

मैं स्वयं साक्षी था कि जांच के दौरान न तो श्रीमाली जी और न ही उनकी धर्म पत्नी तनाव ग्रस्त थे, या उनकी धर्मपत्नी बेहोश हो गई थी, तथा उन पर पानी के छींटे देने पड़े या श्रीमाली जी तनाव ग्रस्त रहे अथवा जब आयकर अधिकारी आये तब श्रीमाली जी ने अपने पैर का अंगूठा उनके सामने कर दिया, ये सारी बातें सर्वथा काल्पनिक और परियों की कहानियों जैसे लगते हैं, एक समझदार और अनुभवी व्यक्ति के द्वारा यह किस प्रकार से संभव हैं ?

यही नहीं अपितु आयकर अधिकारी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि जांच के दौरान श्रीमाली जी व उनके परिवार का उनको पूरा-पूरा सहयोग रहा हैं।

आश्चर्य होता है कि हम नैतिकता का दंभ भरते हैं, परन्तु हम किस प्रकार से और क्या कर रहे हैं, हमारी कथनी और करनी में कितना अन्तर आ गया है, हम पत्रकार हैं आंखों से देखकर सत्य घटना को सामने रखना हमारा कर्त्तव्य है, पर इस प्रकार से अनर्गल एवं असत्य बातें टेबल पर बैठे-बैठे लिखकर प्रकाशित करना पत्रकारिता के प्रति हमारी स्वयं की कितनी गद्दारी है, यह सोचा जा सकता है।

के० गुप्ता, जोधपुर।

चांद पर थूकना

मैंने श्रीमाली जी को देखा तो नहीं है, परन्तु उनके किए गए कार्यों और ज्ञान से मैं अवश्य ही परिचित हूं। ज्योतिष के क्षेत्र में लगभग ६० पुस्तकों का लेखन अपने आप में प्रमाण है कि उन्होंने इस क्षेत्र में कितना और क्या कार्य किया है ?

पर पिछले दिनों अखबारों में काफी कुछ पढकर विश्वास नहीं हुआ। एक प्रतिष्ठित पत्र में पढा कि उन्होंने चार वर्ष के बालक का भविष्यफल लिखते समय भविष्यवाणी की कि उसका प्रमोशन अगले साल हो

जायगा, ६० पुस्तकों के लेखक के द्वारा यह कैसे सम्भव है किसी भी जन्म कुण्डली पर जन्म तारीख अवश्य अंकित होती है या जन्म कुण्डली से ही यह ज्ञात हो जाता है कि इसकी आयु कितनी है फिर ऐसा लिखना कैसे सम्भव हैं? नौसिखिया ज्योतिषी भी ऐसा नहीं करता, जबकि श्रीमाली जी की पुस्तकें पढ़ पढ़ कर हजारों व्यक्ति ज्योतिषी बन गए हैं और अपने आपको प्रतिष्ठित किए हुए हैं।

यह घटना परनिन्दा तो अवश्य हो सकती है परन्तु इसमें सत्यता की गन्ध अनुभव नहीं होती। मैंने अपना भविष्यफल श्रीमाली जी से सन् ७६ में स्पष्ट कराया था और आज तक उनकी एक एक घटना सत्य सिद्ध हो रही है। कोई भी व्यक्ति आकर मेरे भविष्यफल को, जो कि उनके द्वारा लिखा हुआ है, पढ़ सकता है और जांच कर सकता है, यहां तक कि उन्होंने भविष्यफल में जो तारीखें दी थी वे तारीखें पूर्णतः सही उतर रही हैं।

इस प्रकार निन्दा करने से किसी की भी छवि धूमिल नहीं हो पाती, चांद की तरफ मुंह करके उस पर थूकनें से वह उसके स्वयं के मुंह पर ही आकर गिरता है।

सरला तेलंग, पूना

आसुरी प्रवृत्तियां

मंत्र तंत्र यंत्र पत्रिका अपने आप में एक अद्वितीय पत्रिका है और इसके प्रकाशन के बाद इसमें जितनी विविधता पूर्ण एवं प्रामाणिक सामग्री प्रकाशित हुई है वह अपने आप में अन्यतम है, पूरे भारत में मुझे कहीं भी ऐसी पत्रिका दिखाई नहीं दे रही है, जो कि इतनी प्रामाणिक और महत्वपूर्ण सामग्री दे सके।

पर, वर्तमान समय आसुरी प्रवृत्तियों का है, एक प्रकार से देखा जाय, तो देव प्रवृत्तियां तथा आसुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष है, पृथ्वी पर मानवीयता गिर रही है और आसुरी प्रवृत्तियां हावी हो रही हैं ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी आपने इस पत्रिका के माध्यम से जो देव प्रवृत्तियों को स्थापित करने का प्रयास किया है वह वास्तव में ही सराहनीय है।

ऐसे संघर्ष में कई बार आसुरी प्रवृत्तियां हावी होती ही है, परन्तु यह हमारा कर्तव्य है और ऐसे विशेष दिनों में तो बहुत ज्यादा जिम्मेवारी हम पर आ जाती है कि हम देव प्रवृत्तियों की स्थापना में सहयोग दें, जिससे कि आसुरी प्रवृत्तियों पर विजय पाई जा सके।

पत्र पत्रिकाओं में इस प्रकार के विविध समाचारों को पढ़ने के बाद मेरी धारणा की पुष्टि ही हुई है। हम इन आसुरी प्रवृत्तियों के संघर्ष में आपके साथ हैं, मैं ही नहीं मैंने और मेरे साथियों ने एक क्लब स्थापित किया है जिसके दो हजार सदस्य हैं और ये सभी सदस्य प्रत्येक प्रकार से आपके साथ हैं। आप हमें आज्ञा दें, हम लोगों का तन-मन-धन आपके सामने समर्पित है।

वीरेन्द्र कुमार बाजपेयी, जबलपुर

प्रखर रूप

कुछ स्वार्थी और निम्न स्तर के लोगों ने षडयन्त्र करके श्रीमाली जी की छवि को धूमिल करने का प्रयत्न किया है परन्तु हमें विश्वास है कि ऐसा कुछ भी नहीं हो सकेगा। सोने के ऊपर कुछ समय के लिए कीचड़ डाल देने से सोने के मूल्य में न्यूनता नहीं आ जाती। श्रीमाली जी का प्रत्येक क्षेत्र में हमें मार्गदर्शन मिलता रहा है, मैं उनके पिछले ३५ वर्षों का साक्षी हूँ। इससे पूर्व भी उनके सामने इससे भी जबरदस्त चुनौतियां आई हैं और वे हर चुनौती में अडिग रहे हैं। हमें पक्का विश्वास है कि इस भीषण चुनौतीपूर्ण संघर्ष में भी वे अडिग रहेंगे और इसके बाद उनका स्वरूप इससे भी ज्यादा प्रखर और तेजस्वी रूप में चमकेगा।

स्वामी गणेशानन्द, हरिद्वार

मै तो स्वस्थ मस्तिष्क का धनी हूं

मैं प्रारम्भ से ही आपकी पत्रिका का सदस्य हूं, और इस पत्रिका के आने से मेरे परिवार में ईश्वर के प्रति आस्था में वृद्धि ही हुई है, मैं एक सफल एडवोकेट हूं, और इसका श्रेय भी श्रीमाली जी को ही है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जिस प्रकार से झूठे और तथ्यहीन समाचार प्रकाशित हुए हैं, उससे आश्चर्य चकित एवं दुखित हुआ हूँ कि हमारी नैतिकता कितनी कमजोर है, एक पत्र में पढ़ा कि आयकर अधिकारी ने अपनी कार्य की सफलता के लिए पण्डित जी को चालीस हजार रुपये दिये।

मैं पूछता हूं कि यदि उस आयकर अधिकारी के पास चालीस हजार रुपये वाइट में थे, तो उसकी एन्ट्री कहां है? और यदि ब्लेक के रूपयों में से दिए हैं तो उसके पास इतनी रकम कहां से आई? एक प्रकार से यह घटना चुटकले से ज्यादा सत्य नहीं है, उस दिन भी जब मेरे साथी वकीलों एवं प्रतिष्ठित लोगों के बीच इस घटना की चर्चा चली तो वे हंस दिए, और कहा कि इससे बड़ा झूठ और इससे अच्छा चुटकला और कोई भी नहीं हो, सकता।

मैं श्रीमाली जी के ज्ञान से व्यवहार और विचारों से प्रभावित हूं, मेरा मस्तिष्क परिपक्व है, इस प्रकार की ऊलजलूल बातों का मेरे स्वस्थ मस्तिष्क पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

पी० डी० गुप्ता, इन्दौर।

हम तो जुड़े रहेंगे

मैं पिछले पांच-छः वर्षों से देख रहा हूं, कि श्रीमाली जी धीरे-धीरे त्यागमय बनते जा रहे हैं, उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में लिखना पिछले तीन-चार वर्षों से बन्द कर दिया है, इन दिनों में कोई नई पुस्तक नहीं लिखी है, ऐसा लग रहा है कि वे अपने मानस को सन्यास के लिए तैयार कर रहे हैं, और सही कहूं तो कर दिया है, मुझे तो ऐसा लगता है, कि यह घटना भी इसी मानस की एक कड़ी हैं, उन्होंने ऐसा इसलिए होने दिया है, जिससे कि कमजोर और स्वार्थ वृत्ति वाले शिष्य उनसे परे हट जायं या छिटक जाय, एक प्रकार से यह भीषण परीक्षा है शिष्यों के लिए।

परन्तु हम शिष्य इस प्रकार के भुलावे में आने वाले नहीं है, वे चाहे किसी प्रकार से परीक्षा लें या वातावरण बनावें, हम तो उनके साथ जुड़े रहेंगे।

केदारनाथ पाण्डेय, पटना।

"पत्रकार को दो हजार रुपये दीजिये, आप जो चाहते हैं, वही कहानी घड़ देगा, आखिर उनका चरित्र है क्या?"

ज्ञानी जैलसिंह
माननीय राष्ट्रपति महोदय
राजस्थान पत्रिका, जयपुर
दिनाङ्क १५ सितम्बर ८२ में प्रकाशित

एकाक्षी नारियल पर मेरे सिद्ध सफल प्रयोग

–स्वामी विश्वेश्रवा नन्द
भैरव घाट, उत्तरकाशी
(उ० प्र०)

स्वामी विश्वेश्रवानन्द योगियों में श्रेष्ठ और तांत्रिकों में आदरणीय व्यक्तित्व माने जाते हैं, इन्होंने अपने व्यक्तित्व का इतना अधिक विकास किया है कि कुछ वर्षों तक ये संसार दुर्लभ सिद्धाश्रम में भी स्थान पा चुके हैं। इन्होंने अपने जीवन में मानव जाति को सुखी एवं सम्पन्न बनाने का संकल्प लिया है और इन्होंने अपने जीवन में अनुभवगम्य प्रयोग गोपनीय न रखते हुए सार्वजनिक रूप से प्रगट किये हैं,इनका एक दुर्लभ लेख पत्रिका पाठकों के लिये प्रस्तुत है।

एकाक्षी नारियल लक्ष्मी का साक्षात स्वरूप माना जाता है, यों तो नारियल आसानी से बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं, परन्तु अधिकतर नारियलों में दो बिन्दु स्पष्ट दिखाई देते हैं, जो कि दो आंखों की तरह होते हैं, परन्तु बहुत ही कम ऐसे नारियल भी देखने को मिल जाते हैं, जिनमें दो बिन्दुओं के स्थान पर एक ही बिन्दु दिखाई देता है और ऐसे नारियल दुर्लभ माने गए हैं।

तांत्रिक ग्रन्थों में कहा गया है कि वह गृहस्थ, सौभाग्यशाली है, जिसके घर में एकाक्षी नारियल है, लक्ष्मी सूक्त (याज्ञवल्क्याचार्य) में कहा गया है, कि संसार में सब कुछ सुलभ है, परन्तु एकाक्षी नारियल सामान्यतः सुलभ नहीं है। विष्णु पुराण में बताया गया है कि जिसके घर में मंत्र सिद्ध एकाक्षी नारियल है, उसके घर में स्थायी रूप से अटूट लक्ष्मी का निवास बना रहता है।

संसार प्रसिद्ध तांत्रिकाचार्य त्रिजटा अघोरी का मत है कि दीपावली के अवसर पर जो व्यक्ति लक्ष्मी की मूर्ति के सामने एकाक्षी नारियल रखकर उसकी पूजा करता है, उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से अभाव रहना सम्भव ही नहीं है। वस्तुतः—

दुर्लभं स्फटिकं हारं दुर्लभं पारदं शिवं।
दुर्लभो वपु एकाक्षी नालिकेरश्च दुलभम्॥

अर्थात् संसार में तीन वस्तुएं अत्यन्त दुर्लभ है जिनमें स्फटिक मणियों की माला, पारद शिवलिंग तथा एकाक्षी नारियल हैं, संसार में मनुष्य के पास लाखों रुपये हो सकते हैं, सम्मान और यश हो सकता है, परन्तु इतनी दुर्लभ चीजों का संग्रहकर्त्ता तो बिरला ही होता है।

स्वामी विशुद्धानन्द जी ने एक बार कहा था कि

व्यक्ति का जीवन चाहे कितना ही कलुषित हो, उसका भाग्य चाहे कितना ही मन्द हो परन्तु यदि उसके घर में एकाक्षी नारियल आ जाता है, तो उसके जीवन में अनायास ही वैभव, सम्पदा, यश, सम्मान, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख प्राप्त होने लगते हैं।

अपने घर में एकाक्षी नारियल स्थापित करने से पूर्व इस बात की जांच कर लेनी चाहिए कि वह नारियल असली हो, क्योंकि बाजार में नकली एकाक्षी नारियल भी प्राप्त होते हैं। कुछ घुमक्कड़ साधु नारियल पर सिन्दूर लगा कर पूजा के समान दिखाई देने वाला नारियल बना देते हैं, जिससे नारियल की पहचान नहीं होती कि यह एकाक्षी नारियल है या नहीं, क्योंकि सिन्दूर के लेप के नीचे उसकी आंख ढंक जाती हैं। कुछ साधु नारियल पर चांदी का वर्क चढ़ा देते हैं, और इस प्रकार भी नकली एकाक्षी नारियल थमा देते हैं। इसके अलावा कुछ नारियल नारी जाति के होते हैं जो कि एकाक्षी होते हुए भी त्याज्य होते हैं, अतः भली प्रकार से जांच कर नर जाति का एकाक्षी नारियल ही अपने घर में स्थापित करना चाहिए।

इसके साथ ही साथ नर जाति का एकाक्षी नारियल मन्त्र चैतन्य होना चाहिए और प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त होना चाहिए जिससे कि वह पूरा-पूरा लाभ दे सके, वस्तुतः शास्त्रों में और तांत्रिक ग्रन्थों में जो दुर्लभ एकाक्षी नारियल का विवरण है, ऐसा नारियल सौभाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में रखने में समर्थ हो पाते हैं।

एकाक्षी नारियल के लाभ—

यदि इस पर प्रयोग न किये जाय और केवल मात्र मंत्र सिद्ध प्राण संजीवनी क्रिया सिक्त एकाक्षी नारियल ही घर में हो तो उससे कई लाभ हैं। प्रसिद्ध तांत्रिक ग्रन्थ रुद्रयामल तन्त्र में इसके निम्नलिखित लाभ बताये हैं—

१– ऐसा नारियल स्थायी सम्पत्ति देने में सहायक होता है।

२– एकाक्षी नारियल गर्भवती स्त्रियों को सुंघाने मात्र से बिना कष्ट के बच्चा हो जाता है।

३– जिस घर में यह नारियल होता है,उसके घर में किसी प्रकार का कोई तांत्रिक प्रभाव नहीं हो पाता।

४– यदि किसी स्त्री के संतान नहीं हो रही हो, तो ऋतु-स्नान के बाद यह नारियल पानी में घोलकर उसे वह पानी पिला दे तो उसके संतान होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती है।

५– यदि किसी व्यक्ति या स्त्री पर भूत-प्रेत का प्रभाव हो तो उसकी गोदी में ऐसा नारियल रखते ही वह भूत–प्रेत बाधा से मुक्त हो जाती है।

६– यदि घर में भूत-प्रेत का उपद्रव हो तो पानी में सात बार यह नारियल डुबो कर वह पानी पूरे घर में छिड़क दे तो घर से भूत-प्रेत उपद्रव समाप्त हो जाता है।

७– यदि मुकदमें में सफलता प्राप्त करनी हो तो रविवार के दिन इस पर अपने विरोधी का नाम लेकर लाल कनेर का फूल रख दें और जिस दिन न्यायालय में जाना हो उस दिन वह फूल अपने साथ लेकर जावे तो सारी स्थिति अपने अनुकूल हो जाती है।

८– यदि कोई शत्रु परेशान कर रहा हो तो लाल कनेर का फूल मंगलवार के दिन इस पर रख दें, और स्वयं अपने सामने इसे रख कर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके सात बार शत्रु नाम उच्चारण करे, इस प्रकार नित्य करे, और अगले मंगलवार को वह फूल उठाकर दक्षिण की तरफ फेंक दे, तो शत्रुनाश या शत्रु परास्त होता है।

९– जिनको वश में करना हो उसका नाम अष्टगंध से

इस नारियल पर शुक्रवार को लिख दे तो एक सप्ताह के भीतर-भीतर वह पुरुष या स्त्री वश में हो जाती है, और आगे के जीवन भर उसके कहने के अनुसार कार्य करती है ।

१०– जहां ऐसा नारियल होता है, उस पर चन्दन तथा कुंकुम मिलाकर उसका तिलक अपने ललाट पर कर व्यक्ति जहां भी जाता है, वहां उसे सफलता ही मिलती है ।

११– जिस घर में ऐसा नारियल होता है, वहां स्वयं भगवान वास करते हैं, लक्ष्मी आती है, रोग, शोक, मोह का नाश होता है, प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य और समाज में सम्मान प्राप्त होता है, तथा व्यापार में लाभ होता है ।

इस बात का ध्यान रखें कि मात्र बाजार में बिकने वाला नारियल फल देने में सहायक नहीं होता है, यह तभी सहायक होता है जब वह मंत्र सिद्ध हो तथा प्राण चैतन्य हो ।

प्रयोग नम्बर–१

यह प्रयोग दीपावली के दो दिन पूर्व धन त्रयोदशी अर्थात कार्तिक शुक्ल द्वितीया तक किया जाता है । इन पांच दिनों में यह प्रयोग समाप्त हो जाता है ।

साधक को चाहिए कि वह प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने किसी थाली में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर नारियल रख दें और इसको सामान्य पूजा करें। सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लें तथा मंत्र सिद्ध कमल गट्टे की माला से निम्नलिखित मंत्र की इक्यावन मालाएं फेरें ।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्व सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस प्रकार पांच दिन तक यह प्रयोग करें तो कुछ ही समय में वह निश्चित रूप से ऋण मुक्त हो जाता है तथा व्यापार में श्रेष्ठ सफलता मिलने लग जाती है, आर्थिक दृष्टि से वह आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त करने लग जाता है ।

प्रयोग नम्बर – २

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जाता है, प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने थाली में एकाक्षी नारियल रख दे और इसे दूध से स्नान करावें फिर शुद्ध जल से धोकर उसे पुनः दूसरी थाली में स्थापित कर दे और उस पर चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाकर इसकी पूजा करें।

इसके बाद निम्न मन्त्र की नित्य २१ मालाएं फेरें, माला मन्त्र सिद्ध कमल गट्टे की हो ।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं अक्षय कुबेराय प्राप्त्यर्थं एकाक्षिनालिकेराय नमः ।।

यह ११ दिन का प्रयोग है, प्रयोग समाप्ति पर स्वयं लक्ष्मी दर्शन देती है, और उसके जीवन में चतुर्मुखी उन्नति देने में सहायक होती है ।

प्रयोग नम्बर –३

शनिवार की शाम को इस नारियल को कांसी की थाली में स्थापित करें और इसके सामने तेल का दीपक लगाकर इसे आमंत्रित करें कि हे एकाक्षी नारियल ! आप मेरा कार्य सिद्ध करें ।

इसके बाद दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय के समय थाली में एकाक्षी नारियल को स्थापित कर उसे दूध से और फिर जल से स्नान कराकर उस पर कुंकुम से त्रिशूल बनावें और उसकी पूजा करें, इसके बाद नित्य ११ मालाएं निम्न मन्त्र की फेरें —

मन्त्र

ॐ नरएकाक्षि नालिकेराय मम कार्यं शीघ्र सिद्धयं कुरु कुरु नमः ।।

प्रयोग प्रारम्भ करने के पूर्व शनिवार की शाम को जब तेल का दीपक लगाकर नर एकाक्षी नारियल को आमन्त्रित करें तब उसके सामने अपनी इच्छा भी प्रकट कर दें कि मैं अमुक कार्य के लिए यह प्रयोग कर रहा हूँ

इसमें बन्धन मुक्ति, व्यापारिक उन्नति, ऋण मुक्ति, किसी को वश में करने, परीक्षा में पास होने, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने तथा अन्य किसी भी प्रकार की इच्छा स्पष्ट की जा सकती है, परन्तु एक बार के प्रयोग में एक ही इच्छा प्रकट करनी चाहिए।

वस्तुतः एकाक्षी नारियल कलियुग का अमृत स्वरूप वरदायक फल है जो कि प्रत्येक कार्य की सफलता में सहायक है।

धन तो व्यक्ति के पास आता है और चला भी जाता है, पर ऐसा "नर एकाक्षी नारियल" तो सौभाग्य उदय होनेपर ही प्राप्त होकर घर में स्थापित हो सकता है।

— ✲ —

श्रीलक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता ।। ॐ ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ॐ ।।
दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता ।। ॐ ।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।। ॐ ।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता ।। ॐ ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता ।। ॐ ।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ।। ॐ ।।
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोइ नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ॐ ।।

साबर मन्त्र और लक्ष्मी प्रयोग

साबर मन्त्र सर्वाधिक महत्व पूर्ण और अचूक प्रभावयुक्त हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में अपने विचार प्रगट करते हुए बताया है कि श्री उमा महेश्वर ने कलियुग के प्राणियों पर दया करने के लिये साबर मन्त्रों कि रचना की है, जिससे कि वे अपने जीवन के कष्टों और अभावों को दूर कर सके।

कवि विलोकि जगहित हर गिरिजा।
साबर मन्त्रजाल जिन्ह सिरिजा।।
अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रगट प्रभाव महेस प्रतापू।।

यद्यपि इन मन्त्रों में वर्णित अक्षरों का या शब्दों का परस्पर कोई विशेष सम्बन्ध दिखाई नहीं देता परन्तु इनका लक्ष्य अचूक होता है। इसका कारण यह है कि अन्य सभी मन्त्र जहां कीलित किये हुए हैं और उत्कीलन से ही अपना प्रभाव दिखाते हैं, वहीं साबर मन्त्रों को कीलित नहीं किया गया है इसलिये अन्य मन्त्रों की अपेक्षा कम समय में साधना करने पर ये मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं।

स्वामी गिरिदेव महाराज ने कृपा कर पत्रिका-कार्यालय में इस सम्बन्ध में जिस प्रकार से साबर मन्त्रों पर अपने विचार प्रगट किये हैं वे पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं :

वैदिक अथवा तांत्रोक्त अनेक ऐसे मन्त्र हैं, जिनकी साधना करने के लिए अत्यन्त सावधानी की जरूरत होती है, असावधानी से कार्य करने पर प्रभाव प्राप्त ही नहीं होता, अथवा सारा श्रम व्यर्थ चला जाता है, परन्तु साबर मन्त्रों की साधना या सिद्धि में ऐसी कोई आशंका नहीं होती, यह सही है कि इनकी भाषा सरल और सामान्य होती हैं, मन्त्रों को पढ़ने पर ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं होता कि इनमें कुछ विशेष प्रभाव है, परन्तु जब उन

मन्त्रों का जप किया जाता है, तो असाधारण सफलता दृष्टिगोचर होती हैं, कुछ मन्त्र तो ऐसे हैं कि जिनको सिद्ध करने की जरूरत ही नहीं है केवल कुछ समय तक उच्चारण करने से ही उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लग जाता है।

एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि साबर मन्त्र को सिद्ध करने से पूर्व अपने सिद्ध गुरु से इसकी दीक्षा विधिवत् रूप से ले लेनी चाहिए, ग्रहण, होली, या दीपावली के विशेष अवसर पर इन मन्त्रों को सिद्ध किया जाय या इनका जप किया जाय तो विशेष रूप से अनुकूलता प्राप्त होती है, मेरी राय में तो जो मन्त्र सिद्ध हो जाय, उसका नियमित रूप से मन्त्र जाप होना आवश्यक है, जिससे कि उसका प्रभाव निरन्तर बना रह सके।

यदि किसी मन्त्र की जप संख्या निर्धारित नहीं हैं तो मात्र १००८ मंत्र जप करने पर उस मंत्र को सिद्ध समझना चाहिये, फिर भी इस बात का हमेशा ध्यान रखे कि साबर मन्त्र की साधना या सिद्धि से पूर्व किसी साबर मन्त्र विशेषज्ञ या अपने योग्य गुरु से इसका ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुसार ही कार्य करे।

गुरु और शिष्य का एक मधुर और पवित्र सम्बन्ध होता है, गुरु के प्रति साधक की जैसी भावना होती है, उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है।

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे देवज्ञे भैषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।

अर्थात् मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, दवा तथा गुरु में जिस प्रकार की भावना होती है, उसके अनुसार ही उसे सिद्धि प्राप्त होती है।

दूसरी बात साबर मन्त्रों की सिद्धि के लिए मन में दृढ़ संकल्प और इच्छा-शक्ति का होना आवश्यक है, जिस प्रकार की इच्छा शक्ति साधक के मन में होती है, उसी प्रकार का लाभ उसको मिल पाता है, यदि मन में दृढ़ इच्छा शक्ति है तो अन्य किसी भी बाह्य परिस्थितियों एवं कुविचारों का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता, जो मन में धारणा बना लेता है, उस पर दृढ़ रहता है, वह शिष्य सदैव प्रसन्न और शांत रहता है, संसार में जितने भी उच्चकोटि के योगी और साधक हुए हैं, उनके मूल में दृढ़ इच्छा शक्ति ही रही है, क्योंकि दृढ़ इच्छा शक्ति के माध्यम से ही व्यक्ति अपने महान् कार्यों का संचालन करता है, और उसी के द्वारा वह सफलता प्राप्त करता है।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि साबर मन्त्र में जो अक्षर प्रयुक्त होते हैं, वे मात्र अक्षर नहीं है, अपितु उनमें एक विशेष भावना और प्रभाव हैं—

गुरो मनुष्यबुद्धिं च मन्त्र चाक्षरवाचिताम्।
प्रतिमासु शिलाबुद्धि कुर्वाणो नरकं व्रजेत्॥

अर्थात् जो गुरु में मनुष्य की भावना करता है या जो मंत्र में मात्र अक्षर या देव प्रतिमा में मात्र पत्थर की भावना रखता है, वह निश्चय ही नर्क को प्राप्त होता है।

साबर मन्त्रों की साधना किसी भी दिन से प्रारम्भ की जा सकती है, दीपावली के अवसर पर इसका विशेष महत्व है, अतः लक्ष्मी एवं सम्पदा से सम्बन्धित कुछ प्रामाणिक साबर मन्त्रों का विवेचन स्पष्ट किया जा रहा है—

१– सर्वकार्य सिद्धि मन्त्र

आर्थिक, व्यावसायिक या व्यापारिक दृष्टि से किसी भी प्रकार की सफलता एवं उन्नति के लिए इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है, २१ माला मंत्र जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, दीपावली की रात्रि को इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है, किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग साधक कर सकता है, आसन किसी भी प्रकार का हो सकता है, यदि रात्रि में इस मंत्र को सिद्ध किया जाय तो विशेष सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ नमो महादेवी सर्वकार्य सिद्धकरणी जो पाती पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरोमन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मन्त्र महत्वपूर्ण है, और दीपावली की रात्रि को २१ मालाएं फेरने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, इसकी नित्य एक माला जप करके अपने व्यापार की उन्नति या कार्य की सिद्धि के लिए कहा जाय तो शीघ्र ही उसका कार्य सिद्ध हो जाता है।

२- अद्‌भुत कार्य सिद्धि मन्त्र :

यह मन्त्र भी कार्य सिद्धि मन्त्र कहा जाता है और विशेष रूप से प्रभावयुक्त है। यह भैरव मन्त्र है। अतः साहसी और निडर व्यक्ति को ही इस प्रकार का मन्त्र जप करना चाहिए। दीपावली की रात्रि या ग्रहण की रात्रि में इस मन्त्र को सिद्ध किया जा सकता है। साधना के लिए एक त्रिकोण बनाना चाहिए और उसके सामने चौमुखा दीपक लगाना चाहिए, साधक को शुद्ध वस्त्र पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए, एक हजार मन्त्र जपने पर यह सिद्ध हो जाता है, यदि साधना काल में भैरव का भयंकर रूप दिखाई दे तो घबराये नहीं अपितु उसके सम्मान में धूप-दीप नैवेद्य प्रस्तुत कर पूजा करे और यदि वह साक्षात् उपस्थित हो तो उसके गले में फूलों की माला पहना दे।

इसके बाद साधक कभी भी इस मन्त्र की एक माला फेरकर अपना जो भी कार्य भैरव को कहेगा वह कार्य अवश्य ही सिद्ध होगा।

मन्त्र

ॐ नमो काली कंकाली महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहे मेरा भेजा तुरन्त करे रक्षा करे आन बांधू बान बांधू चलते फिरते को औसान बांधू दशा मुखा बांधू नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधू फूल में भेजू फेल में जाय काठे जी पड़े थर थर कांपे। हल हल हले गिर गिर पड़े उठ उठ भगे बक बक बके मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता की सैया पर पांव धरे। वचन जो चूके समुद्र सूखे। बाचा छोड़ कुबाचा करे तो धोबी की नांद चमार के कुण्डे में पड़े। मेरा भेजा बावला न करे तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़े। सिर की जटा टूटी भूमि पर गिरे। माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े। बिना हुक्म नहीं मरना हो। काली कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

वस्तुतः यह मन्त्र महत्वपूर्ण है, अतः साधक को सावधानी के साथ इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए फिर भी यह देखा गया है कि इस मन्त्र से व्यक्ति आर्थिक उन्नति, व्यापारिक सफलता, शत्रु नाश तथा प्रत्येक कार्य की सिद्धि एवं सफलता प्राप्त कर सकता है।

३- धन प्राप्ति मन्त्र

यह मंत्र महत्वपूर्ण है, इस मंत्र का जप अर्द्ध रात्रि के समय किया जाता है, यह साधना २२ दिन की है, और नित्य एक माला मंत्र जप होना चाहिए, यदि शनिवार या रविवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इसमें व्यक्ति को लाल वस्त्र पहिनने चाहिए, और पूजा में प्रयुक्त सभी सामान को रंग लेना चाहिए।

दीपावली के दिन भी इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है, और कहते हैं कि यदि दीपावली की रात्रि को इस मंत्र की २१ माला फेरे तो उसके व्यापार में उन्नति एवं आर्थिक सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनो ऋद्धि सिद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा । ॐ क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः ।

जब अनुष्ठान पूरा हो जाय तो साधक को चाहिए, कि वह नित्य इसकी एक माला फेरे, ऐसा करने पर उसको आगे के जीवन में निरन्तर उन्नति होती रहती है ।

४– अन्नपूर्णा मन्त्र

इसकी साधना किसी भी दिन की जा सकती है, साधना से पूर्व साधक को अपने घर में छः लड्डू तैयार करने चाहिए, और उसमें से पांच लड्डू निकालकर अलग रख लेने चाहिए तथा उन लड्डुओं पर सिन्दूर लगाकर सामने रख देना चाहिए ।

इसके बाद उन लड्डुओं के सामने अन्नपूर्णा मन्त्र का एक हजार जप करे । जप के बाद एक लड्डु कलश में रखकर कुए से पानी भर ले तथा शेष चार लड्डू कुए में वरुण देवता को समर्पित कर दे । कलश में जो लड्डू एवं जल हो उसको पूरे घर में छिड़क दे । तथा जो छठा लड्डू अलग पड़ा था उसको दक्षिण दिशा की तरफ फेंक दे ।

ऐसा करन पर व्यक्ति अन्नपूर्णा सिद्ध कर लेता है और उसके घर में धन धान्य की कभी भी कमी नहीं आती ।

मन्त्र

ॐ नमों आदेश श्री गुरु को गजानन वीर बसे मसान अब दो ऋद्धि का वरदान जो जो मांगू सो सो आन पांच लड्डू सिर सिन्दूर हाट बाट का, माटी मसान की, सब ऋद्धि सिद्धि हमारे पास पठेव शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

मन्त्र सिद्ध करने के बाद सप्ताह में एक दिन अन्नपूर्णा मन्त्र की एक माला अवश्य फेर लेनी चाहिए ।

यह मन्त्र परीक्षित है और सिद्ध होने के बाद उसके घर में चाहे कितने ही लोग भोजन करे, भोजन में कमी या न्यूनता नहीं आती ।

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को ही सिद्ध किया जा सकता है ।

५– बिक्री बढ़ाने का मन्त्र

व्यापार में बिक्री बढ़ाने का यह अद्भुत एवं अनुभूत मन्त्र है, इसका प्रयोग केवल मात्र तीन रविवार के दिन ही किया जाता है, किसी भी रविवार को प्रातः उठकर अपने हाथ में काले उड़द लेकर इस मन्त्र का २१ बार जप करके उन उड़दों को व्यापार-स्थल पर डाल दे । इस प्रकार केवल तीन रविवार करे, अर्थात् यह प्रयोग केवल रविवार के दिन ही किया जाता है ।

ऐसा करने पर उसके व्यापार में उन्नति होती है और आश्चर्यजनक रूप से बिक्री बढ़ती है ।

मन्त्र

भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा । उठे जो डंडी बिके जो माल भंवर वीर खाली नहीं जाय

यदि दीपावली की रात्रि को दुकान पर बैठकर इस मन्त्र की २१ मालाएं फेरे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और तब उन उड़दों को दुकान के बाहर दुकान के सामने डाल दे, ऐसा करने पर बिक्री बढ़ जाती है और व्यापार में उन्नति होने लगती है ।

६- व्यापार वृद्धि मन्त्र

व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मन्त्रका १०८ बार उच्चारण करके दुकान खोले और व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करे तो उस दिन बिक्री बढ़ती है और किसी प्रकार का कोई उपद्रव या परेशानी नहीं आती। इस मन्त्र को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है, नित्य दुकान खोलने से पूर्व एक माला फेरनी पर्याप्त है।

मन्त्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमो नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो सात समुद्र की दुहाई ऋद्धि सिद्धि खावोगी तो नौ नाथ चौरासी की दुहाई।

७- धन प्राप्ति मंत्र

नित्य प्रातःकाल दन्त धावन करने के बाद इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से व्यापार या किसी अनुकूल तरीके से धन प्राप्ति होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी ममगृहे धन पूरय पूरय चिन्तांम् दूरय दूरय स्वाहा।

८- मनोकामना सिद्धि मंत्र

इस मन्त्र का दीपावली की रात्रि को दस हजार जप करने से मनोकामना पूरी होती है, और साधक जो भी चाहता वह कार्य सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मानसे मनसे ॐ ॐ।

९- समस्त कामना सिद्धि मंत्र

इस मन्त्र का हर समय जप करते रहने से समस्त कामनाएं पूरी हो जाती हैं, वह जीवन में जिस प्रकार से चाहता है, उसी प्रकार से कार्य हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं नमः

वस्तुतः साबर मन्त्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रभावयुक्त हैं, वशीकरण, उच्चाटन आदि में तो साबर मन्त्रों का आश्चर्यजनक प्रभाव देखा जा सकता है पर व्यापार, आर्थिक उन्नति एवं कार्य सिद्धि में भी इसका प्रभाव महत्वपूर्ण है। यदि साधक विश्वास एवं आस्था लेकर साबर मन्त्रों की साधना करे, तो पूर्ण सफलता निश्चित रूप से मिलती है।

— 卐 —

एक साबर टोटका :

दीपावली के दिन प्रातः व्यक्ति बिना स्नान किये, बिना दातुन किये एक नारियल को पत्थर बांधकर नदी या तालाब के जल में डुबो दे, और डुबोते समय प्रार्थना करे, कि शाम को मैं आपको लक्ष्मी के साथ लेने आऊंगा।

फिर शाम को सूर्यास्त के बाद उस नारियल को जल से निकाल कर ले आवे, तथा लक्ष्मी पूजन के समय उसकी भी पूजा कर भण्डार गृह या संदूक में रख दे,तो पूरे वर्ष असाधारण रूप से धन प्राप्त होता रहता है।

-: जिज्ञासा :-

प्रश्न– साधकों और योगियों को जब इतना अधिक साधना-ज्ञान और सामर्थ्य होती है, तो वे अपने जीवन में क्यों कष्ट उठाते हैं ?

उत्तर– तुम्हारा प्रश्न आधारभूत रूप से गलत है, ज्ञान एक अलग प्रक्रिया है, और जीवन के घात प्रतिघातों को झेलना दूसरी बात है, जो मानव शरीर में स्थित रहता है, उसे इस भाग लेने की प्रक्रिया में कष्ट भी उठाना पड़ता है।

रामकृष्ण परमहंस अपने आप में समर्थ योगी और काली के उच्च कोटि के साधक थे, जिन्होंने अपने जीवन में मां काली के प्रत्यक्ष दर्शन किये थे, परन्तु जीवन के अन्तिम समय में लगभग ६ महीने वे असाध्य रोग से पीड़ित रहे, जब स्वामी विवेकानन्द ने उनसे पूछा, कि आप मां काली के परम प्रिय भक्त हैं, और आपने अपने जीवन में सैकड़ों लोगों का दुख दूर किया है, फिर आपके लिए अपने रोग को दूर करने में क्या आपत्ति है, फिर आप इतना भीषण कष्ट क्यों उठा रहे हैं ?

उस समय रामकृष्ण परमहंस ने जो जबाब दिया वह योगियों और साधकों का आधारभूत सत्य है, उन्होंने विवेकानन्द को बताया कि जो भी साधक, गुरु या योगी होता है, वह अपने जीवन में अपने शिष्य और हितैषियों के कष्टों को दूर करने के लिए, उनके पाप या उनके दुख अपने ऊपर झेलता रहता है, और यह सब कुछ झेलते-झेलते अन्त में मुक्ति से पूर्व उसको स्वयं को भोगना भी पड़ता है, क्योंकि बिना भोगे वह भोग समाप्त नहीं होता, इसीलिए यदि हम पिछले एक हजार वर्षों का इतिहास टटोलें तो हम अनुभव करेंगे कि चाहे कोई भी योगी या सन्त अथवा सन्यासी रहा हो, उसे जीवन में घोर कष्ट उठाना ही पड़ा है, महात्मा ईशा को सूली पर चढ़ना पड़ा, सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा, मीरां को जीवन में जितनी यातनाएं सहनी पड़ी, वह अन्यतम है, प्रसिद्ध योगी विद्याचार्य को कैंसर से पीड़ित रहना पड़ा, मैं लकवे से पीड़ित हूँ, और यदि तुम ध्यान पूर्वक विचार करो तो देखोगे कि जो भी शुद्ध आत्मा है, जिसके जीवन में भी साधना है, या जो अपने जीवन में उस स्थिति को पहुँच गया है, जिसकी आगे की स्थिति मोक्ष या निर्वाण है, उसे इस गति को प्राप्त करने से पूर्व घोर कष्ट अभाव या रोग सहन करना ही पड़ा होगा, क्योंकि इस जीवन के भोगों को जब तक वह पूरी तरह से नहीं भोग लेता, तब तक उसको मुक्ति की प्राप्ति हो ही नहीं सकती, इसलिए यदि साधक मुक्ति की कामना करता है, तो उसे इस जीवन के सारे पापों का – वे पाप चाहे उसके स्वयं के हों, या उसके शिष्यों के हों – प्रायश्चित के फलस्वरूप भोगने ही पड़ेंगे, इसीलिए जितने भी उच्च कोटि के साधक महात्मा योगी या विद्वान् हुए हैं, उन्हें इस प्रकार के भोग भोगने पड़े।

यदि उन्हें ज्ञान है, तो किसी प्रकार का रोग होने या अन्य स्थितियों में उसके ज्ञान पर क्या प्रभाव पड़ता है, उनका ज्ञान तो अपनी जगह स्थायी है, यह तो अल्प बुद्धि वालों के विचारने की बात है, वे इस प्रकार छोटी-छोटी बातों को लेकर अपने मानस को बदल सकते हैं, जो धीर गम्भीर है, उनके जीवन में या उनके विचारों में इस प्रकार से कोई अन्तर नहीं आता।

प्रश्न– जीवन में अर्थ संचय उचित है या अनुचित। साधुओं को अर्थ संचय की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर– हमारे शास्त्रों ने अर्थ की देवी लक्ष्मी को प्रमुख और प्रधान स्थान दिया है, यहां तक कि उसे देवताओं में प्रमुख भगवान विष्णु की पत्नी के रूप में स्वीकार किया है, और हमारे वर्ष भर के त्यौहारों में लक्ष्मी पूजन के त्यौहार दीपावली को सबसे अधिक महत्वपूर्ण उत्सव माना है।

हमारे शास्त्रों ने धन को कभी भी बुरा नहीं माना, इसकी बजाय अभाव और दरिद्रता को अशुभ और बुरा माना है, यदि हम अपना पिछला इतिहास देखें तो हम पायेंगे कि हमारे सभी देवता आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं, पिछले दस हजार वर्षों की परम्परा का अध्ययन किया जाय, तब भी यही ज्ञात होता है, कि जितने भी उच्च कोटि के आश्रम हैं, वे आश्रम आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहे हैं; विश्वामित्र के पास हर क्षण दस हजार शिष्य रहते थे, और उन दस हजार शिष्यों का पालन पोषण विश्वामित्र-आश्रम ही करता था, यदि वह आश्रम हीं भूखा या अभाव ग्रस्त होता तो यह कैसे सम्भव होता कि उनका पालन पोषण विधिवत् रूप से हो सके।

वशिष्ठ का आश्रम इतना अधिक सम्पन्न था, कि उसके सामने दशरथ का पूरा साम्राज्य भी आर्थिक दृष्टि से हल्का पड़ता था, जब भगवान राम वनवास गये तो उन्होंने अत्री के आश्रम को देखकर कहा था कि इस आश्रम के मुकाबले में मेरा साम्राज्य कुछ भी महत्व नहीं रखता।

इसलिए आश्रम व्यवस्था जीवन के लक्ष्य की पूर्ति के लिए अर्थ का आधार महत्वपूर्ण है, और इस दृष्टि से अर्थ का संग्रह या संचय बुरी बात नहीं है, यह अवश्य है, कि यह अर्थ-संचय गलत या अनुचित तरीके से न हो।

रही बात साधुओं को संचय की क्या आवश्यकता है, इस प्रश्न के उत्तर में तुम्हें यह समझना चाहिए, कि यदि साधु केवल मात्र भोजन और वस्त्र को ही अपने जीवन का आधार मानता है, तो उसे अर्थ संचय की कोई आवश्यकता नहीं, ऐसे सैकड़ों हजारों योगी हैं, जो मात्र एक लंगोटी लगाये हिमालय में विचरण करते रहते हैं; न तो उन्हें धन की आवश्यकता अनुभव होती है, और न वे संचय ही करते हैं।

परन्तु ऐसे साधु या योगी एकान्त प्रिय हैं, दूसरे शब्दों में वे अपने आप में ही केन्द्रित है, उनका ज्ञान या उनकी साधना चाहे वह कितनी ही उच्च कोटि की रही हो, उन तक ही सीमित है, उसका लाभ किसी को भी नहीं मिल पाता, और यह एक घातक प्रवृति है, आज के युग में आवश्यकता इस बात की है, कि यह जो उच्च कोटि का ज्ञान है, वह जनसाधारण में व्याप्त हो और सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी उसका लाभ उठा सके, पर यह कार्य उन योगियों के बस की बात नहीं है, क्योंकि वे केवल आत्म केन्द्रित हैं, उनका समाज या देश से कोई सम्बन्ध नहीं है, और यदि हम भारतवासी इस अध्यात्म योग या साधना के क्षेत्र में पिछड़े हैं, तो इसका मूल कारण यही है कि जिसके पास भी इस प्रकार का ज्ञान रहा है, उसका लाभ जनसाधारण को बिलकुल नहीं मिल पाया।

पर यदि ज्ञान को या साधना को जन साधारण के पास पहुँचाना है,तो उसके लिए सम्पर्क-सूत्र यात्रा, पत्रिका प्रकाशन आदि के लिए धन की नितान्त आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके बिना सम्पर्क स्थापित नहीं हो पाता और बिना सम्पर्क के जन साधारण को ज्ञान वितरित नहीं किया जा सकता।

यदि उसके जीवन में यह लक्ष्य होता है कि वह आश्रम की स्थापना करे, जिससे कि आने वाली पीढियां इस क्षेत्र में अप्रतिम लाभ उठा सके; तो उसके लिए दो ही रास्ते हैं – या तो वह दान ले या अपने परिश्रम से धन एकत्र कर आश्रम की स्थापना करे और उसकी इस

प्रकार से व्यवस्था करे जिससे कि भविष्य में भी वह आश्रम स्थायित्व पा सके और जिस उद्देश्य के लिए उसकी स्थापना हुई है उन उद्देश्यों की पूर्ति हो सके ।

ऐसे ही साधक या योगी वास्तव में ही मानवदूत के रूप में होते हैं, जिनका उद्देश्य केवल अपनी मुक्ति की कामना ही नहीं होती, अपितु जनसाधारण तक अपने ज्ञान को वितरित करने का प्रयत्न भी होता है, ऐसे ही साधुओं गृहस्थियों एवं योगियों के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही इस प्रकार का ज्ञान जीवित रह सका है, जो कि हमारे भारतवर्ष की थाती और श्रेष्ठतम ज्ञान है ।

इसीलिए साधुओं के पास धन एकत्र होता है, यहां पर मैं साधु के बारे में स्पष्ट कर दूं, हमारा मानस कुछ शब्दों के लिए रूढ़िग्रस्त हो गया है, "साधु" का तात्पर्य हम सीधे-सादे शब्दों में यही समझते हैं कि जिसने भगवे कपड़े पहन लिए हों, वही साधु है जबकि वास्तविकता यह है कि भगवे कपड़े पहने हों, चाहे सफेद कपड़े पहने हों वह चाहे जंगल में रहता हो या शहर में रहता हो, वह चाहे परिवार हीन हो, या परिवार युक्त हो, पर जिसका ध्येय अध्यात्म-साधना आदि होता है और जो इस प्रकार के ज्ञान को बिना स्वार्थ के जनसाधारण में पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील हो, वही साधु है ।

प्रश्न– गृहस्थ व्यक्तियों की अपेक्षा साधुओं के पास इतना द्रव्य एकत्र किस प्रकार हो जाता है ?

उत्तर– यदि तुम्हारा तात्पर्य साधु, योगी या साधक से सम्बन्धित है तो इसका उत्तर यह है कि साधक के पास विशेष साधनाएं होती हैं, और यदि किसी साधक के पास विशेष द्रव्य प्राप्त होता है तो यह अपने आप में ही स्वयं सिद्ध है कि उसने साधना के द्वारा भी धन एकत्र किया होगा, इससे तो इस धारणा को पुष्टि ही मिलती है कि साधना के द्वारा धन एकत्र होना सम्भव है, तभी तो उच्च कोटि के साधकों एवं महात्माओं के पास जरूरत से ज्यादा धन पाया जाता है और वे सैकड़ों हजारों शिष्यों का पालन-पोषण करने में समर्थ होते हैं ।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार के साधक या योगी वस्तुतः गुरु रूप में होते हैं, और गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना प्रत्येक शिष्य का कर्तव्य होता है, भारतवर्ष में यह परिपाटी रही है कि गुरु के पास फल-फूल और द्रव्य लेकर जावे, खाली हाथ न जायें ।

यदि गुरु का प्रभाव और वर्चस्व पूरे भारतवर्ष में है तो स्वाभाविक है कि उसके शिष्यों का समुदाय भी पूरे भारतवर्ष में होगा, साठ करोड़ व्यक्तियों में से मात्र एक करोड़ व्यक्ति भी उससे परिचित हों या पचास लाख व्यक्ति भी हों, और वे मात्र एक एक रूपया भी गुरु को भेंट करे तब भी उसके पास पचास लाख रूपया हो जाता है, इसलिए यदि गुरु के या सन्यासी के पास द्रव्य एकत्र हो तो यह अतिशयोक्ति या अनहोनी नहीं है ।

यह अवश्य है कि उच्च कोटि के साधक इस प्रकार के द्रव्य का उपयोग अपने भोग विलास के रूप में न करके जीवन के अंतिम क्षणों से पूर्व, या सन्यास लेने से पूर्व उस द्रव्य का सदुपयोग करके जाते हैं, किसी ऐसे आश्रम की स्थापना करके जाते हैं, जिससे कि आने वाली पीढ़ियां लाभ उठा सके, और हमारी यह थाती, हमारा यह विशिष्ट ज्ञान, हमारी यह अप्रतिम साधना जीवित रह सके, पूर्णता प्राप्त कर सके ।

इस प्रकार के साधु हानि-लाभ, यश-अपयश से परे होते हैं, और किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से च्युत नहीं होते, अपितु गतिशील बने रहते हैं ।



दीपावली मंगलमय पर्व पर आपके लिये विशेष भेंट

समृद्ध पर्व

दीपावली का पर्व पूरे वर्ष का दर्पण है, यही तो एक ऐसा पर्व है, जो समृद्धि सुख एवं सौभाग्य का आधार है, इसी पर्व के दिन लक्ष्मी से, जीवन की उन्नति सुख एवं सौभाग्य मांगते हैं, और विशेष पूजन तथा **"महालक्ष्मी यंत्र"** के माध्यम से जीवन के अभावों की पूर्ति कर सकते हैं।

महालक्ष्मी यंत्र

शास्त्रों के अनुसार लक्ष्मी का आगमन यन्त्रों के माध्यम से होता है, यन्त्र के द्वारा ही लक्ष्मी आबद्ध होती है, घर में स्थायी रूप से निवास करती है, और धन, वैभव सम्पदा, सुख आरोग्य एवं कीर्ति देने में सहायक होती है, और ऐसे यन्त्र का नाम है **"महालक्ष्मी यंत्र जो ताम्र पत्र पर विशेष शुभ मुहूर्त्त में अंकित है, जो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त है, जो आगे के जीवन भर के स्थायी लक्ष्मी हेतु अनुकूल है।**

आप प्राप्त करें

आप इस यंत्र को दीपावली से पूर्व ही प्राप्त कर सकते हैं, बिना कुछ खर्च किये, निःशुल्क। इस प्रकार का अद्भुत आश्चर्यजनक सफलतादायक "महालक्ष्मी यंत्र" दीपावली पूजन के समय आपके घर मे स्थापित हो, इससे बढ़कर और क्या सौभाग्य हो सकता है ?

क्या करें

इसके लिए **कुछ भी खर्च करने की जरूरत** नहीं है, मात्र आप एक परिवार के मुखिया को 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका का सदस्य बना दीजिये। और एक सौ बीस रूपये मनीयार्डर के साथ उनका पूरा पता लिख भेजें, हम उन्हें द्विवर्षीय सदस्य बनाकर सम्मान तो देंगे ही, साथ ही जनवरी ८३ का बृहद् विशेषांक निःशुल्क उपहार में प्रदान करेंगे, और आपको लौटती डाक से ही ताम्बे के पत्र पर अंकित प्रभावयुक्त मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त "महालक्ष्मी यंत्र"।

धनराशि किसी व्यक्ति विशेष के नाम से न भेज कर
निम्न पते पर भेजें।
(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान)
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर (राज०)

यह केवल उनके लिये हैं, जो पत्रिका के सदस्य है, यदि आप सदस्य हैं, तो मामूली सा परिश्रम कर लाभ उठाइये न !

भगवती लक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय स्तोत्र

श्रीसूक्त

विनियोग :

ॐ हिरण्यवर्णा मिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य श्री आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता महर्षयः। श्रीरग्निर्देवता, आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः। चतुर्थीबृहती, पञ्चमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ, ततोऽष्टावनुष्टुभः। अन्त्याप्रस्तारपंक्तिः। हिरण्यवर्णामिति बीजम्, तांम आवह जातवेद इति शक्तिः। कीर्तिमृंद्धि ददातु मे इति कीलकम्, मम श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्धयर्थे न्यासे जपे (पाठे) च विनियोगः।

ध्यान :

या सा पद्मासनस्थाविपुलकटितटीपद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्तनाभिःस्तनभरनमितां शुभ्रवस्त्रोत्तरीया॥
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुंभै।
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता॥

श्री सूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ १॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ २॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्॥ ३॥

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्
तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्म्मेनश्यतां त्वां वृणोमि ।।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः ।।

उपैतु मा देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।। ७ ।।

क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।। ८ ।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। ९ ।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमयि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।। १० ।।

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।। ११ ।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानिचिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।। १२ ।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।। १३ ।।

आर्द्रां यस्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।। १४ ।।

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।। १५ ।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्त पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ।। १६ ।।

विशेष

श्री सूक्त के अनुष्ठान में अग्निदेव को प्रज्जवलित कर श्री सूक्त की १५ ऋचाओं से प्रत्येक के अन्त में "स्वाहा" पद उच्चारण करके अग्नि में केवल शुद्ध घृत का जो हवन करता है उसे शीघ्र ही निश्चित धन मिलता है।



अगले महीने

❀ **भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव है ।**

भैरव साधना से तो कुछ भी किया जा सकता है, और सामान्य गृहस्थ भी इस साधना के द्वारा अपनी अधूरी इच्छा को पूर्णता में बदल सकता है । ८ नवम्बर को भैरवाष्टमी पर विशेष रूप से प्रस्तुत ।

❀ **शनि पनोती**

पांच अक्टूबर को ढाई वर्ष के बाद शनिदेव तुला राशि पर आ रहे हैं, फलस्वरूप कई लोगों की साढ़े सात वर्ष की पनौती प्रारम्भ होगी, यह पनौती किन-किन के लिए घातक या अशुभ हैं, तथा किस प्रकार से इससे त्राण पाया जा सकता है ?

❀ **खोये हुए बालक का पता लगाया जा सकता है**

आजकल छोटी छोटी बातों पर व्यक्ति लड़-झगड़ कर घर से लापता हो जाता है, और पीछे पूरा परिवार परेशान हो जाता है, पर "दत्तात्रेय-साधना" से खोये हुए बालक का पता चल जाता है, पहली बार विवेचन ।

❀ **गृहस्थ की सुख शान्ति के आठ उपाय**

पति-पत्नि में मतभेद, नई पीढ़ी का विद्रोह, पारिवारिक कलह एवं घर की अशांति को मिटाकर गृहस्थ में पूर्ण सुख शांति प्राप्त करने की आठ साधनाएं, सरल पर अचूक.... आप भी आजमाइये न !

❀ **पद्मासन**

योग की तरफ से मानव जाति को श्रेष्ठ वरदान, पुरुषों व स्त्रियों, साधकों एवं योगियों के लिए समान रूप से उपयोगी ।

❀ **रावणकृत – उड्डीश तन्त्र**

एक सर्वथा गोपनीय आश्चर्यजनक तन्त्र, जो लंकाधिपति रावण के द्वारा विरचित हैं, पाठकों के लिये संग्रहणीय ।

यह सब तथा अन्य बहुत कुछ
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के नवम्बर ८२ अंक में ।